मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 05 | नवम्बर, 2022 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

चित्र वीथिका : नवम्बर, 2022

श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव स्कूल शिक्षा द्वारा राउमावि. गढ़ेपान, राउमावि. पोलाइकला, महात्मा गाँधी राउमावि. मल्टीपरपज गुमानपुरा, कोटा में शैक्षणिक उन्नयन एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु संबलन

स्टेट इंस्टीट्यूट एग्रीकल्चर मैनेजमेंट दुर्गापुरा, जयपुर में दिनांक 21 अक्टूबर, 2022 को आयोजित RKSMBK कार्यक्रम की राज्य स्तरीय कार्यशाला के छायाचित्र

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

वर्तमान समय ही श्रेष्ठ है

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहता है। हम सब अपने जीवन में विकास और खुशहाली भी चाहते हैं। इन सबका आगाज मन के दृढ़ संकल्प और कर्त्तव्यनिष्ठ भावना से होता है। भावना से हमारे विचार निर्धारित होते हैं। इसलिए प्रत्येक को अपनी सोच एवं भावना पर ध्यान देना होगा। हम जो भी काम करें, जो भी शब्द बोलें इसमें बहुत ही सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि हमारे शब्द और सोच से ही हमारा व्यक्तित्व निर्धारित होता है। बच्चों को संस्कारित करने में विद्यालय, परिवार एवं समाज का योगदान होता है। इसीलिए प्रत्येक जिम्मेवार को यह दायित्व वहन करना होगा।

मैं शिक्षक साथियों से कहना चाहूँगा कि स्वयं को और ज्ञानवर्धक एवं अतीव सार्थक बनाए। इसके लिए आपको पाठ्य पुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें यथा साहित्य, कहानी, निबंध आदि भी पढ़नी चाहिए। नियमित अध्ययन से आप जरूर कुछ नया भी सीखेंगे। इसके लिए किसी भी दिन या स्थान का इंतजार न करें जो वर्तमान समय है वही श्रेष्ठ है। आप जहाँ भी हैं वहाँ से कदम आगे बढ़ाकर सफल राहों की ओर बढ़ सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राज्य महासभा ने बाल अधिकारों संबंधी घोषणा पत्र को 20 नवम्बर 1959 को स्वीकृति प्रदान की थी। भारत में बाल दिवस प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु की स्मृति में उनके जन्म दिवस 14 नवम्बर को देश के बच्चों के प्रति स्नेह को याद करते हुए मनाया जाता है।

देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान पिता व पुत्र (मोतीलाल नेहरु व जवाहरलाल नेहरु) एक साथ ही स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान जेल में रहे थे। जेल में जवाहर लाल नेहरु से एक पत्रकार ने पूछा कि आप देश को आजादी मिलने के बाद प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बनेंगे तब आनन्द भवन और स्वराज भवन का क्या करोगे? जवाहर लाल ने कहा कि मेरे पिताजी मोतीलाल नेहरु ही उक्त सम्पत्तियों के मालिक हैं, जब मुझे विरासत में यह सम्पत्तियाँ मिलेगी, तब मैं उन्हें राष्ट्र को समर्पित कर दूंगा। यह बात मोतीलाल नेहरु को जब पत्रकार ने बताई और कहा कि आपकी सम्पत्तियों को आपका बेटा जवाहर लाल राष्ट्र को समर्पित करने की बात कर रहा है तो मोतीलाल ने जवाहर लाल नेहरु को बुला कर इस संबंध में बात की और कहा कि देश हित में तुम इन सम्पत्तियों आनन्द भवन और स्वराज भवन को समर्पित करना चाहते हो तो मेरे बाद क्यों? मेरे सामने ही यह पुनीत कार्य क्यों नहीं करते हो? मोतीलाल ने अगले दिन ही स्टाम्प पेपर मंगवा कर दोनों पिता व पुत्र ने स्वराज भवन और आनन्द भवन राष्ट्रहित में राष्ट्र को समर्पित कर दिए अर्थात दान कर दिए।

आज की युवा पीढ़ी को महान त्यागी और देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले मोतीलाल नेहरु, जवाहर लाल नेहरु एवं उनके परिवार से प्रेरणा लेकर देशप्रेम, त्याग एवं समर्पण की भावना को अपनाना चाहिए।

अपनी कुर्बानी के लिए मशहूर है ये नेहरु खानदान,
समझे महफिल देख ले ये घर के परवाना है।

स्वतंत्र भारत के सामने अशिक्षा एवं बेरोजगारी आधारभूत संरचनाओं का अभाव जैसी अनेक समस्याएँ थी। पंडित नेहरु ने इनका समाधान किया और सशक्त भारत की बुनियाद रखी।

एक ओंकार सतनाम कर्तापुरख विरभऊ।
निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुरु प्रसादी।

सिखों के प्रथम गुरु गुरुनानक देव समाज में प्रेम, माधुर्य और समानता लाने के पक्षधर थे। उन्होंने सर्वशक्तिमान ईश्वर को ओंकार का नाम दिया। उनका मानना था कि समाज का प्रत्येक वर्ग समान है। किसी वर्ग के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए। चाहे भोजन हो, वस्तु हो या धन हो, उन्होंने साझा कर उपयोग करना सिखाया। नानकजी के दर्शन और विचारों को जीवन में आत्मसात कर ही समाज में भाईचारा बढ़ाया जा सकता है। गुरुनानक देव के प्रकाश पर्व पर आप सभी को लख-लख बधाइयाँ।

माननीय मुख्यमंत्री बजट घोषणा वर्ष 2022-23 के बिन्दु संख्या 316.0.02 के क्रियान्वयन के क्रम में गैर सरकारी विद्यालयों में **'इन्दिरा शक्ति फीस पुनर्भरण योजना'** के तहत कक्षा 1 से 8 में अध्ययनरत समस्त बालिकाओं को कक्षा 9 से 12 तक अध्ययन जारी रखने पर फीस का पुनर्भरण राज्य सरकार द्वारा इन्दिरा शक्ति निधि से किया जाएगा। पुनर्भरण हेतु राज्य सरकार द्वारा 18 करोड़ रुपये का वित्तीय प्रावधान किया गया है। जिससे लगभग 20,000 बालिकाएँ लाभान्वित होगी।

मध्यावधि अवकाश के बाद विद्यालयों में अध्ययन अध्यापन कार्य आरंभ हो गया है। शिक्षक साथियों से मेरा आग्रह है कि एक बार पुनः निष्ठा एवं समर्पण से शिक्षण कार्य को इबादत मान कर किया जाए।

प्रत्येक शनिवार को No Bag Day मनाए जाने से पूर्व संस्थाप्रधान एवं शिक्षक कक्षा स्तर एवं समूह के अनुसार विषय आधारित गतिविधियों की ठोस योजना बनाकर इसका क्रियान्वयन करें। इससे अध्ययन अध्यापन के परंपरागत/कदीमी रीतियों से हटकर पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के माध्यम से सीखने सिखाने की प्रक्रिया अधिक सार्थक होगी।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

"गैर सरकारी विद्यालयों में 'इन्दिरा शक्ति फीस पुनर्भरण योजना' के तहत कक्षा 1 से 8 में अध्ययनरत समस्त बालिकाओं को कक्षा 9 से 12 तक अध्ययन जारी रखने पर फीस का पुनर्भरण राज्य सरकार द्वारा इन्दिरा शक्ति निधि से किया जाएगा। पुनर्भरण हेतु राज्य सरकार द्वारा 18 करोड़ रुपये का वितीय प्रावधान किया गया है। जिससे लगभग 20,000 बालिकाएँ लाभान्वित होगी।"

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

सद्गुरु नानक परगटिया, मिटी धुँध-जग चानन होया।।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरु स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नायक, कुशल प्रशासक भारतीय राजनीति के केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। अपने जेल प्रवास के दौरान उन्होंने अपनी पुत्री प्रियदर्शिनी इंदिरा गाँधी को जो पत्र लिखे थे वह उनकी पुस्तक 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' में संकलित है। इन पत्रों के माध्यम से उन्होंने देश, दुनिया, इतिहास, सभ्यता जैसे जरूरी मुद्दों पर उनको जानकारी दी। यह पुस्तक प्रत्येक अभिभावक के लिए सीख है कि किस प्रकार दूर रहकर भी अपने बच्चों की देखभाल की जा सकती है।

आज के डिजिटल युग में बच्चों के पास मोबाइल और लेपटॉप के साथ-साथ इंटरनेट डेटा भी उपलब्ध हैं। सूचनाओं की भरमार है इससे बच्चों का मस्तिष्क अतिभारित हो रहा है या समझ सकते हैं अधिक सूचनाओं के कारण ट्रेफिक जाम हो गया है। अधिकांश सूचनाएँ ऐसी भी होती हैं जो विरोधाभासी, भ्रामक और अप्रामाणिक होती हैं। इससे उनकी सोचने समझने एवं निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है। बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य और बचपन प्रभावित हो रहा है। यहाँ अभिभावकों को विशेष सावधान रह कर बच्चों का स्क्रीन टाइम एवं विषय नियंत्रित करना होगा।

ध्यान रखें है कि तकनीक हमारी सुविधा के लिए है, अत: यह हम पर हावी नहीं हो। इसके लिए माता पिता बच्चों के साथ बातचीत करें, उनके साथ समय बिताएँ, उनके चेहरे और मन को पढ़ने का प्रयास करें। इस प्रकार का भावनात्मक संबलन उनका आत्म विश्वास बढ़ाएगा। सामाजिक संबंधों की विरासत साझा कर दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता एवं भाई-बन्धु की कड़ियों को जोड़ कर माला बनाएँ, मेरा विश्वास है कि इस प्रयास से हमारा परिवार एवं समाज सशक्त होगा।

स्वतंत्र भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी का मानना था कि साहस के बगैर आप कोई अच्छा काम नहीं कर सकते, आपके पास अलग-अलग तरह के साहस होने चाहिए। पहला साहस तो बौद्धिकता का साहस है। आपको विभिन्न मूल्यों से छांटकर पता करना है कि कौन सा आपके लिए सही है जिसका आपको पालन करना चाहिए। आपको अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं के खिलाफ खड़े होने के लिए नैतिक रूप से तैयार रहना होगा। इंदिरा गाँधी निडर, दबंग एवं वाकपटुता में निपुण थी। देश की प्रधानमंत्री रहने के दौरान कम समय में लिए गए साहसिक निर्णयों से यह साबित हो गया कि वह लौह महिला थी।

सद्गुरु नानक परगटिया, मिटी धुँध-जग चानन होया। अर्थात सच्चे गुरु नानक के उदय के साथ, धुंध छंट गई और प्रकाश चारों ओर बिखर गया। गुरुनानक देव जी का प्रकाश पर्व सिख समुदाय का प्रमुख त्योहार है। सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक देव के विचारों का मंथन कर अपने हृदय में, व्यवहार में उतारने की जरूरत है। उनका कहना था कि यदि हम अहंकार त्याग दें, अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन समर्पण भाव से करें तो हमे सुख-शांति की अनुभूति होगी। उन्होंने तीन मुख्य सिद्धान्तों पर चलने की बात कही जिनमें एक ही ईश्वर पर विश्वास रखना, ईमानदारी से रोजगार कमाना एवं अपनी आमदनी का निश्चित हिस्सा परोपकार में लगाना।

अदभुत् शौर्य एवं पराक्रम की मूरत वीरांगना लक्ष्मी बाई अंग्रेजी फौज से लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुई थी। एक नारी होकर भी उन्होंने अदम्य साहस एवं आत्म विश्वास से अंग्रेजों का सामना किया। उनका यह बलिदान प्रेरणास्पद है, कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविता में लिखा है-

चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

भारतीय इतिहास के ये महापुरुष एवं क्रांतिकारी महिलाएं स्वतंत्र भारत की नींव के पत्थर हैं। इनके विचारों को जीवन में आत्मसात् करके हम अपने अन्दर की सकारात्मक ऊर्जा को महसूस कर सकते हैं। उनकी जयंती पर कोटि-कोटि नमन।

Zahida
(जाहिदा खान)

"स्वतंत्र भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी का मानना था कि साहस के बगैर आप कोई अच्छा काम नहीं कर सकते, आपके पास अलग-अलग तरह के साहस होने चाहिए। पहला साहस तो बौद्धिकता का साहस है। आपको विभिन्न मूल्यों से छांटकर पता करना है कि कौन सा आपके लिए सही है जिसका आपको पालन करना चाहिए। आपको अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं के खिलाफ खड़े होने के लिए नैतिक रूप से तैयार रहना होगा।"

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

वैश्विक परिदृश्य में शैक्षिक नवाचार का आगाज

नवम्बर 2022 में शिविरा का यह अंक अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने के लिए किए गए दीपदान के पश्चात आपके हाथों में आएगा। एक नवीन संकल्प के साथ, जिसमें ज्ञान का एक दीप जलाएंगे, समस्त गुरुजन अज्ञान के अंधकार में डूबे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े उस आशान्वित विद्यार्थी के नाम, जिसे उम्मीद है कि उसके गुरुजी शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्येक कदम पर उसका मार्गदर्शन करेंगे।

प्रसन्नता हो रही है आप सभी के साथ इस बात को साझा करते हुए कि हाल ही में शिक्षक दिवस पर एक नवाचार के रूप में RKSMBK एप लाँच किया गया था, जिसमें 2.3 लाख शिक्षकों द्वारा इसके सफल क्रियान्वयन के पश्चात 12 अक्टूबर, 2022 को भामाशाह सम्मान समारोह के अवसर पर राजस्थान सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अगला कदम बढ़ाते हुए AI (आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स) एप लाँच किया गया है। यह संभवत शिक्षा के क्षेत्र में किया गया संसार का सबसे बड़ा और अनूठा नवाचार है। RKSMBK के माध्यम से हमारे शिक्षकों ने विद्यार्थियों के लर्निंग लॉस को समाप्त करने का प्रयास किया। किन्तु कार्य के मूल्यांकन के बिना उपलब्धि का आकलन करना कपोल कल्पित लगता है। AI एप के माध्यम से राजस्थान के 65,000 सरकारी स्कूलों के कक्षा 3 से 8 तक पढ़ने वाले 50 लाख विद्यार्थियों के सभी विषयों के वर्ष पर्यंत होने वाले तीनों दक्षता आधारित आकलन की लगभग 1.5 करोड़ प्रति एग्जाम की उत्तर पुस्तिका के हिसाब से 4 करोड़ उत्तर पुस्तिका का सम्पूर्ण राजस्थान में एक आधारभूत मानदण्ड बनाकर मूल्यांकन किया जाएगा। शैक्षिक जगत में राजस्थान का यह अद्भुत कार्य वैश्विक परिदृश्य में शैक्षिक नवाचार का आगाज होगा।

हमारा उद्देश्य है कि तकनीक को शिक्षा के क्षेत्र में इस प्रकार काम में लिया जाए कि प्रत्येक विद्यार्थी को इसका लाभ मिल सके। तकनीकी युग तक पहुँचने का सफर यदि दैदीप्यमान इतिहास पुरुषों के सान्निध्य में तय किया जाए तो यह सोने में सुगंध का कार्य होगा, इसलिए इतिहास वर्णित उज्ज्वल कीर्ति स्तंभ के रूप में महाकवि कालिदास, ज्ञानपुंज गुरुनानक देव, दुर्गा स्वरूप रानी लक्ष्मी बाई, शक्ति स्वरूपा इंदिरा गाँधी, बच्चों के प्रिय चाचा नेहरु के गुणों को बीज रूप में अपने विद्यार्थी वर्ग में संजोकर उनमें आदर्श भारतीय नागरिक गुणों का विकास कर पाएँगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

“हमारा उद्देश्य है कि तकनीक को शिक्षा के क्षेत्र में इस प्रकार काम में लिया जाए कि प्रत्येक विद्यार्थी को इसका लाभ मिल सके। तकनीकी युग तक पहुँचने का सफर यदि दैदीप्यमान इतिहास पुरुषों के सान्निध्य में तय किया जाए तो यह सोने में सुगंध का कार्य होगा।”

Rajasthan Education Department

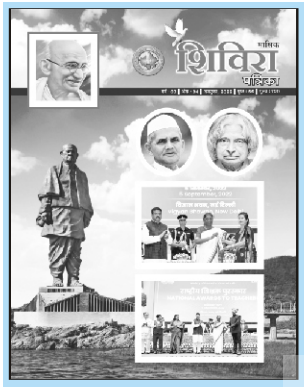

चिन्तन

योजनानां सहस्रं तु
शनैर्गच्छेत् पिपीलिका।
आगच्छन् वैनतेयोपि
पदमेकं न गच्छति ।।

भावार्थ : यदि चींटी चल पड़ती है तो धीरे-धीरे वह एक हजार योजन तक चली जाती है। परन्तु यदि गरूड़ अपनी जगह से नहीं हिला तो वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता है। अर्थात् परिश्रमी मनुष्य अपने परिश्रम के बल पर बड़े-बड़े काम सिद्ध कर लेते हैं जबकि अकर्मण्य मनुष्य अपने बड़प्पन और बड़बोलेपन के चलते अपना यथेच्छित काम नहीं कर पाते हैं। इसलिए कहा है कार्य परिश्रम से सिद्ध होते हैं,मन की इच्छाओं से नहीं होता।

पाठकों की बात

- माह अक्टूबर, 2022 का शिविरा पत्रिका का देश के महान सपूतों के चित्रों से युक्त आकर्षक मुख पृष्ठ वाला अंक प्राप्त हुआ। राजस्थान प्रांत में विद्यार्थियों को उनकी दक्षता स्तर के आधार पर शिक्षण करवाने हेतु 'राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम (RKSMBK)' अभिनव नवाचार स्वागत योग्य है। इससे विद्यार्थियों के लर्निंग लेवल में सुधार आएगा। 'ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण' हेतु विद्यालय एक महत्त्वपूर्ण घटक है। प्रार्थना कार्यक्रम इसका प्रमुख साधन है। 'प्रकृति से हम हैं, हम से प्रकृति नहीं' लेख हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करता है कि पर्यावरण प्रदूषण हमारी जिंदगी के अंत का प्रमुख कारण होगा। अक्टूबर माह महात्मा गाँधी, लाल बहादुर शास्त्री, सरदार वल्लभ भाई पटेल और डॉ. अब्दुल कलाम जैसी महान विभूतियों की जयंतियों का माह है, ये महापुरुष हमारे लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहेंगे, इन्हें नमन है। शिक्षक दिवस पर सभी सम्मानित शिक्षकों को शुभकामनाएँ।

  –महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद, अजमेर

- अक्टूबर माह का शिविरा अंक बहुत अच्छा लगा। जिनकी अक्टूबर माह में जयंतिया थी, उनके चित्रों द्वारा याद दिलाने वाला मुख पृष्ठ बहुत ही सुंदर और सराहनीय रहा। शिक्षक दिवस के चित्र भी आकर्षक रहे। नीरू शर्मा की राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2022 की विशेष रिपोर्ट। सुनीता चावला का भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री, राजीव गौतम का लोह पुरुष राजनीति का प्रकाश स्तंभ, डॉक्टर तमन्ना तालरेजा, डॉक्टर संगीता पुरोहित के लेख पत्रिका में चार चांद लगाने वाले रहे। अपनों से अपनी बात, दिशाकल्प, स्तंभ, पुस्तक समीक्षा के साथ ही जुगराज राठौड़, राजेश कुमार मीणा, राहुल परमार, राजीव गौतम, पवन कुमार स्वामी, मुकेश पोपली, दिलीप कुमार अग्रवाल, शिव शंकर चौधरी व नरेश पवार के आलेख भी सराहनीय थे।

  –डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत, नागौर

- शिविरा पत्रिका का अक्टूबर 2022 का अंक सुसज्जित आवरण में प्राप्त हुआ। इस अंक में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2022 में सम्मानित होने वाले 98 शिक्षकों एवं जिला रैंकिंग के 6 शिक्षा अधिकारियों की सूची के साथ-साथ आयोजन संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित होने वाले शिक्षकों में बीकानेर की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती सुनीता गुलाटी एवं उदयपुर के शिक्षक श्री दुर्गाराम मुवाल को निदेशालय स्तर पर सम्मानित करने एवं व्यक्तिगत परिचय की जानकारी संपादक महोदय द्वारा प्रस्तुत करना शिक्षकों के लिए प्रेरणास्पद रहेगा। महापुरुषों के जीवन प्रसंग में वरिष्ठ संपादक महोदया द्वारा भारत रत्न श्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन एवं राजनैतिक परिचय की जानकारी से मानव जीवन में समस्याओं का सामना करने की शिक्षा मिलती है। पत्रिका के स्थाई स्तंभ आदेश परिपत्र में विभिन्न प्रकार की पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति 2022-23 के दिशा-निर्देश प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। अन्य आलेख में प्रकृति से हम है हमसे प्रकृति नहीं, श्री मुकेश पोपली का आलेख पर्यावरण चेतना के प्रति आगाह करने वाला है। पत्रिका समय पर प्रकाशन एवं वितरण के लिए संपादक मण्डल का साधुवाद।

  –बस्तीराम विश्नोई, बीकानेर

Rajasthan Education Department

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 05 | कार्तिक-मार्गशीर्ष २०७९ | नवम्बर, 2022

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
- वर्तमान समय ही श्रेष्ठ है 3

मेरा संदेश
- सद्गुरु नानक परगटिया, मिटी धुँध-जग चानन होय।। 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- वैश्विक परिदृश्य में शैक्षिक नवाचार का आगाज 5

रपट
- राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2022 10
  डॉ. संगीता पुरोहित
- माननीय शिक्षामंत्री ने किया विद्यालय भवन का लोकार्पण 16
  राजेन्द्र कुमार गग्गड़
- धौलपुर में साबरमती आश्रम हुआ जीवन्त 16
  अरविन्द शर्मा
- अतिरिक्त मुख्य सचिव ने ली विभागीय अधिकारियों की बैठक 22
  सुनीता चावला

आलेख
- शिक्षा : जीवन की अनवरत प्रक्रिया 8
  गौरव अग्रवाल
- यत्र याति शकुन्तला 17
  इला पारीक
- समता के समर्थक, धर्म और नीति के दृष्टांत श्री गुरुनानक देव 18
  अमृतपाल सिंह
- एकता की द्योतक इंदिरा गांधी 20
  हिमांशु सोगानी
- सफलता की कहानी : शिक्षक की जुबानी 35
  अरुणा बैंस
- भारतीय संविधान व सशक्त भारत 37
  कमलेश कटारिया
- अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस 38
  डॉ. सुशीला बलौदा
- प्रबंध पोर्टल और समावेशी शिक्षा 40
  हेमेन्द्र कुमार सोनी
- बस्ता मुक्त दिवस : विद्यार्थियों को तनाव मुक्त रखने की आधारशिला 41
  डॉ. आज़ाद सिंह
- Suggesting, Persuading and Feedback in the Classroom 42
  Dr. Ram Gopal Sharma
- भामाशाहों के सहयोग से बदला विद्यालय का स्वरूप 44
  आईदानाराम देवासी
- पाठ्य पुस्तक की मुख जुबानी 52
  भंवर लाल पुरोहित

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2022 23-33
- शिविरा पञ्चाङ्ग : नवम्बर, 2022 33
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 34
- Telecast Schedules of PM e-vidya 39
- बाल शिविरा 45
- शाला प्रांगण से 48
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 50
  चेतन देवासी
- हमारे भामाशाह 51

पुस्तक समीक्षा 47
- संगत री रंगत
  लेखिका : कीर्ति शर्मा
  समीक्षक : **पृथ्वी राज रतनू**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

शिक्षा : जीवन की अनवरत प्रक्रिया

❒ गौरव अग्रवाल

ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

वृहदारण्यक उपनिषद् के इस श्लोक के माध्यम से ईश्वर से प्रार्थना की गयी है कि असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्त्व की ओर चलने की प्रेरणा दे, शक्ति दे। झूठ और तिमिर हमारी शक्ति को कम करते हैं। सत्य असत्य को समाप्त करता है। उजाला तिमिर को ठीक वैसे ही समाप्त कर देता है जैसे स्नेह और प्यार से घृणा समाप्त की जा सकती है। आनंद प्राप्त होते ही जीवन के दु:ख तकलीफ दूर हो जाते हैं। जब हम जीवन की बाधाओं परेशानियों को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं तो ये बाधाएं दिव्य ऊर्जा के संपर्क में आकर हमें महसूस ही नहीं होती। हमारे जीवन में जो भी प्रतिकूल हो रहा है, उसे अपनी मानसिकता और तौर तरीके बदलकर ठीक किया जा सकता है। सृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो व्यक्ति आत्म विश्वास एवं सूझबूझ से इसका सामना करते हैं वो पार पा जाते हैं, जिन्होंने कभी दूसरों से अपनी तुलना नहीं की बल्कि वर्तमान को बीते हुए कल से और अधिक बेहतर तथा उपयोगी बनाने का प्रयास किया है।

शिक्षा में सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सामान्यत: शिक्षा का अर्थ औपचारिक शिक्षा जो कि शिक्षण संस्थानों में जाकर प्राप्त की जाती है उसे ही जाना और माना जाता है। शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम क्षण तक सीखता है। जीवनपर्यन्त सहेजे अनुभवों को व्यक्ति मृत्यु पश्चात् अगले जीवन के लिए ले जाता है। गर्भावस्था से ही शिशु सीखना आरंभ कर देता है। भारतीय संस्कृति के धार्मिक ग्रंथों के साथ विश्व के अन्य देशों में भी अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं। अर्जुन अपनी पत्नी सुभद्रा को चक्रव्यूह भेदने की प्रक्रिया बता रहे थे।

सुभद्रा गर्भवती थी। इसी दौरान गर्भस्थ शिशु अभिमन्यु ने अपने पिता अर्जुन से चक्रव्यूह भेदने का रहस्य जान लिया था। फिनलैण्ड की हैलसिंकी यूनिवर्सिटी के न्यूरोसाईंटिस्ट इनियो पार्टानेन और उनके साथियों ने एक शोध में यह प्रमाणित किया है कि गर्भावस्था से ही शिशु सीखना शुरू कर देता है। वैज्ञानिकों ने स्वीडिश और अमेरिकी बच्चों पर जन्म के 7 घण्टे से लेकर 75 घण्टे बाद तक अनेक परीक्षण किए। उन्होंने बताया कि शिशु के मस्तिष्क की प्रतिक्रियाओं को गर्भावस्था में सुने गए शब्दों के प्रति उसमें तंत्रिकीय समानता दिखाई। शोध के नतीजे बताते हैं कि गर्भ में शिशु में मातृभाषा के जिन शब्दों को पहचाना था, जो गीत संगीत सुना था उसे वे जन्म के चार माह बाद तक याद रख सकते हैं।

जन्म के तुरंत बाद बच्चा माँ का स्तनपान करना सीखता है, घुटनों के बल चलता है। आसपास परिवार के लोगों को पहचानता है, नकल करता है, उनके द्वारा बोली गयी भाषा सुनकर बोलता है। परिवार में रहकर बच्चा अपने माता-पिता, भाई-बहन एवं बुजुर्ग सदस्यों के साथ रहकर भी बहुत कुछ सीखता है। लोगों के साथ संवाद करना, भले-बुरे, सही-गलत का भेद सीखता है। अपने कर्त्तव्यों को समझता है। अपनी भीतरी चेतना से भी सीखता है। सीखना एक प्रकार से सतत् ज्ञानार्जन की प्रक्रिया ही है। बच्चे का परिवार शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। परिवार से जो शिक्षा प्राप्त होती है उसका कोई अनुकल्प नहीं है। बच्चों को विद्यालय से मिलने वाली शिक्षा तभी मुफीद होगी जब बच्चे को परिवार में पलने बढ़ने का अवसर मिले। लेकिन आज भी इस तथ्य का अहसास माता पिता को कम है। पति पत्नी को यह अहसास होना चाहिए कि अच्छे माता पिता बनना गौरवपूर्ण होने के साथ साथ एक महत्त्वपूर्ण दायित्त्व भी है।

बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार एवं प्रथम शिक्षक उसके माता-पिता हैं। जो जन्म के समय बच्चे का स्वागत करते हैं। जन्म के समय परिजन जिन मनोभावों से शिशु का अभिवंदन करते हैं वैसे ही संस्कार उसके अंत:करण में स्थापित हो जाते हैं। शिशु की प्रथम कक्षा माँ की कोख है। गर्भ में 9 माह तक माँ की ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से बाहर की दुनिया की जानकारी प्राप्त करता है। पाँच वर्ष की आयु तक शिशु अवस्था में वह देखकर ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों से देखकर, सुनकर, बोलकर अनुभव प्राप्त करता है। परिवार के सदस्यों विशेष रूप से माता-पिता के पालन पोषण, संस्कार उनका आचरण एवं व्यवहार के माध्यम से बच्चे का व्यक्तित्व एवं चरित्र गढ़ा जाता है।

बाल्यावस्था में बच्चा विद्यालय में प्रवेश लेता है। अब उसके सीखने के दो स्थान हो जाते हैं-पहला घर और दूसरी पाठशाला। इस अवस्था में वह क्रिया आधारित एवं अनुभव आधारित जानकारी प्राप्त करता है। इससे उसकी आदतें एवं स्वभाव बनता है। छोटे बच्चों के चेहरे पर निश्छल मुस्कुराहट हम देखते हैं। लेकिन जब ये बच्चे स्कूल जाना शुरू करते हैं तो इनकी मुस्कान कम हो जाती है। जैसे जैसे बच्चे बड़े होकर उच्च कक्षा में जाते हैं तो उनकी मुस्कुराहट कम होते होते गुम हो जाती है और वे गम्भीर एवं चिन्तित नजर आते हैं। उनके अन्तर्मन में भावी जीवन की चिंताएँ, योजनाएँ, रोजगार संबंधी वार्तालाप आदि चलते रहते हैं।

इस सृष्टि में असंख्य जीव जन्तु है। मनुष्य भी उनमें से एक है। मनुष्य में मन, बुद्धि, अहंकार, अंत:करण क्रियाशील है। ज्ञान प्राप्त

Rajshri Education Department
सत्यमेव जयते

करने की इच्छा अर्थात जिज्ञासा को संतुष्ट करने का प्रयास शिक्षा है। शिक्षा कोई भौतिक पदार्थ नहीं है जिसे खरीदा जा सके या जिसका संग्रह किया जाए। इसे तो दिल, दिमाग और प्रयास से ही प्राप्त किया जा सकता है। यह साधना भी है। यह स्वयं के भीतर ठीक उसी प्रकार होती है जिस प्रकार दूध में मक्खन होता है। जरूरत है स्वयं के प्रयास की। जहाँ अभ्यास की आवश्यकता हो वहाँ साधनों से लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती है।

मानव जीवन के अनुकूलन का आधार शिक्षा है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति कितना भी सर्वगुण संपन्न हो, सर्वश्रेष्ठ हो लेकिन उसे समाज में ही रहना है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की मन, बुद्धि, पसंद, नापसंद अलग-अलग होती है। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग है। इस कारण से मनुष्यों में परस्पर प्रेम-मैत्री होती है वहीं वैचारिक मतभेद भी होते हैं लेकिन फिर भी सबके साथ ही रमना है। मनुष्य जीवन का निर्वाह समायोजन से ही होता है। समायोजन भी एक कठिन कार्य है। शास्त्रों में समायोजन के लिए अनेक प्रकार के व्यवहार और जानकारियां दी गई हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ विद्यालयों में शिक्षकों को बच्चों की सृजनशीलता को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे उनमें सोचने समझने की क्षमताओं का विकास होगा, कक्षा शिक्षण आनंदमय बनेगा और चेहरों पर मुस्कान भी बनी रहेगी। इन कक्षाओं में शिक्षण प्रक्रिया आसपास के परिवेश को ध्यान में रखकर करवाई जानी चाहिए। पढ़ाने के तौर तरीके प्रकृति और परिवेश को शामिल करके खेल खेल में हो। इससे उनके सोचने समझने के तरीके में नयापन आएगा। विभिन्न गतिविधियों, करके सीखना, नए प्रयोगों एवं नवाचारों को शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनाना होगा। इस प्रकार की कोशिशों से बच्चों की समझ बढ़ेगी और योग्यता में निखार आएगा।

बाल्यावस्था में स्मृति तीव्र एवं सक्रिय होती है। इस कारण कंठस्थ सहजता से होता है। पहाड़े, सूत्र, नियम, श्लोक, दोहों आदि को कंठस्थ किया जाए तो विषय समझने में एवं बताने में मदद मिलती है। पहाड़े केलकुलेटर के रूप में उपयोगी होते हैं। इसी प्रकार सूत्र, श्लोक, मंत्र आदि विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र में सहायक होते हैं। इसलिए बच्चों में याद करने (कंठस्थीकरण) की आदत अधिक से अधिक होनी चाहिए। यह भी जरूरी है कि शिक्षा विद्यार्थी की संज्ञानात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित करे, यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो विद्यार्थियों में रटने की प्रवृत्ति बढ़ेगी जिससे रटी हुई विषयवस्तु समझ में नहीं आती। परीक्षा समाप्त होते ही विद्यार्थी रटा हुआ संदर्भ भूल जाते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि में समझ नहीं बनती। ये व्यक्तित्व में आत्मसात नहीं होते। इसलिए समझ बनाने और बढ़ाने के लिए चिंतन मनन करना आवश्यक है।

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया को पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तकों तक सीमित करने से अध्ययन यांत्रिक और अस्वाभाविक बन जाता है। इसे जीवंत बनाने के लिए उपलब्ध संसाधनों का उपयोग प्रभावी ढंग से और सीखने सीखाने की प्रकिया को सुधारने के लिए किया जाना चाहिए। यह कठिन हो सकता है लेकिन असंभव नहीं।

बच्चे किसी भी आयु के हों मैदान में खेलना, व्यायाम करना भी आवश्यक है। जो विद्यार्थी खेलकूद एवं व्यायाम को पर्याप्त समय नहीं देते उनका व्यक्तित्व विकास बाधित होता है। शारीरिक खेल में दौड़ना, भागना, पकड़ना जैसी गतिविधियां शामिल की जा सकती है। खेल में व्यतीत किया गया समय सार्थक परिणाम देता है। खेलने से शरीर बलशाली होता ही है साथ ही मन निर्मल, मेधा, तेजस्वी एवं उर्वर होता है।

कक्षा-कक्ष समस्त शिक्षण प्रक्रियाओं का स्थान है। जरूरी नहीं कक्षा-कक्ष एक कमरा हो जहाँ शिक्षक एवं विद्यार्थी बैठे हों। यह आवश्यक है चाहे शिक्षार्थी दूर बैठे हों लेकिन वे मानसिक रूप से परस्पर जुड़े हुए हों तो एक दूसरे के साथ ज्ञान व्यवहार सतत् चलता रहता है। अध्ययन-अध्यापन एक ही कार्य के दो रूप हैं। इसीलिए इस प्रक्रिया से जुड़े शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच भी एकात्म संबंध स्थापित हो जाता है। विद्यार्थी इस प्रकिया का केन्द्र बिन्दु है। एक बार के लिए शिक्षक नहीं है तो शिक्षण हो सकता है लेकिन यदि विद्यार्थी नहीं है, तो शिक्षण कार्य नहीं हो सकता। यह बालकेन्द्रित शिक्षा ही है जहाँ बच्चे के शैक्षिक स्तर, रुचि, व्यक्तिगत भिन्नताओं और विशेषताओं को ध्यान में रखकर अध्यापन करवाया जाता है।

एक अच्छा शिक्षक वह है जिसका व्यवहार एवं आचरण विज्ञाननिष्ठ हो और इस व्यवहार को शिक्षक शिक्षार्थी में अधिष्ठित कर पाए। मेरी राय में एक शिक्षक छत्र की भांति है, वह अपने छात्र की छत्र बनकर रक्षा करता है। इसलिए शिक्षक को पुस्तक एवं पाठ्यक्रम के साथ-साथ सद्व्यवहार, नैतिकता एवं जीवन मूल्यों की शिक्षा प्रदान करके भी अध्ययन-अध्यापन को और अधिक सार्थक कर सकता है। शिक्षक जीवन व्यवहार में विद्यार्थी को मुक्त बनाता है उसी प्रकार जानकारी के क्षेत्र में विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के उपाय बताता है। यह श्रेष्ठ सीख है।

ज्ञान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी में भी सीखने की लालसा और उत्कंठा होनी चाहिए। विद्यार्थी का शिक्षक से इस प्रकार अनुकूलन होना चाहिए कि वह मात्र शिक्षक के भाव देख समझकर आगे बढ़ता है वही श्रेष्ठ विद्यार्थी है। यदि शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत एवं समर्पित हों तो सीखना सिखाना स्वाभाविक होता है। अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पित शिक्षक को छात्र को पढ़ाने सीखाने के लिए दक्षता की जरूरत होती है। यह दक्षता संदर्भ विषयवस्तु खोजने में, उसका उपयोग करने एवं विद्यार्थी को संतुष्ट करने में होती है। एक शिक्षक अपने विषय और छात्र दोनों को जानता है, तभी वह सीखने सिखाने की प्रक्रिया को जीवन्त, मौलिक और उपयोगी बनाता है। जिससे आनंदमयी ज्ञानार्जन होता है।

प्रधान संपादक-शिविरा एवं निदेशक
आईएएस.
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

Rajshan Education Department
सत्यमेव जयते

रपट

भामाशाह सम्मान समारोह

राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2022

❐ डॉ. संगीता पुरोहित

पौराणिक काल से दानवीरों का समाज में सम्मानजनक स्थान रहा है। यह सम्मान और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब दानवीर समाज हित में कार्य करें। महर्षि दधीची ने मानव सृष्टि के कल्याणार्थ जीते जी अपनी अस्थियों का दान करने में भी संकोच नहीं किया था। भारतीय संस्कृति में त्याग, तपस्या और दान को विशेष महत्त्व प्राप्त है। अपनी उसी पुरातन परम्परा का निर्वहन हमारे दानदाता आधुनिक युग के भामाशाह के रूप में शिक्षण संस्थाओं के शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं भौतिक उत्थान हेतु कर रहे हैं। समाज के लिए यह शुभ संदेश है कि भौतिकवादी सभ्यता की दौड़ में मनुष्य जहाँ सब कुछ भूलता जा रहा है वहीं हमारे प्रदेश के 246 भामाशाहों द्वारा 253 करोड़ का सहयोग विभाग को प्राप्त हुआ है। राजस्थान का इतिहास त्याग, वीरता और उदारता का पर्याय रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भामाशाहों के योगदान से विद्यालयों का भौतिक विकास हुआ है। संसार में वस्तु का मूल्य चुकाया जा सकता है पर भाव अमूल्य होते हैं। दान किसी भी लिखित राष्ट्रीय व्यवस्था का अंग नहीं है। यह भाव आन्तरिक सामर्थ्य से आता है और यह अद्‌भुत सामर्थ्य राजस्थान के रणबांकुरों में है। आबू मंदिरों हेतु इकट्ठी की गई धन राशि को मातृभूमि की रक्षार्थ महाराणा प्रताप को भामाशाह ने ऐसी विकट स्थिति में सौंपा था जब वह धनाभाव के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव कर रहे थे। अत: इस दानवीर ने युद्धवीर का सहयोग किया। ऐसे दानवीर की स्मृति को बनाए रखने एवं शैक्षिक कायाकल्प के लिए प्रतिबद्ध भामाशाहों हेतु शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा पिछले 25 वर्षों से भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष 12 अक्टूबर, 2022 को 26वाँ

भामाशाह सम्मान समारोह-2022 का आयोजन दीप स्मृति सभागार, टैगोर इंटरनेशनल स्कूल कैंपस, सेक्टर-7, जोन-70, मानसरोवर, जयपुर में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला-शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक), संस्कृत शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृती एवं पुरातत्व पंचायती राज के अधीनस्थ प्राथमिक शिक्षा विभाग (स्वतंत्र प्रभार), राजस्थान सरकार थे। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र सिंह यादव, उच्च शिक्षा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), योजना स्टेट, मोटर गेराज (स्वतंत्र प्रभार), भाषा एवं पुस्तकालय (स्वतंत्र प्रभार), गृह एवं न्याय विभाग, राजस्थान सरकार एवं डॉ. सुभाष गर्ग, राज्य मंत्री तकनीकी शिक्षा, आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा सरकार एवं जन अभियोग निराकरण विभाग (स्वतंत्र प्रभार) अल्पसंख्यक मामलात, वक्फ, उपनिवेश कृषि सिंचित क्षेत्र विकास एवं जल उपयोगिता विभाग राजस्थान सरकार थे। श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग एवं पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान सरकार, श्री मोहन लाल यादव, राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद एवं श्री गौरव अग्रवाल निदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग एवं पंचायतीराज (प्रारम्भिक शिक्षा), विभाग राजस्थान सरकार व अतिरिक्त निदेशक श्री अशोक सांगवा भी समारोह में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का आरम्भ अतिथियों के सम्मान में एन.सी.सी. केडेट्स एवं स्काउट द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर देकर किया गया। मुख्य द्वार पर कुमकुम अक्षत से तिलक कर परम्परागत रूप से स्वागत किया गया। राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सभी मंचासीन अतिथियों ने भामाशाह के चित्र एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलन किया। तत्पश्चात् भामाशाह सम्मान गीत के माध्यम से सभी आगन्तुकों का स्वागत किया गया।

सर्वप्रथम श्री पवन कुमार गोयल अतिरिक्त

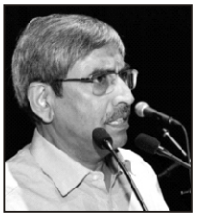

मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा राजस्थान द्वारा मंचासीन अतिथियों एवं सम्मानित भामाशाहों का स्वागत करते हुए संक्षिप्त रूप से कार्यक्रम की जानकारी दी गई। भावविभोर

Rajshaa Education Department
सत्यमेव जयते

होते हुए श्री पवन कुमार गोयल ने कहा कि राजस्थान के शिक्षा जगत में जन समुदाय आगे बढ़कर जिस प्रकार की सहभागिता निभा रहा है वह राजस्थान के मान-मर्यादा, स्वाभिमान, जिजीविषा व संघर्ष से भरी ऐतिहासिक परम्परा के सर्वथा अनुकूल है।

इस वर्ष विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2019-20 से 2021-22 की अवधि के 246 भामाशाहों को जिनमें से 01 करोड़ से अधिक के दानदाता को शिक्षा विभूषण; 15 लाख से अधिक व 01 करोड़ तक के दानदाता को शिक्षा भूषण की उपाधि से राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया है एवं इसी क्रम में 108 प्रेरकों को भी सम्मानित किया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी उपयोग की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में पहली बार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग कर आकलन के डाटा का ऑटोमेटिकली डिजिटलाइजेशन कर पायेंगे। इस एप में एक फोटो के माध्यम से विद्यार्थियों के उत्तर पत्रक की जाँच की जा सकेगी। पदोन्नत होने वाले प्रधानाचार्य की ऑनलाइन काउंसलिंग के लिए एप के लॉच करने बाबत बताया की यह प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होगी। अंत में भामाशाहों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे भामाशाह समाज हित में नूतन, कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

कार्यक्रम में उपस्थित माननीय राज्यमंत्री

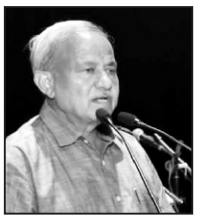

डॉ. सुभाष गर्ग तकनीकी शिक्षा और आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा एवं जन अभियोग निराकरण विभाग ने सभी भामाशाहों तथा प्रेरकों का आभार व्यक्त किया तथा माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री अशोक गहलोत का लिखित भाषण पढ़ कर सुनाया जिसमें श्री गहलोत ने लिखा था कि मेरा मन इस समारोह में आने का बहुत था किन्तु राजकार्य होने के कारण मैं नहीं आ सका। मैं हृदय से सभी भामाशाहों तथा प्रेरकों का

आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने राजकीय विद्यालयों को दान देकर विद्यालयों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग किया जिससे राजस्थान आज शिक्षा के क्षेत्र में भारत के टॉप राज्यों में आ रहा है। माननीय राज्य मंत्री महोदय ने कहा कि मुझे यह देखकर बेहद खुशी होती है कि प्रदेश के उद्योगपति पीढ़ी दर पीढ़ी इस परम्परा को सहेजते हुए आगे बढ़ा रहे है। इस समारोह में 49 भामाशाहों को शिक्षा विभूषण से जिन्होंने 2019 से 2021 तक 182 करोड़ रुपये और 197 भामाशाहों को शिक्षा भूषण जिन्होंने 71 करोड़ रुपये और इनको प्रेरित करने वाले 108 सम्मानित शिक्षककगण जिनके माध्यम से दानदाताओं को प्रेरित कर विद्यालय को बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवायी गई। साथ ही राज्य स्तर पर सम्मानित होने जा रहे आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालयों के संस्थाप्रधानों का भी आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला ने अपने उद्बोधन में दान की महत्ता बताते हुए कहा कि-

चिड़ी चोंच भर ले गई नदी न घट्यो नीर,
दान दिए धन ना घटे कह गए दास कबीर।

माननीय शिक्षा मंत्री ने कहा मैं अभिभूत हूँ कि हमारे भामाशाहों को सम्मानित किया जा रहा है। मैं नतमस्तक हूँ भामाशाहों के आगे जिन्होंने राजस्थान की वीरोचित, दानोचित परम्परा के क्रम में शिक्षा जगत को न केवल आर्थिक बल्कि मानसिक, भावनात्मक व विचारात्मक संबल प्रदान किया। राजस्थान की धरती आज भी भामाशाहों की जन्मदात्री है, उन भामाशाहों की जो सामाजिक विकास के सकारात्मक संघर्ष को आवश्यकता पड़ने पर दान और सहयोग भाव से कभी हारने नहीं देते।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने बताया कि वर्तमान में 1501 महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं जिन्हें सरकार भामाशाहों के सहयोग से नवीन तकनीकी कौशल शिक्षण प्रणाली से पूर्ण करने का प्रयास कर रही है। आज राज्य में माध्यमिक शिक्षा में 16972 विद्यालयों में 58.69 लाख विद्यार्थी नांमाकित है। राज्य सरकार प्रयासरत है कि सभी विद्यालयों का संस्थागत ढांचा सुविधा सम्पन्न हो एवं शीघ्र ही रिक्त पदों पर कुशल, प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति हो। सत्र 2022-23 में माध्यमिक से उच्च माध्यमिक विद्यालयों में तथा 435 बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किया गया है। इसके साथ ही राज्य सरकार नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम 2009 के तहत निजी विद्यालयों को वित्तीय वर्ष 2018-19 से 2021-22 तक 435.66 करोड़ की पुनर्भरण राशि का भुगतान कर चुकी है।

बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम योजना का विस्तार करते हुए यशस्वी माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी ने बजट घोषणा 2022-23 में इन्दिरा शक्ति फीस पुनर्भरण योजना लागू की है जिसमें हमारी बेटियों की शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए एवं उनके अध्ययन की निरंतरता हेतु निजी विद्यालयों की फीस पुनर्भरण की सार्थक

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पहल की है। इस योजना से कक्षा 8 उत्तीर्ण करने के पश्चात कक्षा 9 से 12 तक अध्ययन जारी रखने पर फीस का पुनर्भरण राज्य सरकार द्वारा निजी विद्यालयों को किया जाएगा। इस हेतु सरकार द्वारा 18 करोड़ का प्रावधान किया गया है। जिससे लगभग 20,000 बालिकाएँ लाभान्वित हो सकेगी।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय की बजट घोषणा की अनुपालना में राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया है जिसमें कक्षा 1 से 8 तक 2.3 लाख से अधिक शिक्षक जुड़ चुके हैं। भारत सरकार की इन्सपायर अवार्ड योजना में सन् 2020-21 में राजस्थान में 8 हजार 27 बाल वैज्ञानिकों के चयन के पश्चात् सत्र 2021-22 में 10019 बाल वैज्ञानिकों का चयन हुआ। मुझे आपको यह बताते हुए गर्व हो रहा है इस महत्त्वाकांक्षी योजना में लगातार 2 वर्षो से राजस्थान देश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर रहा है। नेशनल अचीवमेंट सर्वे में राजस्थान ने शैक्षणिक गुणवत्ता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख स्थान प्राप्त किया है। पिछले साल राजकीय विद्यालयों में नामांकन में उत्साहजनक वृद्धि हुई। वर्ष 2021-22 में राजकीय विद्यालयों में कुल नांमाकन 9850000 रहा। उन्होंने कहा कि आज का यह कार्यक्रम इस तथ्य का साक्षी है कि समर्पण, भाव और पवित्रता आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है क्योंकि एक नहीं सैंकड़ों भामाशाह हमारे बीच में मौजूद है- पवित्रता की इस डोर के साथ अगर आज हमारा शिक्षा विभाग समृद्ध है तो आप ही की बदौलत।

भामाशाह सम्मान समारोह के शुभ अवसर पर सम्मानित मंच के साथ माननीय **शिक्षा मंत्री जी ने भामाशाह सम्मान 2022** प्रशस्ति पुस्तिका का विमोचन एवं **RKSMBK एप (चरण-2) लांच किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री** महोदय द्वारा इन्दिरा शक्ति शुल्क पुनर्भरण योजना एप भी लॉन्च किया। वर्तमान समय में प्रदेश के तकनीकी विकास को एक कदम और आगे बढ़ाते हुए ऑनलाइन कांउसलिंग एप लॉन्च किया जिससे समस्त प्रकार की विभागीय नियुक्ति का माध्यम अब ऑनलाइन रहेगा।

भामाशाह सम्मान पुस्तिका 2022 में माननीय राज्यपाल महोदय एवं अन्य विशिष्ट जनों सहित प्राप्त संदेशों एवं सम्मानित भामाशाहों द्वारा शैक्षिक जगत में किए गए योगदान का प्रकाशन किया गया। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के मार्गदर्शन में शिक्षा विभाग ने इस क्षेत्र में नवाचार करते हुए प्रथम बार शिक्षा विभूषण, शिक्षा भूषण एवं शिक्षा श्री जैसे पुरस्कार आरम्भ किए जो जन समुदाय द्वारा अधिकारिक सहयोग के लिए प्रेरक होगें। वर्ष 2019-20 से 2021-22 की अवधि हेतु पूर्व की भाँति निर्धारित मानदण्ड अनुसार भामाशाहों का चयन तय प्रक्रिया के तहत पूर्ण पारदर्शिता से किया गया जिसमें सम्पूर्ण राजस्थान के 246 भामाशाहों के साथ 108 प्रेरकों को सम्मानित किया गया जिनकी सूची अग्रांकित है:-

शिक्षा विभूषण सम्मान से सम्मानित भामाशाहों की सूची

क्र.सं.	भामाशाह	राशि लाखों में
1	न्यूक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड, चित्तौड़गढ़	1938.44
2	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर	1400.96
3	हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, चित्तौड़गढ़	1315.76
4	चम्बल फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड, कोटा	886.92
5	होंडा कार इण्डिया लिमिटेड, अलवर	833.70
6	डीसीएम श्री राम फाउंडेशन, कोटा	755.43
7	सुप्रीम फाउण्डेशन, जसवंतगढ़, नागौर	726.08
8	एस.एम. सहगल फाउण्डेशन, हरियाणा	599.54
9	अर्पण सेवा संस्थान, उदयपुर	555.13
10	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, अजमेर	513.51
11	क्यू. आर.जी. फाउण्डेशन, अलवर	506.95
12	संघवी सरस्वती देवी लखमी चन्द खांटेर चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई, मुम्बई	505.42
13	बॉश लिमिटेड, जयपुर	411.37
14	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, भीलवाड़ा	382.64
15	जिंक स्मेल्टर देबारी, उदयपुर	364.22
16	वंडर सीमेंट लिमिटेड, चितौड़गढ़	357.67
17	जयपुर रॉयल्स राउंड टेबल–चेरिटेबल ट्रस्ट–215, जयपुर	357.22
18	न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि., बांसवाड़ा	349.12
19	अखिल भारतीय छाजेड़ परिवार मंडल, जोधपुर	324.00
20	राजपुरा दरीबा कॉम्पलेक्स, राजसमन्द	321.16
21	कैयर्न वेदान्ता ऑयल एण्ड गैस लि., बाड़मेर	314.28
22	श्रीमती बदामबाई उदयलाल सियाल चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई	302.27
23	हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, जावर माइंस, उदयपुर	270.96
24	सेवा ज्योति आर.आर. मोरारका चेरिटेबल ट्रस्ट, झुंझुनूं	260.18
25	श्री सुभाष कुमार राजपुरोहित, जालोर	259.58
26	श्री हितेश भंवरलाल संघवी, जालोर	203.00
27	श्री बालयोगी महंत रूपनाथ, हनुमानगढ़	202.00
28	जागृति, जयपुर	195.60
29	हीरो मोटो कॉर्प लि., जयपुर	189.32
30	सिगवर्क इण्डिया प्रा.लि., अलवर	183.15
31	श्री श्याम सेवा कुन्ज ट्रस्ट, मुंबई	158.39
32	श्रीराम पिस्टन्स एण्ड रिंग्स लि., अलवर	156.78
33	साउथ वेस्ट माइनिंग लि., बाड़मेर	156.31
34	राष्ट्रीय विद्यापीठ मॉडर्न स्कूल, नाथद्वारा, राजसमन्द	149.72
35	प्रभात फाउन्डेशन, मुम्बई	147.27
36	इब्तिदा अलवर, अलवर	143.47
37	मयूर फाउण्डेशन, जैतपुरा, जयपुर सीकर रोड़	140.98
38	आशियाना हाउसिंग लि., नई दिल्ली	130.82
39	हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि., जोधपुर	130.30
40	खेतड़ी ट्रस्ट, जयपुर, जयपुर	125.00
41	रामप्रसाद महादेव भोमराजका ट्रस्ट, जयपुर	121.86
42	रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी, जोधपुर	114.70

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

43	वाई फोर डी फाउण्डेशन, महाराष्ट्र	114.28
44	हल्दीराम एज्यूकेशनल सोसायटी, नई दिल्ली	112.70
45	श्री अशोक मित्तल, जयपुर	110.05
46	चौकसी हैरियस प्रा. लि., एमआईए, उदयपुर	108.68
47	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण किशनगढ़, अजमेर	104.81
48	जोधपुर राउण्ड टेबल ट्रस्ट, जोधपुर	104.65
49	श्री पहाड़ सिंह चौहान, जालोर	103.97

शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित भामाशाहों की सूची

50	कजारिया सिरेमिक्स लिमिटेड, अलवर	165.62
51	मयूर यूनिकोटर्स लिमिटेड, जयपुर	163.30
52	मोजेक इण्डिया प्राईवेट लिमिटेड, गुरूग्राम	139.93
53	श्री सीमेंट लिमिटेड बांगड़ नगर, अजमेर	138.46
54	जयपुर टाइगर्स राउण्ड टेबल–292 चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	118.34
55	अल्ट्राटेक सीमेन्ट लि. ईकाई–बिड़ला व्हाईट, जोधपुर	106.70
56	आदित्य सीमेंट वर्क्स, आदित्यपुरम, चित्तौड़गढ़	101.32
57	किशनगढ़ हवाई अड्डा, अजमेर	92.57
58	कोटा राउण्ड टेबल–281, कोटा	90.54
59	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, जयपुर	86.48
60	श्री महावीर प्रसाद मिङ्डा, गंगानगर	82.87
61	जयपुर राउंड टेबल–233, जयपुर	82.65
62	मंदिर श्री गोविन्द देवजी ट्रस्ट, जयपुर	81.60
63	श्रीमती कांतादेवी सुभाषजी खिमावत चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई	80.12
64	जयपुर हैरिटेज राउण्ड टेबल–185, बनीपार्क	79.39
65	ए.बी.सी.आई. इन्फ्रास्ट्रक्चर, प्रा.लि., नई दिल्ली	78.95
66	काबरा फाउण्डेशन, बड़ोदरा	77.04
67	आर.के. मार्बल प्रा.लि., राजसमंद	75.00
68	उदयपुर लेक सिटी राउण्ड टेबल ट्रस्ट, उदयपुर	74.93
69	उदयपुर युनाइटेड राउण्ड टेबल ट्रस्ट, उदयपुर	75.73
70	स्वधर्म फाउंडेशन, जयपुर	73.18
71	सेंट–गोबेन इण्डिया प्रा. लिमिटेड, भिवाड़ी	71.53
72	जेके सीमेंट, चित्तौड़गढ़	68.91
73	एस.आर.एफ. फाउंडेशन, गुडगांव	65.45
74	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, अजमेर	67.50
75	रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी, जोधपुर	64.68
76	श्रीमती गीता देवी, सिरोही	61.37
77	महादेव एन्क्लेव, जयपुर	61.11
78	एच.डी.एफ.सी. बैंक लिमिटेड, लोअर परेल	60.00
79	रामकी फाउण्डेशन, हैदराबाद	45.31
80	डॉ. प्रदीप कुमावत, उदयपुर, गिरवा	60.00
81	जोधपुर ब्लूज राउण्ड टेबल–326, जोधपुर	56.60
82	जयपुर पिंक सिटी राउण्ड टेबल, जयपुर	52.84
83	श्री नेमीचन्द तोषनीवाल, कोलकाता	55.52
84	समर्पण, मुम्बई	55.48
85	एफ.सी.आई. अरावली. जिप्सम एण्ड मिनरल्स इंडिया लि., जोधपुर	69.21
86	श्री सुनील खेतपालिया, चेन्नई	53.29
87	कोटा यूनाईटेड राउण्ड टेबल–306, कोटा	53.00
88	जैक्वार एण्ड कंपनी, प्रा.लि., गुरुग्राम	52.65
89	श्री सीमेंट लिमिटेड, खुशखेडा, अलवर	51.75
90	श्री सम्पतचंद बाफना, जोधपुर	51.00
91	श्री बाबूलाल पारीक, उत्तरी दिल्ली	50.70
92	उदयपुर राउण्ड टेबल–253, उदयपुर	49.67
93	श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, मुम्बई	49.02
94	श्री खुशालचंद लवजी जी जैन, जालोर	48.00
95	जैन संघ तवाब, जालोर	47.87
96	बिरला कॉर्पोरेशन लिमिटेड, चित्तौड़गढ़	46.99
97	विराट ऑटोलाइन, जोधपुर	47.29
98	राजस्थान स्टेट पॉवर फाईनेंस एण्ड फाईनेंसियल सर्विस कॉ.लि., जयपुर	46.95
99	माधोदास मोदी, नागौर	46.00
100	श्री मदनलाल चौधरी, जयपुर	45.00
101	श्री ब्रिजेन्द्र सिंह आबूसरिया, जयपुर	44.79
102	एच.जी. इन्फ्रा इंजीनियरिंग लिमिटेड, जयपुर	70.57
103	श्री महेंद्र सिंह, जयपुर	35.00
104	ग्राम शिक्षा समिति, हनुमानगढ़	42.50
105	जयपुर ज्वैलसिटी राउंड टेबल 191 चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	42.44
106	श्री सूरजमल तापड़िया मेमोरियल ट्रस्ट जसवंतगढ़, नागौर	42.14
107	श्री प्यारेलाल जैन, तमिलनाडु	40.86
108	श्री हरिराम द्वारका प्रसाद मिस्त्री, झुंझुनूं	40.78
109	श्री विशम्भर दयाल शर्मा, करौली	22.69
110	श्री रामस्वरूप कस्वा, नागौर	38.00
111	श्री घनश्याम सदावत, नागौर	38.52
112	सर्वमंगल ग्रामीण विकास संस्थान, पाली	32.97
113	राजस्थान प्राईम स्टील प्रोसेसिंग सेंटर, प्रा.लि., अलवर	37.53
114	बीकानेर राउण्ड टेबल, बीकानेर	37.30
115	पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, भीनमाल	36.67
116	अल्ट्राटेक सीमेंट, लि. कोटपूतली, जयपुर	33.97
117	पिंकसिटी ज्वैल हाउस, प्रा.लि., जयपुर	35.58
118	शिव एडिबल्स लिमिटेड, कोटा	35.40
119	श्री योगेश कुमार यादव, अलवर	35.00
120	श्री सत्यनारायण तोषनीवाल, कोलकाता	34.38
121	कॅप्री फाउण्डेशन, मुम्बई	34.31
122	भीलवाड़ा यूनाइटेड राउण्ड टेबल 184, भीलवाड़ा	34.12
123	श्री पूनाराम, बाड़मेर	34.00
124	श्रीमती ग्यासो देवी, भरतपुर	33.84
125	श्री मदनगोपाल माहेश्वरी, कोलकाता	33.06
126	वाईब्रेट एकेडमी इंडिया प्रा.लि., कोटा	32.82
127	श्रीमती राजवती, झुंझुनू	32.38
128	आर.एच.आई मेग्नेसिटा इंडिया लिमिटेड, अलवर	31.80
129	बीकानेर राउण्ड टेबल, बीकानेर	31.50
130	श्री बसंत लाल गोयल, दिल्ली	31.30
131	श्री गुलजारी लाल, नई दिल्ली	31.00
132	केशव हाईकेम प्रा.लि., श्रीगंगानगर	31.00
133	श्री सांवर मल अग्रवाल, सेवानिवृत्त न्यायधीश, उ. दिल्ली	30.96
134	बीकानेर राउण्ड टेबल, बीकानेर	30.87
135	श्री बनवारी लाल मित्तल, कोलकाता	30.86
136	श्री बगडा राम, जालोर	30.07
137	श्री ठाकर सिंह, अलवर	30.00

Rajasthan Education Portal
सत्यमेव जयते

138	जयपुर यूनाइटेड राउण्ड टेबल ट्रस्ट–272, जयपुर	29.88
139	गणेशीलाल एज्यूकेशनल फाउण्डेशन, न्यू दिल्ली	25.02
140	दोस्ताना युवा ग्रुप तवाव., जालोर	28.48
141	रोटरी क्लब जयपुर रॉयल, जयपुर	27.02
142	जिलेट इंडिया लिमिटेड, अलवर	26.96
143	श्री सोहन लाल सहारण, श्रीगंगानगर	26.41
144	लूपिन ह्यूमन एण्ड वेलफेयर, फाउण्डेशन, भरतपुर	26.02
145	नोर्मेट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर	25.03
146	श्री हरभजन सिंह कस्वा, हनुमानगढ़	25.00
147	बी.एन.पी. इंटीरियर्स, बीकानेर	25.00
148	श्री आत्माराम रामकुमार जटिया, मुंबई	25.00
149	श्री शंकरलाल पद्माराम कुलरिया, बीकानेर	25.00
150	श्री ताराराम सिरवी, पाली	25.00
151	रेडिको खेतान लिमिटेड, सीकर	24.93
152	माताश्री गोमती देवी जन सेवा निधि, अलवर	24.24
153	राजगढ़ सादुलपुर नागरिक परिषद्, कोलकत्ता	24.01
154	एच.पी.सी.एल. एलपीजी प्लांट, जोधपुर, जोधपुर	24.00
155	रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी, जोधपुर	23.49
156	व्यापार मण्डल श्री विजयनगर, श्रीगंगानगर	22.21
157	श्री भगवान सहाय, जयपुर	23.00
158	श्री अर्जुन सिंह, सीकर	21.97
159	बेयरफुट कॉलेज इंटरनेशनल, अजमेर	21.54
160	सोमानी इस्पात प्रा.लि., तेलंगाना	21.51
161	अल्ट्राटेक सीमेन्ट लिमिटेड, जयपुर	21.21
162	श्री पोकर राम, पाली	21.00
163	श्री माल चन्द डागा, चूरू	20.91
164	अंबुजा सीमेंट फाउंड़ेशन, नागौर	20.65
165	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि., WRPL चाकसू, जयपुर	20.55
166	श्री कृपाराम देवड़ा, नागौर	20.50
167	श्री श्रीकुमार तोषनीवाल, नागौर	20.37
168	श्री शैलेन्द्र घीया, मुम्बई	20.29
169	श्री फतेह सिंह, जयपुर	20.10
170	श्रीमती विमला बाई छगनलाल सुराणा, पाली	20.00
171	श्री विश्वनारायण लाखलाण, हनुमानगढ़	20.00
172	मिश्री देवी सत्यनारायण खैराड़ी चैरिटेबल ट्रस्ट, महाराष्ट्र	20.00
173	श्रीमती सी.एम. मून्धड़ा चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई	20.00
174	श्री विरेन्द्र सिंह भाटी, जोधपुर	19.98
175	श्री मनोज कुमार मदनलाल अग्रवाल, अहमदाबाद	19.85
176	श्री राज खान, चूरू	19.30
177	श्री अरविन्द कुमार गोयल, दिल्ली	18.78
178	श्री लादू लाल गांधी, महाराष्ट्र	18.75
179	श्रीमती त्रिवेणी देवी सोमानी, चूरू	18.73
180	श्री हुकुम चंद गुप्ता, कोटा	18.60
181	श्री भिंयाराम जाणी, नागौर	18.51
182	श्री भगवानाराम चौधरी, चूरू	18.41
183	रोटरी क्लब, कोटा	18.40
184	श्री तुलछाराम ताडी, नागौर	18.34
185	वेस्टर्न ड्रग्स लिमिटेड, उदयपुर	18.26
186	श्री शांति लाल लाधमल मरडिया, जालोर	18.00
187	गौसेवी श्री पद्माराम कुलरिया (सुथार) चैरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर	18.00
188	श्री बलवन्त राज पुरोहित, जालोर	18.00
189	श्री महावीर स्टोर, चैन्नई	17.94
190	श्री मानक चन्द होलानी, दिल्ली	17.50
191	श्री पूरण मल कुमावत, सीकर	17.40
192	श्री सूरज सिंह, श्रीमाधोपुर (सीकर)	17.47
193	युटाका ऑटो पार्टस् इंडिया प्रा. लिमिटेड, अलवर	17.34
194	श्री कजोडमल, झुन्झुनूं	17.30
195	नारंगी श्रीराम गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट, पटना	17.26
196	मैक बियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, अलवर	17.23
197	श्री संजय अग्रवाल, मुम्बई	17.00
198	श्री श्यामसुन्दर केजड़ीवाल, झुन्झुनू	17.00
199	श्री नरेश मालाराम वर्धाराम गोपाल भूराजी, जालोर	16.95
200	श्री रमेश चन्द्र नागर, कोटा	16.81
201	श्रीमती शान्ति देवी पुरोहित, जालोर	16.70
202	श्री दलीचंद रायचन्द चंदन, जालोर	16.63
203	श्री रूप चन्द्र जैन, उत्तरप्रदेश	16.62
204	विद्या सेवा संस्थान, श्रीमती दिव्या सौंख्या, जयपुर	16.60
205	श्री उकाराम पुरोहित, जालोर	16.51
206	श्री हरीश बिश्नोई, जालोर	16.50
207	कोटा सिटी राउण्ड टेबल चेरिटेबल ट्रस्ट 358, कोटा	16.50
208	श्री माणिकलाल मूलचन्द शाह, पाली	16.21
209	श्री संतोष सैनी, झुंझुनूं	16.20
210	श्री विष्णु गोपाल तोषनीवाल, नागौर	16.18
211	रेशम देवी नानक चन्द मित्तल फाउंडेशन, अलवर	16.10
212	श्री इन्द्राज सिंह, झुंझुनूँ	16.02
213	श्री रूडाराम डूंगरराम चौधरी, जालोर	16.01
214	श्री श्यामसुन्दर सन्तोषकुमार केजड़ीवाल, मुम्बई	16.00
215	श्री विनोद कुमार, भरतपुर	16.00
216	श्री लक्ष्मण सिंह शेखावत, झुंझुनू	16.00
217	श्री जवाराराम, नागौर	16.00
218	श्री अशोक खींचा, सिरोही	15.94
219	अजमेर राउण्ड टेबल, अजमेर	15.88
220	श्री जेपाराम भादरडा, जालोर	15.82
221	श्री मदनलाल, नागौर	15.70
222	कम्प्यूकॉम सॉफ्टवेयर लिमिटेड, जयपुर	15.37
223	श्री अतिष माथुर, अजमेर	15.50
224	श्री अनिल पीतलिया, भरतपुर	15.50
225	श्री ज्योति प्रसाद तापड़िया, नागौर	15.50
226	श्री मूलचन्द, सीकर	15.45
227	श्री मनोज शर्मा, छत्तीसगढ़	15.45
228	लेडिज सर्किल इंडिया, जयपुर	15.44
229	श्री राकेश केडिया, वेस्ट बंगाल	15.35
230	अजमेर राउण्ड टेबल, अजमेर	15.31
231	श्री सावलाराम जेताजी पुरोहित, सिरोही	15.30
232	श्री मनोज कुमार मीणा, खेतड़ी	15.29
233	श्री शम्भू दयाल शर्मा, सीकर	15.22
234	श्री जोराराम शेराराम, पाली	15.20
235	श्री खेताराम सांखला, जोधपुर	15.15

Rajasthan Education Portal
सत्यमेव जयते

236	श्री भंवरलाल तापडिया, मुम्बई	15.14
237	व्यापार मंडल, श्रीविजयनगर, श्रीगंगानगर	15.12
238	श्री हनुमान राम, लाडनूं	15.07
239	श्री देवीसिंह राजपूत, करौली	15.06
240	श्री बृजमोहन अग्रवाल, अलवर	15.06
241	इंडिया गलेज्स लिमिटेड, कोलकाता	15.00
242	श्री किशनलाल विश्नोई, जालौर	15.01
243	ए.यू. स्मॉल फाइनेंस बैंक लि., जयपुर	15.00
244	अजमेर राउण्ड टेबल, अजमेर	15.00
245	राधे गोविन्द चरणार्पित सेवा ट्रस्ट, जयपुर	15.00
246	श्रीमती विमला, चूरू	15.00

प्रेरकों की सूची

1 जगमाल गुर्जर, अजमेर
2 देवेन्द्र प्रसाद डाबी, पाली मारवाड़
3 जय प्रकाश व्यास, बाड़मेर
4 राजेश कुमार, अलवर
5 नरेन्द्र सिंह चौहान, राजसमन्द
6 कन्हैया लाल, जालोर
7 अशोक कुमार यादव, अलवर
8 भंवर लाल विश्नोई, जायल
9 प्रदीप सिंह, हनुमानगढ़
10 वीणा चौधरी, राजसमन्द
11 मिट्ठन लाल, अलवर
12 मोइनी फाउन्डेशन, जयपुर
13 डॉ. रामगोपाल जाट, नागौर
14 राजेन्द्र कुमार शर्मा, अजमेर
15 रमेश कुमार अग्रवाल, बीकानेर
16 श्रवण कुमार जाट, नागौर
17 लक्ष्मण सिंह गहलोत, जोधपुर
18 किसना राम विश्नोई, जालोर
19 लुकुट बल्लभ गौड़, नागौर
20 विनोद कुमार, हनुमानगढ़
21 भोपराज टांक, धनोरा
22 शशि चौधरी, जोधपुर
23 राहुल गर्ग, जयपुर
24 नरेन्द्र कुमार, श्रीगंगानगर
25 डॉ. सुरेश चौधरी, जयपुर
26 अशोक कुमार, जालोर
27 बच्चु सिंह धाकड़, जयपुर
28 डॉ. जयश्री भार्गव, जयपुर
29 शैतान सिंह चौधरी, जयपुर
30 मुकेश कुमार, अलवर
31 लक्ष्मण सिंह, नसीराबाद
32 अंकुर चौधरी, जोधपुर
33 पूनम चौधरी, चित्तौड़गढ़
34 दीपक कुमार भट्ट, फलवा
35 प्रिया, पाली मारवाड़
36 विजय कुमार यादव, अलवर
37 वोरा राम, पाली
38 राम कुमार, श्रीगंगानगर
39 मदन लाल नवल, पाली
40 ऋतु रानी शर्मा, जयपुर
41 नंद लाल सिंह जोधा, पाली
42 अशोक कुमार शर्मा, जयपुर
43 रामावतार अरूण, अलवर
44 चन्द्रा सिंघवी, जोधपुर
45 तारा चन्द मीना, सीकर
46 भंवर लाल जाट, नागौर
47 राजेश कुमार फागना, नसीराबाद
48 सरस्वती वर्मा, पाली
49 जगदीश कुमार, जालोर
50 अनिता खीचड़, जयपुर
51 विमला, बाड़मेर
52 घीसु लाल चौधरी, पाली
53 डॉ. विमलेश कुमार पारीक, जयपुर
54 कोमल कान्त शर्मा, अलवर
55 द्वारका प्रसाद सुथार, बीकानेर
56 मांगु खान, नागौर
57 राम करण घासल, अजमेर
58 बबीता कुमारी, झुंझुनूं
59 डॉ. ब्रजराज कुमार शर्मा, सिरियारी
60 ओमप्रकाश पूनिया, झुंझुनूं
61 भगवान सहाय शर्मा, अलवर
62 मोहम्मद इमरान खान मेवाती, अलवर
63 स्नेह प्रभा मनोहर, जयपुर
64 युगल किशोर शर्मा, चित्तौड़गढ़
65 उम्मेद सिंह जय सिह चारण, जोधपुर
66 राजेश कुमार, अलवर
67 ममता सोनगरा, अजमेर
68 सूरजमल परिहार, बीकानेर
69 चैनरूप दायमा, चूरू
70 सरवत बानो, जयपुर
71 लाल चन्द मीना, चित्तौड़गढ़
72 सीमा शर्मा, जयपुर
73 उम्मेद सिंह, सीकर
74 दिनेश कुमार स्वर्णकार, कोटा
75 हेमन्त कुमार जोशी, उदयपुर
76 कालूराम, अलवर
77 विशाखा कौशिक, जयपुर
78 अर्पण सेवा संस्थान, उदयपुर
79 मान सिंह, भरतपुर
80 श्रीराम जाट, अलवर
81 लेखराम राव, श्रीगंगानगर
82 प्रदीप सुराणा, चूरू
83 राजेश शर्मा, जयपुर
84 डॉ सत्यप्रकाश शर्मा, पाली
85 विनिता सिंह, जयपुर
86 निधि छींपा, जयपुर
87 ईश्वर सिंह शक्तावत, जयपुर
88 सुरजकरण बैरवा, अजमेर
89 अतर सिंह, झुन्झुनूं
90 नरेन्द्र पंवार, बीकानेर
91 मंगतु राम मोहता, सादुलपुर
92 गिराज प्रसाद गोयल, अलवर
93 मनोज कुमार बुनकर, जयपुर
94 पुष्कर लाल, श्रीगंगानगर
95 मधु चौधरी, सीकर
96 पप्पुराम पंवार, बीकानेर
97 घीसा लाल छींपा, सीकर
98 रामा कान्त टांटिया, हनुमानगढ़
99 श्रवण कुमार, जालोर
100 रजनीश कुमार, हनुमानगढ़
101 हेमन्त विश्नोई, जालोर
102 तुलसीराम प्रजापत, चित्तौड़गढ़
103 गौरव शर्मा, झुंझुनूं
104 किरण चौधरी, नागौर
105 विकास कुमार अग्रवाल, चित्तौड़गढ़
106 कैलाश चन्द शर्मा, अजमेर
107 शान्ति लाल जीनगर, जालोर
108 डॉ. किरण सिडाना, जयपुर

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

अन्त में श्री गौरव अग्रवाल, निदेशक,

माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ने समारोह में पधारे मुख्य अतिथि तथा अन्य समस्त मन्त्रीगण, अधिकारी वृन्द, सम्मानित भामाशाहों, प्रेरकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, मीडिया कर्मियों, आयोजकों एवं अन्य सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। निदेशक महोदय द्वारा निदेशालय बीकानेर तथा कार्यालय संयुक्त निदेशक जयपुर संभाग के कार्यक्रम को सफल बनाने वाले सभी सम्बन्धित कार्मिकों एवं अधिकारियों को सहयोग देने पर आभार व्यक्त किया।

समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

सहायक निदेशक (शिविरा अनुभाग)
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
मो. 9950956577

रपट

माननीय शिक्षामंत्री ने किया विद्यालय भवन का लोकार्पण

❒ राजेन्द्र कुमार गग्गड़

राजसमंद–दिनांक 10.10.2022 को चि.गो. विशाल बावा माननीय विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी एवं माननीय शिक्षा मंत्री श्रीमान बी.डी. कल्ला के मुख्य आतिथ्य में श्री गोवर्धन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) बड़ा बाजार नाथद्वारा, जिला–राजसमन्द का लोकार्पण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना तथा कृषि मंत्री श्री लालचंद कटारिया भी उपस्थित रहे। विद्यालय को पूरी तरह सुसज्जित किया गया मुख्य द्वार में प्रवेश लेते ही श्रीनाथ जी की छवि का पूजन किया गया। उसके पश्चात श्री गोवर्धन लाल जी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया गया। तत्पश्चात पास ही स्थित वल्लभ विलास भवन में सभी मेहमानों का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। लगभग 5 करोड़ की लागत से विद्यालय भवन का निर्माण हुआ जिसमें सभी कक्षाओ में विद्यार्थियों के बैठने के लिए फर्नीचर, स्टाफ रूम फर्नीचर, प्रधानाचार्य कक्ष का फर्नीचर उपलब्ध कराया गया। भवन में प्रत्येक मंजिल पर बालक व बालिकाओ के लिए अलग–अलग शौचालय–मूत्रालय तथा प्रत्येक मंजिल पर आर.ओ. वाटर कूलर लगाया गया है। साथ ही सुसज्जित कम्प्यूटर कक्ष, प्रयोगशाला कक्ष, पुस्तकालय कक्ष तथा एक हॉल भी बनवाया गया है जिसमें भी फर्नीचर

उपलब्ध है। माननीय शिक्षामंत्री द्वारा उक्त विद्यालय में भूगोल, राजनीति विज्ञान तथा इतिहास वैकल्पिक विषय के रूप में खोलने की घोषणा की गई। आदरणीय डॉ. सी.पी. जोशी ने विद्यालय के रखरखाव के लिए कॉरपस फण्ड संग्रहित करने का प्रस्ताव जिसमें मिराज हाउस के एमडी. श्री मदन पालीवाल ने 5 लाख देने की घोषणा की साथ ही सहकारिता मंत्री आदरणीय श्री उदयलाल आंजना ने एक लाख तथा एक अन्य भामाशाह श्री कृष्ण गोपाल गुर्जर द्वारा एक लाख देने की घोषणा की गई।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, राजसमंद, **मो. 9950979225**

रपट

धौलपुर में साबरमती आश्रम हुआ जीवन्त

❒ अरविन्द शर्मा

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म भारत में हुआ, लेकिन उन्होंने अपने विचारों और कार्यशैली से विश्व को मार्गदर्शन प्रदान किया। आज भी महात्मा गाँधी भारत और विश्व के लिए अमूल्य विरासत है। वे भारत की आत्मा में रचते–बसते हैं। राजस्थान सरकार के मुखिया माननीय मुख्यमंत्री स्वयं गाँधी दर्शन व मूल्यों के सक्रिय अनुयायी है। उनकी प्रेरणा से राज्य में 02 अक्टूबर से प्रारम्भ गाँधी सप्ताह के संदर्भ में गाँव, उपखण्ड और जिला मुख्यालयों पर सर्वधर्म सद्भाव समारोह आयोजनों से राज्य का सामाजिक वातावरण गाँधीमय होने लगा है। माननीय मुख्य सचिव राजस्थान सरकार श्रीमती उषा शर्मा की भावनात्मक अपील से प्रेरित होकर धौलपुर जिला कलेक्टर श्री अनिल अग्रवाल ने जिले में गाँधी मूल्यों को जीवन्त करने के लिए आह्वान किया जिससे शिक्षा विभाग के कार्मिक श्री अशोक उपाध्याय ने जिले के मुख्य कार्यक्रम स्थल पर साबरमती आश्रम बनाने तथा उसमें सप्राण पद्धति को अभिव्यक्त करने का विचार दिया। जिला कलेक्टर श्री अनिल अग्रवाल भी इस विचार को लेकर बहुत उत्साहित हुए। इस आश्रम की स्थापना को जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग ने अपना भावनात्मक कर्मकारी सहयोग दिया और 20 घण्टे बाद आर.ए.सी. मैदान, धौलपुर के मुख्य कार्यक्रम स्थल पर साबरमती आश्रम एक मुख्य आकर्षण केन्द्र बन गया। 17 जून, सन् 1917 को बापू ने इस आश्रम की स्थापना साबरमती नदी से लगभग 04 मील दूर गुजरात के अहमदाबाद में की थी। इस स्थान पर महात्मा गाँधी ने अपनी पत्नी के साथ जीवन के 12 वर्ष व्यतीत किए थे। इस आश्रम में गाँधी जी ने स्वच्छता एवं सहकारिता के प्रति मानव श्रम के प्रति अपनी जीवन शैली से संदेश दिया था।

इन सब मूल्यों को ध्यान में रखकर धौलपुर के इस साबरमती आश्रम में चरखे पर सूत कातते शिष्य, महिलाएँ अनाज साफ करने के लिए काम में आने वाला सूप (छाजला), रोगियों की देखभाल के दृश्य, चारा खाती बकरियाँ, खादी वस्त्रों की उपलब्धता, शांत फुदकते प्राणवान कबूतर और वृक्षों पर चहकते पक्षियों की आवाज तथा छप्पर में बैठे नन्ने–मुन्ने गाँधी वेशभूषा वाले गाँधी सबको सम्मोहित करते नजर आए, यहाँ तक कि स्वयं जिला कलक्टर ने आश्रम के चरखे पर सूत कातकर वातावरण को जीवन्त कर दिया। दर्शकों की माँग उठने लगी कि इस आश्रम को स्थायी कर दिया जाना चाहिए। सच एक बार फिर साबरमती आश्रम 02 अक्टूबर 2022 को धौलपुर में जीवन्त होकर सबको गाँधी संदेश दे गया।

जिला शिक्षा अधिकारी
(मुख्यालय) माध्यमिक, धौलपुर (राज.)
मो. 9414028039

Rajasthan Education Department

कालिदास विशेष

यत्र याति शकुन्तला

❐ इला पारीक

पाश्चात्य एवं भारतीय, प्राचीन एवं नवीन विद्वानों की दृष्टि में कालिदास सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इन्हें संस्कृत कवियों में निर्विवाद रूप से सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। कालिदास सरस्वती की उज्ज्वल मणि माला के मध्य मणि हैं। वे न केवल एक सफल महाकाव्यकार हैं अपितु सर्वोत्कृष्ट नाटककार एवं गीतिकाव्य प्रणिता भी हैं। उनकी यह बहुमुखी प्रतिभा संस्कृत के अन्य कवियों की अपेक्षा उनके वैशिष्ट्य प्रतिपादन में विशेष सहायक होती है। लेकिन सर्व विख्यात महाकवि के जीवन, स्थिति काल एवं निवास स्थान आदि के संबंध में प्रामाणिक दृष्टि से कुछ भी ज्ञात नहीं है। अत्यंत विनयी एवं निष्पृह होने के कारण उन्होंने स्वरचित नाटकों में पुरानी परिपाटी का अनुसरण कर मात्र अपना नाम निर्देश भर कर दिया है। इन्होंने अपने देशिक एवं कालिक परिधि के उल्लेख की कोई आवश्यकता ही नहीं समझी। वस्तुतः वे सर्वकालिक एवं सार्वदेशिक हैं।

कवि कुलगुरु कालिदास की 7 रचनाओं में अभिज्ञान शाकुंतलम कवि कालिदास की ही नहीं अपितु विश्व साहित्य में सर्वोत्कृष्ट नाटक कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी तभी तो कहा गया है–

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला

सप्त अंक समन्वित शृंगार रस प्रधान इस नाटक का नायक हस्तिनापुर का पुरुवंशी राजा दुष्यंत तथा ऋषि विश्वामित्र और नायिका मेनका से उद्भूत परम सुंदरी शकुंतला है इस नाटक की कथावस्तु राजा द्वारा दिए गए अभिधान के इर्द गिर्द चक्कर काटती है फलतः ग्रंथकार ने इसे अभिज्ञान शाकुंतलम् शीर्षक से अलंकृत किया है। इसकी उपजीव्यता का श्रेय महाभारत के शकुंतलोपाख्यान को प्राप्त है। शकुंतलोपाख्यान के नीरस कथानक को परिवर्धित एवं किंचित परिवर्तित कर कवि ने एक नवीन रूप प्रदान किया है।

शाकुंतल में कवि ने तात्कालिक सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक जीवन का सच्चा चित्र प्रकट किया है। तत्कालीनः पारिवारिक एवं सामाजिक प्रथाओं का भी सजीव वर्णन किया है। शकुंतला और दुष्यंत प्रणय के प्रथम आवेश में गंधर्व विवाह कर लेते हैं परंतु प्रेम का वास्तविक मूल्य उन्होंने नहीं पहचाना था। इसीलिए सभी को उन्हें यह पाठ पढ़ाना था। शाकुन्तल की सबसे बड़ी विशेषता उनका यही अमर संदेश है–

अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यः विशेषात् संगतः रहः।
अज्ञात हृदयेषु एवं बैरी भवति सौहृदम्।

सामाजिक, सांस्कृतिक और लोक व्यवहार की दृष्टि से शाकुंतल का चौथा अंक सर्वाधिक प्रशस्त और कमनीय है। यह अंक हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन की विषमताओं को हटाकर संतुलन और सामंजस्य स्थापित करता है। महर्षि कण्व तीर्थ यात्रा से आश्रम में लौटने के बाद जब अग्नि शाला में प्रवेश करते हैं तो उन्हें शकुंतला के विवाह की एवं उसके गर्भवती होने की सूचना मिल जाती है। महर्षि लोक धर्म का निर्वाह करते हुए शकुन्तला को ससुराल भेजने की तैयारी करते हैं। ससुराल जाती हुई शकुंतला की विदाई का दृश्य बहुत ही मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हो जाता है। स्वयं महर्षि कण्व पुत्री को विदा करते समय अपने हृदय में विकलता का अनुभव करते हुए कहते हैं–

यास्यत्यद्य शकुन्तले हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठस्तंभितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैकल्व्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः,
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुखैर्नवैः।

चतुर्थ अंक में कण्व का शकुंतला की विदाई के विचार से द्रवित एवं करुणा भाव को प्राप्त हुए हृदय की मार्मिक झांकी है। इसमें करुणाभाव का सर्वोत्तम प्रवाह होने से यह श्लोक चतुष्टय में सर्वोत्कृष्ट श्लोक हैं। विदा होती हुए पुत्री के पिता का भारतीय संस्कृति के अनुरूप उपदेश आगे किस रूप में परिलक्षित होता है–

शुश्रुषस्व गुरुन्कुरु प्रियसखी वृत्तिं सपत्नीजने,
पत्युर्विप्रकृतापिरोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणः परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी,
यान्तेव गृहिणी पदं युवतयोः वामा कुलस्याधयः।।

अर्थात हे शकुंतले! तुम अपने ससुराल में जाकर अपने से बड़ों की सेवा करना, सपत्नियों से प्रिय सखी के समान व्यवहार करना, पति के क्रोध करने पर भी उसके विपरीत आचरण मत करना, सेवक–सेविकाओं के प्रति उदारता बरतना और अपने भाग्य पर घमंड मत करना। इस तरह का व्यवहार करने पर युवतियाँ गृहणी पद को प्राप्त करती हैं तथा इसके विपरीत आचरण करने के कारण युवतियाँ कुल के लिए रोग के समान हो जाती हैं।

मिलन की चाह और वियोग की व्यथा, इन दोनों के बीच चौथा अंक विरोधाभास की स्थिति में समन्वय और सामंजस्य प्रस्तुत करता है। चतुर्थ अंक का नवां श्लोक करुणभाव का मार्मिक उदाहरण है। इसमें बाह्य प्रकृति से मानव की अंतःप्रकृति का गूढ़ समन्वय किया गया है–

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या,
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आदेः वः कुसुमप्रसूति समये यस्याः भवत्युत्सवः,
सायमयाति शकुन्तला पतिगृहं सर्वेरनुज्ञायताम्।।

महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुंतलम संस्कृत साहित्य का ही नहीं, वरन विश्व साहित्य की एक अमूल्य निधि है। इस ग्रंथ के विषय में दैशिक एवं वैदेशिक विद्वानों ने बहुत सी प्रशंसाएँ लिखी है। वस्तुतः इसकी प्रशंसा में जो कुछ भी कहा वह सब कम ही है। महाकवि कालीदास ने व्यावहारिक धरातल पर उतर कर जिस शाश्वत सत्य एवं मानव मूल्यों को प्रस्तुत किया है वे अन्यत्र दुर्लभ है। यद्यपि विदेशी कवि शेक्सपियर के साथ कालिदास का साम्य स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। संभव है कि शेक्सपियर एकमात्र नाट्यनैपुण्य अथवा चरित्र चित्रण में कालिदास से कुछ बढ़कर हो, किंतु भारतीय आदर्श के अनुसार काव्य की अंतरात्मा रस की जैसी पूर्ण अभिव्यक्ति कालिदास के काव्यों में हुई है वैसे अन्यत्र दुर्लभ है । चतुर्थ अंक की प्रशंसा करते हुए वेवर ने का कथन है–'The forth canto of Abhigyanshakuntalam is undoutely unique.'

इसीलिए कहा गया है–

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
तत्रापिचतुर्थोऽङ्कः यत्र याति शकुन्तला।।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान बीकानेर (राज.)
मो. 7014697104

Rajasthan Education Department

प्रकाश पर्व विशेष

समता के समर्थक, धर्म और नीति के दृष्टांत श्री गुरुनानक देव

❒ अमृतपाल सिंह

भारतीय इतिहास का जो कालखंड मध्यकाल के रूप में जाना जाता है, वह कालखंड आमजन में अशिक्षा व अज्ञान, शासकवर्ग के अत्याचारों, विदेशी आक्रांताओं द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रतीकों व संस्थाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने का काल था। सामाजिक जीवन में जाति-पाति के आधार पर भेदभाव और धार्मिक जीवन में कर्मकांडों एवं अंधविश्वास के बाहुल्य वाले इस नैराश्यपूर्ण काल में 15 अप्रेल 1469 को राय भोये की तलवंडी, जो वर्तमान में पाकिस्तान में है, में एक खत्री परिवार में पिता मेहता कल्याण दास (मेहता कालू) व माता तृप्ता के घर सामाजिक एवं धार्मिक सुधार के वाहक, सिक्खों के प्रथम गुरु श्री गुरुनानक देव जी का जन्म हुआ। गुरुनानक देव के जन्म के संबंध में भाई गुरदास जी लिखते हैं:-

सतिगुरु नानक प्रगटिआ
मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।

अवतारी पुरुष श्री गुरुनानक देव ने देश-देशांतर की यात्रा कर अपने उपदेशों के माध्यम से समतामूलक एवं नीतिमय जीवन जीने की प्रेरणा देकर मानवता को अज्ञान व अंधविश्वास के अंधकार से बाहर निकालने का कार्य किया।

जीवनवृत्त- गुरुनानक देव बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। पिता मेहता कालू जी के द्वारा इनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रयासों में इन्हें देवनागरी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्री गोपालदास, संस्कृत सीखने के लिए पं. श्री बृजलाल तथा फारसी सीखने के लिए मौलवी श्री कुतबदीन के पास भेजा गया परंतु तीनों ने ही नानक को अलौकिक प्रतिभा का धनी बताते हुए शिक्षण में असमर्थता जाहिर की। कुरीतियों और अंधविश्वास के खंडन करने की प्रवृत्ति का दृष्टांत नौ वर्ष की अवस्था में पिता मेहता कालू जी द्वारा कहे जाने पर जनेऊ धारण करवाने वाले पंडित हरदयाल जी के साथ के वार्तालाप से मिलता है। बालक नानक के द्वारा पंडित जी को कहा गया :-

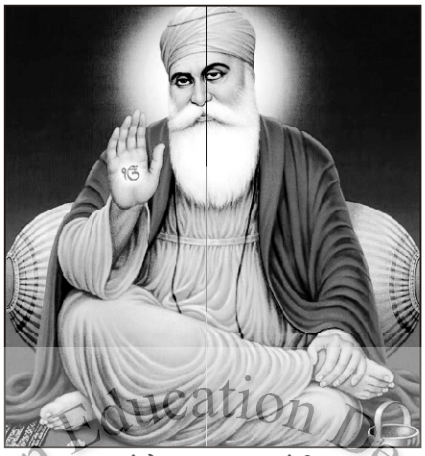

दया कपाह संतोख सूत जत गंढी सत वट।।
एह जनेऊ जीअ का हई ता पांडे घत।।

अर्थात ''दया रूपी कपास, संतोष रूपी सूत, सदाचार की गांठ और सत्य रूपी मरोड़ से निर्मित जनेऊ जीवात्मा के लिए है। पंडित जी यदि ऐसा जनेऊ आपके पास है तो मुझे पहना दो।''

मेहता कालू जी गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और नानक इनके इकलौते पुत्र थे। एक सामान्य विचारधारा रखने वाले पिता के समान ही इन्होंने नानक को सांसारिक कार्यों में लगाने के प्रयास प्रारंभ किए। इन प्रयासों की कड़ी में सर्वप्रथम नानक को भैंसे चराने के लिए भेजा। नानक भैंसों को चरने के लिए छोड़कर स्वयं अकाल-पुरुष (ईश्वर) के ध्यान में लीन हो जाते। तत्पश्चात पिता द्वारा इन्हें खेती करने का दायित्व दिया गया। यहाँ सांसारिक खेती के माध्यम से नानकदेव जी ने फरमाया :-

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु।।
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु।।
भाउ करम करि जमंसी से घर भागठ देखु।।

''अपने तन को खेत बनाकर, मन को हाली बनाकर तथा परिश्रम का पानी लगाकर किरसाणी (कृषि-कार्य) करनी चाहिए। इस खेती में ईश्वर के नाम का बीज बोने, संतोष का सुहागा लगाने, विनम्रता को धारण करने, प्रेमभाव से कर्म करने पर फसल पैदा होगी, जिससे घर सम्पन्न हो जाएगा।''

व्यापार में रुचि उत्पन्न करने के लिए पिता ने 20 रुपये देकर व्यापार करने के लिए भेजा, जिससे गुरुजी ने रसद खरीद कर भूखे साधुओं को भोजन करवाया और दीन-दुखियों की सेवा को सच्चा व्यापार कहा। कालांतर में यही परंपरा सिक्ख धर्म में लंगर की सेवा के रूप में संचालित हुई। कुछ समय बाद बहन नानकी के पति गुरुजी को अपने साथ सुलतानपुर ले गए और दौलतखां लोदी के यहाँ इन्हें मोदीखाने का प्रभारी बना दिया गया। गुरुनानक देव जी ने मोदीखाने के प्रभारी का कार्य पूर्ण लग्न, योग्यता व ईमानदारी से किया। कहा जाता है कि एक दिन प्रभु की याद में सौदा तौलते-तौलते गुरुजी 13 की गिनती तक पहुँचकर 13-13 करते हुए परमात्मा के ध्यान में लीन हो गए और शहर के गरीबों की झोलियाँ राशन से भर दी। कुछ ईर्ष्यालुओं ने इस बात की शिकायत नवाब से करते हुए कहा कि नानक मोदीखाना लुटा रहा है। नवाब द्वारा जाँच करवाए जाने पर गुरु साहिब का सात सौ रुपया नवाब से लेना निकला। इस पर नवाब शर्मिंदा हुआ और गुरुजी के चमत्कार से प्रभावित होकर उनका श्रद्धालु हो गया।

सुलतानपुर रहते हुए ही गुरुजी का विवाह श्री मूलचंद खत्री की सुपुत्री सुलक्खिनी के साथ हुआ। कालांतर में इनके श्रीचंद एवं लखमीदास दो पुत्र हुए। श्रीचंद आगे चलकर उदासी संप्रदाय के प्रवर्तक बने।

धर्म प्रचार- 1497 ई. में गुरुजी ने परिवार का दायित्व ईश्वर पर छोड़ते हुए सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को दूर करने के उद्देश्य से घरबार छोड़ दिया और विश्वव्यापी यात्राओं (उदासियों) पर निकल पड़े। यात्राएँ शुरू करने से पूर्व उन्होंने 'ना कोई हिंदू ना कोउ मुसलमान' का नारा दिया। गुरुनानक देव जी 20 वर्षों से अधिक के समय में विचरण करते हुए चार यात्राएँ की-

प्रथम उदासी (यात्रा)- पूर्व की तरफ की इस यात्रा का उद्देश्य हिंदू तीर्थों पर पहुँचकर धर्म का उपदेश देना था। 1497 ई. से 1510 ई.

Rajasthan Education Department

तक की इस यात्रा में आप हरिद्वार, बनारस, प्रयाग, अयोध्या, पटना, आसाम, ढाका, जगन्नाथपुरी आदि स्थानों पर गए। मरदाना और बाला इस यात्रा में आपके सहयोगी बने। ऐमनाबाद में भाई लालो को सत्य का उपदेश दिया, मलिक भागो का अहंकार दूर किया और सज्जन ठग को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। कुरूक्षेत्र एवं हरिद्वार जाकर पंडितों को सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया और गोरखनाथ एवं सिद्धों के साथ गोष्ठी की, आसाम में नूरशाह को जादू टोने करने से रोका और आत्म-उपदेश दिया। हिंदुओं के प्रमुख तीर्थ जगन्नाथपुरी में राग धनासरी में इलाही आरती की रचना की:-

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने
तारिका मंडल जनक मोती।।
धूप मलआनलो पवणु चवरो करे
सगल बनराइ फूलंत जोति।।
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती।।
अनहता शबद वाजंत भेरी।।

अर्थात ''सारा आकाश मानो थाल है और सूरज व चांद दीपक बने हैं। तारों का समूह मानो मोती हैं। मलय पर्वत की ओर से आने वाली हवा मानो धूप है, पवन चंवर कर रही है तथा समग्र वनस्पति ज्योति के लिए फूल अर्पित कर रही है। हे ईश्वर! आपकी कितनी सुंदर आरती हो रही है, जीवों के जन्म-मरण का नाश करने वाले हे ईश्वर! आपकी अद्भुत आरती हो रही है। सभी जीवों में व्याप्त जीवन अनहद शब्द के रूप में नगाड़े बजा रहा है।''

यहाँ से लौटकर गुरुजी ने करतारपुर साहब, जो वर्तमान में पाकिस्तान में है, बसाया।

द्वितीय उदासी (यात्रा) : 1510 ई. से 1516 ई. तक दक्षिण दिशा की ओर की यात्रा में गुरुनानक देव जी मथुरा, उज्जैन, द्वारका, बीदर, रामेश्वरम् व श्रीलंका तक गए। इस यात्रा के दौरान आपने आगरा में सत्य-मार्ग का प्रचार किया। रूहेलियों को स्नान खरीद-फ़रोख्त परंपरा को बंद करने और सिद्धों तथा योगियों को सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश देकर करतारपुर लौटे।

तृतीय उदासी (यात्रा) : 1516 ई. से 1518 ई. तक उत्तर दिशा की ओर की यात्रा में आपने लाहौर, श्रीनगर, कश्मीर, तिब्बत, लद्दाख, सिक्किम व चीन आदि स्थानों का भ्रमण किया। कश्मीर में ब्रह्मदास को आत्मज्ञान देकर गुरुजी ने कैलाश पर्वत पर भर्तृनाथ, गोपीनाथ आदि के साथ परमार्थ पर गोष्ठी की। सिद्धों के मुखिया भंगरनाथ ने गुरुजी के ज्ञान और चमत्कारों को देखकर पूछा-

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला।।

तो गुरुजी ने उत्तर दिया-

शब्द गुरु, सुरति धुनि चेला।।

अर्थात मेरा गुरु 'शब्द' है और मेरी सुरति उसकी शिष्या है।

चतुर्थ उदासी (यात्रा) : 1518 ई. से 1522 ई. तक पश्चिम की ओर की उदासी में आपने प्रमुख मुस्लिम स्थानों का भ्रमण किया। मुल्तान, पेशावर, काबुल, कंधार, तेहरान, बगदाद व मक्का-मदीना की इस यात्रा में आपने मौलानों को समझाया कि अल्लाह केवल मक्के में नहीं है बल्कि सर्वव्यापी है। सच्चे अमल के बिना हिंदू और मुसलमान दोनों को ही प्रभु के दरबार में ख्वार (अपमानित) होना पड़ेगा।

मानव कल्याण के लिए की गई इन यात्राओं में गुरुजी को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा, परंतु आपने अपनी कुशलता, सद्व्यवहार, नम्रता व ईश्वर-भक्ति के बल पर न केवल संकटों से पार पाई, अपितु विरोधियों को अपना शिष्य बनाया।

इन उदासियों को पूर्ण करने के बाद गुरुजी करतारपुर में रहने लगे और खेतीबाड़ी करते हुए मानव-कल्याण व समाज-सुधार का कार्य जारी रखा।

आध्यात्मिक उपदेश- गुरुनानक देव जी ने हमें गृहस्थ जीवन में रहते हुए ईश्वर-प्राप्ति के लिए एवं शुद्ध जीवन जीने के लिए सीधा व सरल मार्ग बताते हुए तीन नियमों का पालन करने का उपदेश दिया :-

1. नाम जपो (प्रभु को मन में रखते हुए प्रभुनाम का सुमिरन करो): ईश्वर के निराकार स्वरूप का समर्थन करते हुए आपने एक मूलमंत्र दिया :

इक ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैर
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

सर्व शक्तिमान प्रभु एक है जो निर्गुण स्वरूप में है। वह सत्य का स्वरूप है, संसार की रचना करने वाला है, निर्भय है, वैर से रहित है। उसका अस्तित्व काल से परे है अर्थात् वह अविनाशी है, जन्म-मरण से रहित है, अपने आप ही उसका जन्म हुआ है तथा उसका अनुभव गुरु की कृपा से ही हो सकता है।

आपने उपदेश दिया कि अंत:करण की शुद्धता के लिए नाम जपना आवश्यक है :

मूत पलीती कपड़ु होई। दे साबूनु लईअै उह धोई।।
भरीअै मत पापा कै संगि। उहु धौपै नावै कै रंगि।।

मनुष्य को ईश्वर की इच्छा/आदेश को सर्वोपरि मानते हुए सत्मार्ग का अनुसरण करना चाहिए :

हुकमै अंदरि सभु कौ बाहरि हुकम न कोई।।

मनुष्य किस तरह सत्य का स्वरूप बने और किस तरह उसके अंदर से झूठ व अज्ञान का नाश हो, के बारे में गुरुनानक देव फरमाते हैं :

किव सचिआरा होइअै किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलना नानक लिखिआ नालि।।

2. किरत करो (मेहनत व ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए कमाए गए धन से जीवन यापन करो)

गुरुनानक देव जी का उपदेश है कि मनुष्य को कर्त्तव्य करते हुए बेईमानी से किसी का हक नहीं छीनना चाहिए। पराया हक हिंदू के लिए गाय तथा मुसलमान के लिए सूअर खाने के बराबर है। किसी जीव को मारकर खाना भी उस जीव के जीने के हक को छीनना ही है।

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाय।।
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाय।।

3. वंड छको (जरूरतमंदों को दान पुण्य करते हुए मिल-बांट कर उपभोग करना)

घालि खाइ किछु हथहु देइ।।
नानक राहु पछाणहि सेइ।।

अर्थात् जिंदगी का असली रास्ता उसी को समझ आया है जो मेहनत कर कमाई करता है और बांटकर खाता है। इस प्रकार गुरुनानक देव जी न केवल परिश्रम करने की शिक्षा देते हैं बल्कि साथ ही वे अपनी कमाई में से दूसरों की सहायता करने का भी उपदेश देते हैं।

स्त्री जाति का सम्मान – मध्यकाल के दौर में स्त्री जाति को पुरुष प्रधान समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं था। गुरुजी स्त्री जाति को उत्तम दर्जा देते हुए कहते हैं :

भंडि जम्मीअै भंडि निम्मीअै भंडि मंगणु विआहु।।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

भंडहु होवै दोस्ती भंडहु चलै राहु।।
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु।।
सो किउ मंदा आखिऐ जितु जम्महि राजान।।

अर्थात औरत से ही पुरुष का जन्म होता है, औरत ही उसका पालन-पोषण करती है, औरत से ही उसका रिश्ता और विवाह होता है, औरत से ही पुरुष जीवनभर की दोस्ती करता है, उसी के साथ से वंश चलता है, एक पत्नी की मृत्यु के बाद पुरुष दूसरी औरत को ढूँढ़ता है, औरत से ही उसका भावनात्मक संबंध बनता है। जो संसार को जन्म देने वाली है जिसकी कोख से राजादि महान पुरुष जन्म लेते हैं, उसकी निंदा क्यों की जाए अर्थात उसका स्थान दोयम दर्जे का क्यों हो? 1539 में अपने सेवक भाई लहना को गुरु-गद्दी सौंपकर गुरुनानक देव जी ज्योति-जोत समा गए। लहना जी ही सिक्खों के दूसरे गुरु श्रीगुरु अंगद देव कहलाए।

रचनाएँ-श्री गुरुनानक देव जी पंजाबी, सिंधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, संस्कृत और फारसी के ज्ञाता थे उन्होंने 19 रागों (सिरी, माझ, गऊड़ी, आसा, गूजरी, वडहंस, सोरठि, धनासरी, तिलंग, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, तुखारी, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार और प्रभाती) में 974 शबदों (श्लोक) की रचना की। जपुजी साहिब, सिद्ध गोसटि, अलाहणियाँ, आसा-दी-वार, सोहिला, दखनी ओंकार, बारहमाह आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं जो बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ी और सुनी जाती हैं। इनकी रचनाओं में निर्गुण उपासना, अहं शून्यता, संसार की अनित्यता का स्वर मिलता है :

इस दम दा मैंनू कीबे भरोसा,
आया आया, न आया न आया।।

श्री गुरुनानक देव जी ने किसी एक जाति-विशेष के धर्मगुरु के रूप में पहचान नहीं बनाई, वरन् सभी धर्मों के लोग उन्हें समान आदर व श्रद्धा के साथ मानते हैं। गुरु नानक, नानक-पीर, नानक-पातशाह, नानक-लामा के रूप में उनकी प्रसिद्धि इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। गुरुनानक एक साथ एक भक्त कवि, दार्शनिक, धर्म-गुरु एवं समाज-सुधारक थे। उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है।

अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-द्वितीय
समग्र शिक्षा, ब्लॉक-सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (राज.)
मो: 9928303876

राष्ट्रीय एकता दिवस विशेष

एकता की द्योतक इंदिरा गाँधी

❐ हिमांशु सोगानी

राष्ट्रीय एकता दिवस भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के जन्म दिवस 19 नवम्बर को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। एक महिला के रूप में देश की बागडोर संभालने पर इंदिरा गाँधी ने राष्ट्रीय एकीकरण पर जोर दिया। न केवल देश का सांप्रदायिक रूप से एकीकरण का कार्य हाथ में लिया बल्कि देश के बैंकिंग, कोयला जैसे महत्त्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर देश के गरीब, मजदूर व मध्यम वर्गों को अपना हक दिलाने का मार्ग प्रशस्त किया।

जीवन परिचय- इंदिरा गाँधी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री थी। उनका जन्म 19 नवंबर, 1917 में इलाहाबाद में हुआ था। वह भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु की बेटी थी। पिता पं. जवाहरलाल नेहरु देश की आज़ादी के आंदोलन में व्यस्त थे और माता कमला नेहरु उस समय बीमार रहती थी। घर का वातावरण भी पढ़ाई के अनुकूल नहीं था। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का रात-दिन आनंद भवन में आना जाना लगा रहता था। तथापि पंडित नेहरु ने पुत्री की शिक्षा के लिए घर पर ही शिक्षकों का इंतज़ाम कर दिया था। बालिका इंदु को आनंद भवन में ही शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता था। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा विश्व भारती विश्वविद्यालय और ऑक्सफोर्ड से प्राप्त की।

पंडित जवाहरलाल नेहरु शिक्षा का महत्त्व काफ़ी अच्छी तरह समझते थे। यही कारण है कि उन्होंने पुत्री इंदिरा की प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध घर पर ही कर दिया था। लेकिन अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अन्य विषयों में बालिका इंदिरा कोई विशेष दक्षता नहीं प्राप्त कर सकी। तब इंदिरा को शांति निकेतन स्कूल में पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ उसके बाद उन्होंने बैडमिंटन स्कूल तथा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में अध्ययन किया।

पंडित नेहरु अंग्रेज़ी भाषा के इतने अच्छे ज्ञाता थे कि लॉर्ड माउंटबेटन की अंग्रेज़ी भी उनके सामने फीकी लगती थी। इस प्रकार पिता द्वारा अंग्रेज़ी में लिखे गए पत्रों के कारण पुत्री इंदिरा की अंग्रेज़ी भाषा काफ़ी समृद्ध हो गई थी। इंदिरा का प्राथमिक बचपन एकाकी था। यही कारण है कि इंदिरा ने बचपन में अंग्रेज़ी साहित्य की उत्कृष्ट पुस्तकों का भी अध्ययन किया उन पुस्तकों से उन्हें जीवन की गहराई और यथार्थ का बोध हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण पंडित नेहरु को अक़सर अंग्रेज़ों द्वारा जेल की सज़ाएँ प्रदान की जाती थी। तब वह अपनी पुत्री इंदिरा को काफ़ी लंबे-लंबे पत्र लिखते थे। उन पत्रों का महत्त्व इस बात से भी समझा जा सकता है कि बाद में इन्हें 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पुस्तक के रूप में हिन्दी तथा अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रकाशित किया गया।

नेहरु परिवार स्वाधीनता संग्राम में जुटा हुआ था, इस प्रकार इंदु की पढ़ाई उस प्रकार आरंभ नहीं हो सकी जिस प्रकार एक साधारण परिवार में होती है शिक्षा का प्रबंध घर पर ही किया गया था। 1931 में इनके दादा पंडित मोतीलाल नेहरु की मृत्यु हो जाने के बाद यह आवश्यक समझा गया कि इंदिरा को किसी विद्यालय में दाखिल कराना चाहिए। इस समय इंदु की उम्र 14 वर्ष हो चुकी थी। अब तक इंदु को घर पर ही अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ था

Rajshri Education Department

और पंडित नेहरु उससे संतुष्ट नहीं थे। वह यह भी समझ रहे थे कि इलाहाबाद में रहते हुए उनकी पुत्री की पढ़ाई हो पाना संभव नहीं है। अतः उन्होंने इंदु को बोर्डिंग स्कूल में डालने का फैसला कर लिया।

इनके बाद इंदिरा को पूना के 'पीपुल्स ऑन स्कूल' में दाखिला दिलवा दिया गया। उन्हें कक्षा सात में प्रवेश मिला था। इनकी सहपाठियों की उम्र इनसे काफ़ी कम थी। अतः कक्षा की छात्राओं को लगता था कि एक बड़ी उम्र की छात्रा उनके बीच है। लेकिन उन छात्राओं को यह ज्ञात नहीं था कि उस बालिका ने जीवन की जिस पाठशाला में अब तक अध्ययन किया है, उसी के कारण उसकी विद्यालयी शिक्षा प्रभावित हुई है। इंदु ने शीघ्र ही अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया और स्कूल में पढ़ाए जा रहे सभी विषयों को आत्मसात करने का प्रयास भी किया। इंदिरा को घर में रहते हुए भी पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें पढ़ने का शौक़ था जो यहाँ भी जारी रहा इसका एक फ़ायदा इंदु को यह मिला कि उसका सामान्य ज्ञान पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रहा। उसे देश दुनिया का काफ़ी ज्ञान था और वह अभिव्यक्ति की कला में भी निपुण हो गई थी। विद्यालय द्वारा आयोजित होने वाली वाद विवाद प्रतियोगिता में उसका कोई सानी नहीं था।

1934 में इंदिरा ने 10वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली अब आगे की पढ़ाई करने के लिए उसे ऐसे विद्यालय में जाना पड़ सकता था जहाँ भारतीय संस्कृति से संबंधित पढ़ाई नहीं होती थी और सभी कॉलेज अंग्रेज़ों द्वारा संचालित होते थे। काफ़ी सोच-विचार के बाद पंडित नेहरु ने निश्चय किया कि वह अपनी बेटी इंदिरा को शांति निकेतन में पढ़ने के लिए भेजेंगे। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर उन दिनों कोलकाता से कुछ दूरी पर प्राकृतिक वातावरण में 'शांति निकेतन' नामक एक शिक्षण संस्थान चला रहे थे। शांति निकेतन का संचालन गुरुदेव एवं प्राचीन आश्रम व्यवस्था के अनुकूल था। वहाँ का रहन-सहन एवं सामान्य जीवन सादगी से परिपूर्ण था। इंदिरा का स्वास्थ्य भी इन दिनों बहुत अच्छा नहीं था। अतः पंडित जवाहरलाल नेहरु ने अपनी बेटी का दाखिला शांति निकेतन में करवा दिया। यहाँ इंदु ने स्वयं को पूर्णतया आश्रम की व्यवस्था के अनुसार ढाल लिया।

इंदिरा प्रतिभाशाली थी और उनका सहज ज्ञान भी अन्य बच्चों से काफ़ी बेहतर था। इस कारण वह शीघ्र ही शांति निकेतन में सभी की प्रिय बन गई। शिक्षार्थी भी उनका सम्मान करने लगे। शांति निकेतन में रहते हुए इंदिरा को खादी की साड़ी पहननी पड़ती थी और वर्जित स्थलों पर नंगे पैर ही जाना होता था। शांति निकेतन का अनुशासन काफ़ी कड़ा था। सामान्य अमीरी में पले बच्चों के लिए वहाँ टिक पाना कठिन था। लेकिन इंदिरा जी ने सख्त अनुशासन तथा अन्य नियमों का पूर्णतया पालन किया। यहाँ आने के बाद उनके स्वास्थ्य में भी अपेक्षित सुधार के संकेत दिखने लगे। पंडित जवाहरलाल नेहरु की बेटी इंदिरा जी को गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगौर भली-भाँति जानते थे। इसी कारण इंदिरा पर उनको विशेष कृपा दृष्टि रहती थी। गुरुदेव ने शीघ्र ही जान लिया कि इंदिरा नामक यह किशोरी बेहद प्रतिभावान है। यही कारण था कि वह गुरुदेव के प्रिय विद्यार्थियों में से एक बन गई। इंदिरा में अध्ययन से इतर लोक कला और भारतीय संस्कृति में भी रुचि जाग्रत की गई। इंदु ने शीघ्र ही मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य में दक्षता हासिल कर ली। उसका नृत्य काफ़ी मनमोहक होता था।

शांति निकेतन की एक अतिरिक्त विशेषता यह थी कि वहाँ के सभी अध्यापक अपने विषयों के धुरंधर ज्ञाता थे। यह उनकी विद्वत्ता का ही परिणाम था कि इंदिरा ने ज्ञानार्जन करने में अच्छी गति दिखाई। लेकिन शांति निकेतन में रहते हुए इंदिरा अपनी पढ़ाई पूरी न कर सकी जबकि वह वहाँ के वातावरण से काफ़ी प्रसन्न थी। इंसान का भाग्य भी काफ़ी प्रबल होता है और नियति को स्वीकार करना ही पड़ता है।

पंडित नेहरु अपनी प्रिय बेटी की शिक्षा को लेकर बहुत चिंतित थे। काफ़ी सोचने के पश्चात् उन्होंने इंदिरा का दाखिला ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी (इंग्लैंड) में करवा दिया। इंदिरा ने अपना ध्यान पढ़ाई की ओर लगा दिया। लेकिन इंग्लैंड में रहते हुए भी वह वहाँ रह रहे भारतीयों के संपर्क में थी। उन दिनों इंग्लैंड में 'इंडिया लीग' नामक एक संस्था थी जो भारत की आज़ादी के लिए निरंतर प्रयासरत थी। इंदिरा जी में देशसेवा का प्रस्फुटन बरसों पूर्व ही हो चुका था, इस कारण वह भी इंडिया लीग की सदस्या बन गई और उनके कार्यकलापों में अपना योगदान देने लगी। वहाँ इंदिरा जी का परिचय पंडित नेहरु के मित्र कृष्ण मेनन (जो बाद में भारत के रक्षा मंत्री भी बने) के साथ हुआ। कृष्ण मेनन एक विद्वान् व्यक्ति थे। उनका संबंध विश्व के अनेक ख्यातनाम व्यक्तियों से था। श्री मेनन के सान्निध्य से इंदिरा जी को यह लाभ हुआ कि वह विश्व के महान् राजनीतिज्ञों और उनकी विचारधाराओं को समझने में सक्षम हो गई।

उनका विवाह 1942 में फ़िरोज़ गाँधी और उन्हें 1955 में कांग्रेस की कार्यकारी समिति का सदस्य बनने का अवसर प्राप्त हुआ। इंदिरा गाँधी एक महान् राजनीतिक नेता थी। वह लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल की सूचना मंत्री के रूप में सदस्य भी बनी। सन 1966 में ताशकंद, रूस में शास्त्री जी की अचानक मौत के बाद वह भारत की प्रधानमंत्री के रूप में चुनी गयी।

इंदिरा गाँधी ने भारतीय लोकतांत्रिक ढाँचे और परंपरा को मजबूत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ 1971 के युद्ध को संभाला और जीत भी हासिल की। उन्होंने घोषित उद्देश्यों को पाने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा में कड़ी मेहनत की थी। उन्होंने लोकतांत्रिक समाजवाद और कमज़ोर वर्गों के लिए बहुत काम किया। उनके नेतृत्व में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो के साथ शिमला समझौते पर हस्ताक्षर, भारत-सोवियत शांति, सहयोग और मैत्री संधि की गई थी। उनके नेतृत्व में पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण हुआ। उनके कुशल मार्गदर्शन के नीचे नई दिल्ली में पहले एशियाई खेलों का आयोजन, पहले अंतरिक्ष यात्री स्काड्रन लीडर राकेश शर्मा का अंतरिक्ष की यात्रा करना और अंतरिक्ष अनुसंधान और शांतिपूर्ण परमाणु विकास हुआ।

इंदिरा गाँधी की संगीत, साहित्य और ललित कला में बहुत ज्यादा दिलचस्पी थी। उन्हें 1971 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। वह आधुनिक भारत की एक आकर्षक नेता साबित हुई। जिसने वैश्विक मामलों और गुटनिरपेक्ष आंदोलन पर एक छाप छोड़ दी। उनका 31 अक्टूबर 1984 को निधन हुआ।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टोंक
मो: 9983724227

Rajshri Education Department

रपट

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने ली विभागीय अधिकारियों की बैठक

❐ सुनीता चावला

जब परिवार का मुखिया परिवार के सदस्यों की चिंता और सार संभाल करे तो यकीनन वो परिवार सशक्त समृद्ध एवं विकास की राह पर अग्रसर होता है। ऐसे ही है हमारे शिक्षा विभाग के मुखिया आदरणीय श्री पवन कुमार गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव स्कूल शिक्षा। हर माह विभागीय योजनाओं एवं गतिविधियों की समीक्षा करते हैं। उनके क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं और बाधाओं का समाधान कर संबलन प्रदान करते हैं। उनका मानना है कि राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थी हित में जो भी योजनाएं, कार्यक्रम आरम्भ किये गये हैं उन सभी का क्रियान्वयन शिक्षकों के माध्यम से किया जाना है। यदि विभाग का प्रत्येक कार्मिक/अधिकारी अपने हिस्से के कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वाह त्वरित गति से करे तो प्रत्येक विद्यार्थी समय पर लाभान्वित होगा। इससे विद्यार्थी प्रसन्न एवं अभिभावक संतुष्ट रहेंगे। यह स्थिति शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक रहेगी।

इसी क्रम में अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 20.10.2022 को समस्त मंडल संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक एवं प्रारंभिक मुख्यालय, अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक की एक दिवसीय बैठक का आयोजन स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर मैनेजमेंट (SIAM) दुर्गापुरा, जयपुर में हुआ। इस बैठक में श्री गौरव अग्रवाल निदेशक माध्यमिक शिक्षा, श्री मोहनलाल यादव, राज्य परियोजना निदेशक, निदेशालय माध्यमिक एवं प्रारंभिक के साथ-साथ राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के अधिकारी वृंद भी उपस्थित रहे।

इस बैठक में राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम, बजट घोषणाएं, छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं, विद्या संबल योजना, नवक्रमोन्नत/नवीन विद्यालय, महात्मा गाँधी स्कूल एवं बाल वाटिकाओं में रिक्त पदों की स्थिति, पैंडिग

न्यायालय प्रकरण, RTE के तहत प्रवेशित छात्रों व भुगतान, जनाधार प्रमाणीकरण एवं अन्य विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन एवं प्रगति पर जिलेवार विस्तृत चर्चा की।

योजनाओं के संचालन में आ रही विभिन्न कठिनाई के निराकरण हेतु मार्गदर्शन अतिरिक्त मुख्य सचिव, निदेशक महोदय एवं राज्य परियोजना समन्वयक द्वारा दिये गये। उनका मानना है कि आज का विद्यार्थी देश का भविष्य है। उसके समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि सरकार की प्रत्येक योजना का लाभ उसे समय पर मिले। शिक्षकों के ACP प्रकरण एवं पेंशन प्रकरणों का निस्तारण समय पर हो ताकि वे अनावश्यक परेशान नहीं हो।

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय द्वारा विशेष रूप से अग्रांकित निर्देश प्रदान किए गए-

- RKSMBK आकलन प्रथम 3 से 5 नवम्बर 2022 तक आयोज्य है। संबंधित समस्त अधिकारी विभागीय निर्देशों के अनुरूप इसका आयोजन गम्भीरता से करवाएं।
- न्यायिक प्रकरणों में शत प्रतिशत समय पर जवाब प्रस्तुत किए जाएं। जवाब प्रस्तुति हेतु तत्काल संबंधित अधिकारी राजकीय अभिभाषक से संपर्क कर तथ्यात्मक प्रतिवेदन तैयार करें। निर्णीत प्रकरणों में शासन स्तर से दिशा निर्देश प्राप्त कर पालना सुनिश्चित की जाए। प्रकरणों की प्रतिदिन मॉनिटरिंग की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अपने जिले में अधीनस्थ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के साथ प्रतिमाह एक बैठक का आयोजन करेंगे। इस संबंध में एजेण्डा एवं आवश्यक निर्देश निदेशालय द्वारा जारी किए जाएंगें।
- विद्यालय विकास कोष में राशि उपलब्ध होने के बावजूद भी विद्यालयों में सुविधाओं का अभाव होना खेदजनक है। SDMC के विकास कोष का अधिकतम उपयोग विद्यालय एवं विद्यार्थियों के हित में संस्थाप्रधानों द्वारा किया जाए।
- विद्यालय स्तर से छात्रवृत्ति प्रस्ताव 15 नवम्बर, 2022 तक तैयार कर जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय को एवं इनके द्वारा 30 नवम्बर, 2022 तक शिक्षा निदेशालय को अग्रेषित किया जाए। संस्थाप्रधान एवं जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक मुख्यालय यह सुनिश्चित करे कि प्रत्येक पात्र विद्यार्थी को छात्रवृत्ति का लाभ मिले।
- राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र विद्यार्थी को मिल सके इसके लिए जनाधार प्रमाणीकरण को विशेष अभियान चलाकर 15 नवम्बर तक प्रमाणीकरण कार्य पूर्ण करवाया जाए।
- समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय, गैर सरकारी विद्यालयों से प्राप्त समस्त क्लेम बिलों के पास आदेश 31 अक्टूबर 2022 तक जारी करे।

बैठक के अन्त में समस्त अधिकारियों द्वारा अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय को आश्वस्त किया गया कि राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप वे प्रत्येक विभागीय योजनाओं का क्रियान्वयन निर्धारित समय पर करेंगे।

वरिष्ठ संपादक-शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2022

1. शिक्षा विभाग के अधिकारियों/कार्मिकों/शिक्षकों के अन्य विभागों/संस्थाओं/स्वायत्तशासी संस्थाओं/ निगमों/बोर्डों/उपक्रमों/परियोजनाओं में प्रतिनियुक्ति के संबंध में।
2. राजश्री योजना के अन्तर्गत शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से बालिकाओं को भुगतान करने के संबंध में।
3. राजस्थान के विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों पर 'विद्या संबल योजना' के अन्तर्गत पात्र अभ्यर्थियों को 'गेस्ट फैकल्टी' के रूप में लगाने के संबंध में।
4. 'विद्या संबल योजना' के तहत गेस्ट फैकल्टी शिक्षकों को रिक्त पदों पर लगाए जाने के संबंध में दिशा-निर्देश।
5. सेवानिवृत प्रकरणों, उपार्जित अवकाश का नकदीकरण एवं विभिन्न खातो में जमा राशि के संबंध में लेखा कार्मिको की भूमिका के संबंध में दिशा-निर्देश।
6. महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/ राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय हेतु चयनित कार्मिकों व प्रवेशित विद्यार्थियों के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।
7. नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में, पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में।
8. नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में, पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में।
9. शिविरा पंचांग सत्र 2022-23 की अर्द्धवार्षिक परीक्षा तिथियों में संशोधन हेतु।

1. शिक्षा विभाग के अधिकारियों/कार्मिकों/शिक्षकों के अन्य विभागों/संस्थाओं/स्वायत्तशासी संस्थाओं/ निगमों/बोर्डों/उपक्रमों/परियोजनाओं में प्रतिनियुक्ति के संबंध में।

● राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-2) विभाग ● क्रमांकः प. 19 (12) शिक्षा-2/2016 जयपुर 07.10.2022 ● विषय : शिक्षा विभाग के अधिकारियों/कार्मिकों/शिक्षकों के अन्य विभागों/संस्थाओं/ स्वायत्तशासी संस्थाओं/निगमों/बोर्डों/उपक्रमों/परियोजनाओं में प्रतिनियुक्ति के संबंध में। ● परिपत्र।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शिक्षा विभाग के अधिकारी/शिक्षक/ कार्मिक शिक्षा विभाग के अलावा अन्य राजकीय विभागों/संस्थाओं/ स्वायत्तशासी संस्थाओं/निगमों/बोर्डों/उपक्रमों/परियोजनाओं आदि में समय-समय पर प्रतिनियुक्ति पर स्वयं की इच्छा से अथवा उन विभागों की माँग पर जाते हैं। अध्यापक अपने नियुक्ति वाले जिले से अन्य जिलों में तथा वरिष्ठ अध्यापक अपने संभाग से अन्य संभागों में भी प्रतिनियुक्ति पर जाते हैं। यह भी सर्व विदित है कि शिक्षा विभाग में भी सभी संवर्गों के कतिपय पद हमेशा खाली बने रहते हैं। उपरोक्त समग्र परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा विभाग के शिक्षकों/कार्मिकों/अधिकारियों के शिक्षा विभाग के बाहर अन्य विभागों/संस्थाओं/स्वायत्तशासी संस्थाओं/ निगमों/बोर्डों/उपक्रमों/परियोजनाओं आदि में प्रतिनियुक्ति पर भेजे जाने के संबंध में निम्नानुसार नीति निर्धारित की जाती है-

1. अध्यापक लेवल-प्रथम/द्वितीय की प्रतिनियुक्ति उसी जिले में वरिष्ठ अध्यापक की उसी संभाग में इसी प्रकार कनिष्ठ सहायक, लाइब्रेरियन, प्रयोगशाला सहायक आदि की प्रतिनियुक्ति उनके जिले में ही हो सकेगी।
2. जो संवर्ग राज्य स्तर के हैं, उनकी प्रतिनियुक्ति पूरे राज्य में कहीं भी की जा सकेगी।
3. सभी स्तर के शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति सामान्यतया शैक्षणिक कार्यों के लिए ही की जा सकेगी। शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति कार्यालयों आदि व गैर शैक्षणिक कार्यों के लिए नहीं की जा सकेगी।
4. अध्यापक/वरिष्ठ अध्यापक/मंत्रालयिक सेवा के कार्मिकों/ पीटीआई/लाइब्रेरियन आदि किसी की भी प्रतिबंधित जिलों से गैर प्रतिबंधित जिलों में प्रतिनियुक्ति नहीं की जा सकेगी।
5. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.1(124)ग्रा.वि./अनु.8/नीति आयोग/2017 दिनांक 11.10.2019 द्वारा नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा कुल पाँच जिले आशान्वित (बारां, करौली, जैसलमेर, धौलपुर एवं सिरोही) निर्धारित किए गए हैं, के क्रम में उन जिलों से अन्य जिलों में किसी भी अधिकारी/शिक्षक/कार्मिक की प्रतिनियुक्ति नहीं की जा सकेगी।
6. परिवीक्षाकाल के दौरान प्रतिनियुक्ति पर पूर्णतः प्रतिबंध रहेगा।
7. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्र में प्रतिनियुक्ति नहीं की जा सकेगी परन्तु शहरी क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्र में तथा ग्रामीण से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिनियुक्ति की जा सकेगी।
8. जो अधिकारी/शिक्षक/कार्मिक शिक्षा विभाग के बाहर अन्य विभागों/संस्थाओं/स्वायत्तशासी संस्थाओं/निगमों/बोर्डों/ उपक्रमों/परियोजनाओं आदि में अपने अब तक के सेवा काल में कुल 5 वर्ष या इससे अधिक अवधि के लिए प्रतिनियुक्ति पर रह चुके है, उन्हें पुनः प्रतिनियुक्ति पर नहीं भेजा जाएगा।
9. शिक्षा विभाग के प्रत्येक स्तर के अधिकारी/शिक्षक/ कार्मिक को शिक्षा विभाग के बाहर अन्य विभागों/संस्थाओं/स्वायत्तशासी संस्थाओं/निगमों/बोर्डों/उपक्रमों/परियोजनाओं आदि में प्रतिनियुक्ति हेतु आवेदन करने से पहले सक्षम अधिकारी से अनापत्ति प्रमाण पत्र/ अनुमति प्राप्त करनी होगी। यदि बिना सक्षम अधिकारी की स्वीकृति के आवेदन करता है तो उन्हें अन्य विभाग द्वारा चयन किए जाने के बावजूद भी प्रतिनियुक्ति पर नहीं भेजा जाएगा।
10. प्रधानाचार्य, व्याख्याता, वरिष्ठ अध्यापक व अध्यापक समकक्ष पद के कार्मिकों का विगत 5 वर्षों में से किसी एक वर्ष में भी परीक्षा परिणाम न्यून रहा हो तो प्रतिनियुक्त नहीं का जा सकेगी।
11. शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारी/शिक्षक/कार्मिकों पर राजस्थान सेवा नियम 1951 के नियम 144 'क' के परन्तुक 4 में बिन्दु संख्या 2 प्रावधान लागू होंगे। प्रथमतः प्रतिनियुक्ति अवधि 1 वर्ष के

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

लिए होगी, किन्तु प्रशासनिक विभाग के द्वारा लोकहित में प्रतिनियुक्ति अवधि को तीन वर्ष तक बढ़ाया जा सकेगा। इसी में बिन्दु संख्या 3 के अंतर्गत अपवाद स्वरूप परिस्थिति में तीन वर्ष से अधिक की प्रतिनियुक्ति अवधि कार्मिक विभाग एवं वित्त विभाग की पूर्व सहमति से बढ़ायी जा सकेगी, जिसके लिए प्रशासनिक विभाग द्वारा प्रतिनियुक्ति अवधि समाप्ति के कम से कम दो माह पूर्व पूर्ण औचित्य सहित प्रस्ताव भिजवाया जाएगा। अतः उपर्युक्त नियमों के परिप्रेक्ष्य में एक निरन्तर समयावधि में प्रतिनियुक्ति अवधि अभिवृद्धि सहित कुल 04 वर्ष की ही अधिकतम होनी चाहिए।

उक्त निर्देशों की सभी संबंधितों द्वारा कड़ाई से पालना की जाए। साथ ही शिक्षा विभाग के अलावा अन्य सभी विभागों के अधिकारीगणों से आग्रह है कि शिक्षा विभाग के कार्मिकों/शिक्षकों/अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति हेतु आग्रह करने से पूर्व उपर्युक्त बिन्दुओं का आवश्यक रूप से ध्यान रखा जाए। अति आवश्यक होने पर गुणावगुण के आधार पर Case to case basis पर राज्य सरकार द्वारा उक्त शर्तों में शिथिलन दिया जा सकेगा।

● **(पवन कुमार गोयल)** अतिरिक्त मुख्य सचिव

2. राजश्री योजना के अन्तर्गत शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से बालिकाओं को भुगतान करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा एवं परांज (प्रा.शि.) राजस्थान बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/छात्रवृत्ति/3702/2021-22 दिनांकः 04.10.2022 ● विषय : राजश्री योजना के अन्तर्गत शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से बालिकाओं को भुगतान करने के संबंध में। ●परिपत्र।

मुख्यमंत्री राजश्री योजना में तृतीय एवं पश्चातवर्ती किश्तों के लिए वित्तीय वर्ष 2021-22 से शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से मात्र बालिकाओं को भुगतान इस विभाग द्वारा किया जा रहा है। योजना से संबंधित मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) इस कार्यालय द्वारा भिजवाई हुई है। जिसका संक्षिप्त रूप से विवरण इस प्रकार से है:-

1. योजना में पात्रता:-

i. ऐसी बालिकाएँ जिनका जन्म 1 जून 2016 अथवा उसके पश्चात होगा।

ii. समस्त परिलाभ 'राजस्थान जन आधार कार्ड' के माध्यम से ही देय होगा।

iii. तीसरी एवं पश्चावर्ती किश्तों का लाभ एक परिवार में अधिकतम दो जीवित संतान तक ही सीमित होगा अर्थात प्रथम दो किश्तों के अतिरिक्त अन्य किश्तों का लाभ उन्हीं बालिकाओं को देय होगा जिनके परिवार में जीवित संतानों की संख्या दो से अधिक नहीं होगी। इस हेतु निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार माता-पिता को स्वघोषणा प्रस्तुत/अपलोड करना अनिवार्य होगा।

iv. यदि माता-पिता की ऐसी बालिका की मृत्यु हो जाती है जिसे एक या दो किश्तों का लाभ दिया जा चुका है तो ऐसे माता-पिता की कुल जीवित संतानों में से मृत बालिका की संख्या कम हो जाएगी तथा ऐसे माता-पिता के यदि एक बालिका और जन्म लेती है तो वह लाभ की पात्र होगी। तीसरी एवं पश्चातवर्ती किश्तों का लाभ अधिकतम दो जीवित संतान तक ही सीमित होगा।

v. तृतीय किश्त (बालिका के राजकीय विद्यालय में कक्षा प्रथम में प्रवेश लेने पर) परिलाभ तभी देय होगा जबकि उसने प्रथम एवं द्वितीय किश्तों का परिलाभ प्राप्त कर लिया हो।

vi. ऐसी बालिकाएँ लाभ की पात्र होगी जो राज्य सरकार द्वारा संचालित संस्थाओं में प्रत्येक चरण में (कक्षा 1, 6, 10 तथा 12) शिक्षारत है/रही है।

2. प्रक्रिया:-

i. तीसरी किश्त अर्थात बालिका के प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने पर देय राशि प्राप्त करने हेतु बालिका की माता, माता न होने पर पिता या अभिभावक के द्वारा निर्धारित प्रारूप में विद्यालय प्रवेश के समय मातृ शिशु कार्ड की प्रति, दो संतानों संबंधी स्वघोषणा की प्रति भी अपलोड करवानी होगी।

ii. (अ) योजना के अंतर्गत चौथी, पाँचवी तथा छठी किश्त अर्थात कक्षा 6 व 10 में प्रवेश के समय एवं कक्षा 12 उत्तीर्ण करने पर संबंधित राजकीय विद्यालय द्वारा बालिका के माता, माता न होने पर पिता या अभिभावक से निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्राप्त किया जाएगा।

3. उत्तरदायित्व :

(अ) राजकीय विद्यालयों (राप्रावि./राउप्रावि./ रामावि./ राउमावि.) के संस्थाप्रधानों के लिए :

i. समस्त राजकीय विद्यालयों संस्थाप्रधान द्वारा इस योजना के लिए एक दक्ष शिक्षक को योजना प्रभारी बनाया जाएगा। विद्यालयों द्वारा बालिकाओं को तृतीय एवं पश्चातवर्ती किश्तों की जानकारी उपलब्ध करवाई जाएगी।

ii. राजकीय विद्यालय में कक्षा प्रथम, 6, 10 में प्रवेश के समय एवं कक्षा 12 में उत्तीर्ण करने वाली योजना की पात्र बालिकाओं की माता, माता न होने पर पिता या अभिभावक द्वारा निर्धारित प्रारूप में आवेदन करना होगा। आवेदन के समय पीसीटीएस कार्ड (PCTS ID) दो संतानों संबंधित स्वघोषणा, जनआधार कार्ड प्रति इत्यादि भी प्राप्त किए जाएँगे। पीसीटीएस आईडी सर्च के लिए शाला दर्पण पोर्टल पर विकल्प उपलब्ध करवाए जाएँगे।

iii. योजना के लाभ हेतु सभी आवेदन पत्र शाला दर्पण पोर्टल पर उपलब्ध करवाए गए विकल्प द्वारा ऑनलाइन प्रविष्ट कर आवश्यक डॉक्यूमेन्टस भी प्रत्येक किश्त के आवेदन के साथ शाला दर्पण पोर्टल पर अपलोड किए जाएँगे। आवेदन सबमिट के साथ ही उसका एक एप्लीकेशन आई.डी. जनरेट किया जाएगा।

iv. संस्थाप्रधान द्वारा आवेदन को अन्तिम रूप से सबमिट से पूर्व आवेदन को अद्यतन एवं डिलीट की सुविधा उपलब्ध रहेगी। अंतिम रूप से सबमिट प्रक्रिया के दौरान ही संस्थाप्रधान सभी सूचनाएँ सही होना बाबत एक प्रमाण पत्र भी ऑनलाइन ही लिया जाएगा।

v. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों संस्थाप्रधानों द्वारा संबंधित

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

PEEO/UCEEO को और माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के आवेदन सीधे ही जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा को ओटीपी के माध्यम से लॉक कर अग्रेषित किए जाएँगे।

(ब) पीईईओ/यूसीईईओ राजकीय विद्यालयों के संस्थाप्रधानों के लिए :

i. PEEO/UCEEO को विद्यालयों के द्वारा शाला दर्पण पोर्टल लॉगिन पर प्राप्त अधीनस्थ प्राथमिक विद्यालयों के सभी आवेदनों का गहन परीक्षण और अपलोड किए गए दस्तावेजो से योजना हेतु पात्रता की जाँच की जाएगी।

ii. प्राप्त आवेदनों के परीक्षण के उपरान्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा को ओटीपी के माध्यम से लॉक कर अग्रेषित किए जाएँगे।

iii. अपात्र आवेदन आक्षेप के साथ वापस रिवर्ट कर दिए जाएँगे। जिन्हें विद्यालय स्तर से आवश्यक पूर्ति कर पुनः प्रक्रिया अनुसार निर्धारित समयावधि में अग्रेषित किया जा सकेगा।

(स) सीबीईओ (CBEO) कार्यालय के लिए

सीबीईओ कार्यालय के द्वारा शाला दर्पण पोर्टल लॉगिन पर उपलब्ध रिपोर्टस के आधार पर योजना की निदेशालय द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशानुसार मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाएगी और निर्धारित समयावधि में शत-प्रतिशत आवेदन सुनिश्चित करवाया जाएगा।

(द) जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालय के लिए :

जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) के छात्रवृत्ति प्रभारी एवं लेखा कार्मिक द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर लॉगिन पर ऑन लाइन प्राप्त हुए आवेदनों का परीक्षण किया जाएगा एवं ऑनलाइन ही भुगतान की स्वीकृति तैयार की जाकर भुगतान की कार्यवाही की जाएगी। अपात्र आवेदन आक्षेप के साथ रिवर्ट करके संबन्धित विद्यालयों से आक्षेप पूर्ति कर पुनः प्रक्रिया अनुसार भुगतान की कार्यवाही करेंगे।

4. देय लाभ:

योजना के अन्तर्गत प्रत्येक लाभार्थी के माता-पिता/अभिभावक को कुल 50,000 रुपये की अधिकतम राशि का भुगतान निम्नानुसार किया जाएगा।

i. राज्य के राजकीय तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संस्थागत प्रसव हेतु अधिकृत निजी चिकित्सालय संस्थानों में प्रसव से जन्म लेने वाली बालिका की माता को अस्पताल से छुट्टी मिलने पर 2,500 की राशि देय होगी।

ii. बालिका की एक वर्ष की उम्र पूर्ण होने पर बालिका के नाम से 2,500 राशि देय होगी।

iii. बालिका के किसी भी राजकीय विद्यालय में प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने पर बालिका 4,000 रुपये की राशि देय होगी।

iv. बालिका के किसी भी राजकीय विद्यालय में कक्षा 6 में प्रवेश लेने पर बालिका के नाम से 5,000 रुपये की राशि देय होगी।

v. बालिका के किसी भी राजकीय विद्यालय में कक्षा 10 में प्रवेश लेने पर बालिका के नाम से 11,000 रुपये की राशि देय होगी।

vi. बालिका के किसी भी राजकीय विद्यालय से 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने पर 25,000 रुपये की राशि देय होगी।

उपर्युक्त बिन्दुओं के अनुसार इस योजना की प्रगति बढ़ाने एवं समाज में जागरूकता के लिए कृपया नीचे लिखे अनुसार कार्यवाही सुनिश्चित करेः-

1. योजना की मार्गदर्शिका प्रत्येक स्कूल के सूचना पट्ट पर चस्पा करें ताकि प्रत्येक व्यक्ति को इसकी जानकारी प्राप्त हो सके।
2. ग्राम पंचायत स्तर पर होने वाली बैठकों में जिनमें शिक्षा विभाग के अधिकारी/कर्मचारी योजना के संबंध में चर्चा करें।
3. पंजीकृत मदरसों में भी प्रवेश लेने वाली छात्राओं को योजना की शर्तों के अनुसार लाभ देय होगा।
4. पात्र बालिकाओं के कक्षा 1 में प्रवेश दिनांक को ही आवेदन पत्र पूर्ण रूप से पूर्ति करवाकर अपलोड करें।
5. राजश्री योजना के प्रचार-प्रसार हेतु समय-समय पर आयोजित बैठकों/वीसी में पृथक से विचार विमर्श किया जाए।

● **(मुख्य लेखाधिकारी)** प्रारम्भिक शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज विभाग (प्रारम्भिक शिक्षा) बीकानेर।

3. राजस्थान के विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों पर 'विद्या संबल योजना' के अन्तर्गत पात्र अभ्यर्थियों को 'गेस्ट फैकल्टी' के रूप में लगाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/मा.द./अंग्रेजी माध्यम/संस्थापन/66174/2022-23/144 दिनांकः 17.10.2022 ● विषय : राजस्थान के विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों पर 'विद्या संबल योजना' के अन्तर्गत पात्र अभ्यर्थियों को 'गेस्ट फैकल्टी' के रूप में लगाने के संबंध में। ●परिपत्र।

वित्त (सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम) विभाग के परिपत्र क्रमांकः प.6(2) वित्त/सा विले नि/2021 जयपुर दिनांक 30.03.2021 द्वारा जारी दिशा-निर्देशों एवं शासन के पत्र क्रमांक : प. 17(50) शिक्षा-2/2021 जयपुर दिनांक 02.09.2022 के क्रम में प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान के विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों पद 'विद्या संबल योजना' के अन्तर्गत पात्र अभ्यर्थियों को 'गेस्ट फैकल्टी' के रूप में लगाया जाना है। उक्त योजना के तहत लगाए जाने वाले शिक्षकों के पदों/योग्यताएँ/शर्तें और प्रक्रिया निम्नानुसार होगी-

(1) विद्या संबल योजना के तहत लगाए जाने वाले पद एवं योग्यताएँ-

Rajasthan Education Department

क्र.सं.	पद का नाम	योग्यता
I	व्याख्याता (विभिन्न विषय)	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार
II	वरिष्ठ अध्यापक (विभिन्न विषय)	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार
III	अध्यापक लेवल-2 (विभिन्न विषय)	राजस्थान पंचायत राज नियम-1996 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार।
IV	अध्यापक लेवल-1	राजस्थान पंचायत राज नियम-1996 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार
V	प्रयोगशाला सहायक	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में वर्णित प्रावधानों के अनुसार
VI	शारीरिक शिक्षा शिक्षक	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में वर्णित प्रावधानों के अनुसार

नोटः-

1. गेस्ट फैकल्टी हेतु न्यूनतम आयु आवेदित पद से संबंधित सेवा नियमों में वर्णित प्रावधानों के अनुसार होगी।
2. विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी के रूप में सेवानिवृत्त/निजी अभ्यर्थी लगाए जाएंगे।
3. सेवानिवृत्त शिक्षक गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए जाने हेतु पात्र होंगे, बशर्ते उसके आवेदित पद की न्यूनतम वांछित योग्यता अर्जित की हो। परंतु अध्यापक लेवल-1 व अध्यापक लेवल-2 पदों के लिए सेवा निवृत्त शिक्षकों हेतु रीट परीक्षा उत्तीर्ण की बाध्यता नहीं होगी।
4. सेवानिवृत्त शिक्षक अधिकतम 65 वर्ष की आयु तक ही गैस्ट फैकल्टी के रूप में कार्य करने हेतु पात्र होंगे।
5. भाषा विषयों को छोड़कर शेष विषयों के लिए अंग्रेजी माध्यम में अंग्रेजी माध्यम कक्षाओं के लिए गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए जाने हेतु संबंधित पद व विषय के लिए संबंधित सेवा नियमों में प्रावधानित न्यूनतम शैक्षणिक वांछित अर्हता अंग्रेजी माध्यम में अर्जित की जानी अनिवार्य होगी।

(2) रिक्तियाँ :

I विद्या संबल योजना के अंतर्गत गेस्ट फैकल्टी के रूप में विद्यालयों में स्वीकृत किन्तु स्पष्ट रिक्त पद पर ही लगाया जाएगा।

II अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम कक्षाओं के लिए भाषा विषयों के अतिरिक्त विषयों के पदों पर विभाग में पहले से कार्यरत शिक्षकों को साक्षात्कार प्रक्रिया से प्रथमतः लगाया जाएगा। कम से कम एक बार साक्षात्कार प्रक्रिया हो जाने के पश्चात भरे नहीं जा सके पदों को स्पष्ट रिक्ति के रूप में चिह्नित किया जाएगा। जिन पदों के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया पूर्ण नहीं हुई है, उन्हें अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम कक्षाओं हेतु गेस्ट फैकल्टी लगाए जाने हेतु रिक्ति के रूप में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

(3) रिक्तियों का प्रकाशन- विद्यालयवार स्पष्ट रिक्तियों का अवलोकन संबंधित विद्यालय/पीईईओ विद्यालय के नोटिस बोर्ड, क्षेत्र व ग्राम के सार्वजनिक स्थान, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय तथा विभागीय वेबसाइट : http://education.rajasthan.gov.in पर किया जाएगा।

(4) आवेदन प्रक्रिया- किसी भी पद हेतु 65 वर्ष तक की आयु के सेवानिवृत्त शिक्षक/निजी अभ्यर्थी, जो उस पद की पात्रता रखते हों, निर्धारित प्रारूप में पूर्ण भरा हुआ आवेदन पत्र, समस्त आवश्यक दस्तावेज संलग्न कर विभाग द्वारा निर्धारित की गई समय-सारणी के अनुसार अंतिम तिथि तक विद्यालय समय में संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पीईईओ को स्वयं व्यक्तिशः विद्यालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत करेंगे।

(5) वरीयता का निर्धारण- विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी लगाए जाने हेतु प्राप्त आवेदन पत्रों की जाँच के उपरान्त विद्यालयवार प्रकाशित किए गए रिक्त पदों हेतु पद एवं विषयवार वरीयता सूची का प्रकाशन संबंधित प्राचार्य/पीईईओ द्वारा किया जाएगा। वरीयता सूची पद की वांछित न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के प्राप्तांकों का 75 प्रतिशत व प्रशैक्षणिक योग्यता के प्राप्तांकों का 25 प्रतिशत अंकभार जोड़कर किया जाएगा।

समान अंक होने की स्थिति में अधिक आयु के अभ्यर्थी को वरीयता में कम आयु के अभ्यर्थी से ऊपर रखा जाएगा। गेस्ट फैकल्टी चयन हेतु किसी भी स्तर पर साक्षात्कार नहीं लिया जाएगा।

(6) परिवेदना प्रस्तुत करना- पात्रता अथवा वरीयता के संबंध में किसी भी तरह की परिवेदना आवेदक द्वारा संबंधित जिले के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में सात दिवस में प्रस्तुत करनी होगी। जिला स्तर परिवेदना समिति निम्नानुसार होगी-

क्र.सं.	पदनाम	विवरण
1.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	अध्यक्ष
2.	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक	सदस्य
3.	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारंभिक	सदस्य
4.	संबंधित ब्लॉक का मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी	सदस्य

(7) विद्या संबल योजना के तहत मानदेय- विद्या संबल योजना के तहत लगाए जाने वाले गेस्ट फैकल्टी को पदवार प्रतिघण्टा (60 मिनट) मानदेय निम्नानुसार दिया जाएगा।

क्र. सं.	पद	कक्षा	प्रति घण्टा (60 मिनट) मानदेय	अधिकतम मासिक मानदेय
1.	अध्यापक लेवल-प्रथम, लेवल-द्वितीय	1 से 8	300 रु.	21000 रु.
2.	वरिष्ठ अध्यापक	9 से 10	350 रु.	25000 रु.
3.	प्राध्यापक	11 से 12	400 रु.	30000
4.	प्रयोगशाला सहायक	-	300 रु.	21000 रु.
5.	शारीरिक शिक्षा सहायक	-	300 रु.	21000 रु.

Rajasthan Education Department

(8) अन्य शर्तें:–

I चयनित अभ्यर्थी को गेस्ट फैकल्टी के पद पर लगाए जाने हेतु दिए गए प्रस्ताव पर सात दिवस में सहमति प्रदान करनी होगी तथा प्राचार्य/पीईईओ द्वारा नियत किए गए दिनांक व समय पर वे कार्य करने उपस्थित होंगे।

II निर्धारित अंतिम तिथि तक सहमति नहीं दिए जाने पर वरीयता सूची के अग्रिम क्रमांक के अभ्यर्थी को गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाया जा सकेगा।

III गेस्ट फैकल्टी के रूप में सत्रांत अथवा नियमित प्रक्रिया से पद भरे जाने तक जो भी पहले हो, तक के लिए पूर्णतः अस्थाई तौर पर लगाया जाएगा।

IV गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए गए निजी अभ्यर्थियों/सेवा निवृत्त शिक्षकों को उन्हीं दिशा–निर्देशों के अध्यधीन रखा जाएगा, जो वित्त विभाग के परिपत्र दिनांक 30.03.2021 में वर्णित है।

V गेस्ट फैकल्टी के कार्य का नियमित अवलोकन प्राचार्य/पीईईओ द्वारा किया जाएगा। निम्न कार्यकुशलता, दुराचरण, अनियमितता या कार्य से अनुपस्थिति की दशा में प्राचार्य/पीईईओ द्वारा बिना कारण बताए गेस्ट फैकल्टी के रूप में विमुक्त कर दिया जाएगा।

(9) टाइम टेबल–

क्र.सं.	दिनांक	कार्यक्रम
1.	दिनांक 01.11.2022	विज्ञप्ति एवं रिक्तियों का प्रकाशन
2.	दिनांक 02.11.2022 से 04.11.2022 (विद्यालय समय में)	आवेदन की तिथि
3.	दिनांक 05.11.2022	प्राप्त आवेदनों की सूची प्रकाशित करना (स्कूल)
4.	दिनांक 07.11.2022	पात्रता की जाँच करना। वरीयता सूची बनाना (अस्थाई) एवं जारी करना
5.	दिनांक 09.11.2022	आपत्तियाँ माँगना
6.	दिनांक 10.11.2022	अंतिम वरीयता सूची बनाना (स्थाई)
7.	दिनांक 11.11.2022	मूल दस्तावेजों की जाँच करना
8.	दिनांक 12.11.2022	आदेश जारी करना
9.	दिनांक 19.11.2022	कार्यग्रहण की अंतिम तिथि

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा तथा निदेशक प्रारंभिक शिक्षा एवं पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा) विभाग राजस्थान, बीकानेर।

आवेदन का प्रारूप

1. आवेदक का नाम :
2. पिता का नामः
3. आवेदित विद्यालय का नाम :
4. आवेदित पद का नाम :

फोटो

5. आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथिः
6. जन्म तिथि :
7. शैक्षणिक योग्यताः
   1. माध्यमिक वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 1
   2. उच्च माध्यमिक वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 2
   3. स्नातक वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 3
   4. अधिस्नातक वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 4
8. प्रशैक्षणिक योग्यता :
   1. बी.एड./समकक्ष वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 5
   2. डी.एल.एड./समकक्ष वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 6
9. वैध पात्रता परीक्षा (आवश्यकतानुसार)–रीट, उत्तीर्णता वर्ष.....प्रतिशत..... संलग्न 7
10. निवास का पताः
    1. स्थाई.....
    2. वर्तमान.....
11. मोबाइल नम्बर.....
12. जाति वर्ग.....प्रमाण पत्र संलग्न करें। (आरक्षित वर्ग होने पर)। संलग्न–8
13. अन्य (विकलांग /भू.पू.सैनिक/विधवा/परित्यक्ता/स्पोर्ट्स पर्सन) सलंग्न–9
14. मूल निवास प्रमाण–पत्र संलग्न–10
15. चरित्र प्रमाण पत्र (दो राजपत्रित अधिकारियों द्वारा प्रदत्त) संलग्न 11 व 12

आवेदन पत्र के साथ संलग्नकों की सूची–संलग्नक 1 से 12 (स्व प्रमाणित छाया प्रतियाँ) व शपथ पत्र तथा अन्य जो आवेदनकर्ता देना चाहे।

आवेदक के हस्ताक्षर

शपथ–पत्र

मै श्री/श्रीमती/कुमारी.....पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री..... विभाग.....(संस्थान का नाम) में दिनांक.....को गेस्ट फैकल्टी के रूप में अपनी उपस्थिति दे रहा हूँ/दे रही हूँ।

1. यह है कि मैंने.....विभाग/संस्थान द्वारा जारी विज्ञापन दिनांक..... के क्रम में अपना आवेदन प्रस्तुत किया है तथा मैंने विज्ञापन में वर्णित शर्तों को पढ़ व समझ लिया है तथा उन शर्तों की पालना हेतु वचनबद्ध हूँ।
2. यह है कि मैंने राजस्थान सरकार के वित्त (सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियम) विभाग के परिपत्र क्रमांक प.6(2)वित्त/साविलेनि/2021 दिनांक.....को अच्छे से पढ़/समझ लिया है।
3. यह कि मेरे द्वारा आवेदन पत्र में भरी गयी समस्त सूचनाएँ पूर्णतया सत्य है तथा कोई तथ्य छिपाया नही गया है।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

4. यह कि मेरे द्वारा जमा किए गए समस्त शैक्षिक/प्रशिक्षण संबंधी मूल अभिलेख एवं अन्य दस्तावेज जो विभाग द्वारा अपेक्षित हैं (यथा पहचान पत्र जो आवेदन पत्र में अंकित हो, न्यूनतम शैक्षिक पात्रता परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक, निवास, जाति, विकलांगता, भू.पू.सै. स्वयं से संबंधित प्रमाण पत्र) पूर्णतया सही हैं।

5. यह कि मेरे द्वारा प्रस्तुत किए गए समस्त मूल अभिलेख एवं अन्य सूचनाएँ यदि जाँच के दौरान कूटरचित/फर्जी अथवा गलत पायी जाती है तो मुझे गैस्ट फैकल्टी से निर्मुक्त कर दिया जाएगा। जिला स्तरीय समिति के Empellenment से निर्मुक्त करते हुए मेरे विरुद्ध नियमानुसार विधिक कार्यवाही मुझे स्वीकार्य होगी जिसके लिए किसी भी न्यायालय में वाद दायर नहीं करूँगा/करूँगी।

6. यह है कि मैं कार्य निष्पादन के दौरान निर्धारित उच्च मानदंडों के अनुसार अपनी सेवाएँ प्रदान करूँगा/करूँगी तथा यदि मैं इसका उल्लंघन करता हूँ/करती हूँ तो संस्था एकतरफा कार्यवाही हेतु स्वतंत्र तथा अधिकृत होगी।

7. यह कि मैं जिला आवेदित होने के उपरांत स्थान परिवर्तन की मांग नहीं करूँगा/करूँगी।

8. यह है कि मैं इस तथ्य की सहमति से अवगत हूँ कि जिस रिक्त पद के विरुद्ध शपथग्रहिता को गेस्ट फैकल्टी रखा गया है, उस पद पर नियमित नियुक्ति की दिनांक से ही उपर्युक्त व्यवस्था तक समाप्त हो जाएगी।

9. यह है कि मैंने यह तथ्य समझ लिया है कि यह व्यवस्था पूर्ण रूप से अस्थायी तथा एक सेमेस्टर या एक सेशन के लिए है तथा भविष्य में इसके आधार पर नियमित नियुक्ति का दावा नहीं करूँगा/करूँगी।

10. इस व्यवस्था से नियमित नियुक्ति या अन्य किसी भी कारण से मुझे यदि गेस्ट फैकल्टी के रूप में नहीं बुलाया जाता है तो मेरे द्वारा न्यायिक या प्रशासनिक स्तर पर कोई दावा प्रस्तुत नहीं किया जाएगा।

11. मैं राज्य सरकार/विभाग/संस्थान द्वारा समय-समय पर जारी नियमों/निर्देशों की पूर्ण पालना करूँगा/करूँगी।

12. यह कि मुझे केन्द्र सरकार या किसी अन्य राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी अथवा समुचित प्राधिकारी के स्वामित्वाधीन या नियंत्रणाधीन किसी निगम या निकाय अथवा विभाग द्वारा पदच्युत नहीं किया गया है तथा नैतिक अधमता अथवा किसी अन्य अपराध के लिए दोष सिद्ध नहीं किया गया है और न ही कोई आपराधिक प्रकरण न्यायालय में लंबित है।

13. मैंने यह समझ लिया है कि निम्न कार्य कुशलता, दुराचरण, अनियमितता तथा कार्य से अनुपस्थिति की दशा में संस्थान या सक्षम अधिकारी को बिना कारण बताए मुझे गेस्ट फैकल्टी के रूप में निर्मुक्त करने का अधिकार होगा।

14. मैं राजकीय अभिलेख तथा सूचनाओं की गोपनीयता बनाए रखूँगा तथा इसका उल्लंघन करने पर नियमानुसार दण्डीय कार्यवाही का उत्तरदायी होऊँगा।

शपथग्रहिता

सत्यापन

मैं शपथपूर्वक बयान करता हूँ/करती हूँ कि उपर्युक्त वर्णित बिन्दु संख्या 1 से 14 में वर्णित तथ्य/सूचना मेरी जानकारी में सही तथा सत्य है मैंने इनको भलीभाँति पढ़ तथा समझ लिया है, मैंने कुछ भी असत्य व्यक्त नहीं किया है तथा न ही कुछ छिपाया है। यदि भविष्य में कोई सूचना/तथ्य असत्य या अपूर्ण सिद्ध होता है तो मैं स्वयं इसके लिए उत्तरदायी रहूँगा।

शपथग्रहिता

4. 'विद्या संबल योजना' के तहत गेस्ट फैकल्टी शिक्षकों को रिक्त पदों पर लगाए जाने के संबंध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर● क्रमांकःशिविरा-मा/मा.द./अंग्रेजी माध्यम/संस्थापन/66174/2022-23/149 दिनांकः 17.10.2022 ● 1. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंम्भिक ● 2. समस्त संस्थाप्रधान राजकीय उ.मा.वि./महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय/राजकीय अंग्रेजी माध्यम उ.मा. विद्यालय ● विषय :- विद्या सम्बल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी शिक्षकों को रिक्त पदों पर लगाए जाने के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश। ●परिपत्र।

वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांक-प6(2) वित्त/सावितेनि/2021 जयपुर, दिनांक 30.3.2021 के क्रम में राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों एवं महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालयों/राजकीय अन्य अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रिक्त पदों पर विद्या सम्बल योजना के तहत स्पष्ट रिक्त पदों पर गेस्ट फैकक्टी लगाए जाने हेतु निम्नानुसार दिशा निर्देश जारी किए जाते हैः-

(1) पद एवं अर्हताएँः-

क्र.सं.	पद का नाम	योग्यता
I	व्याख्याता (विभिन्न विषय)	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार
II	वरिष्ठ अध्यापक (विभिन्न विषय)	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार
III	अध्यापक लेवल-2 (विभिन्न विषय)	राजस्थान पंचायत राज नियम-1996 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार।
IV	अध्यापक लेवल-1	राजस्थान पंचायत राज नियम-1996 में संबंधित पद एवं विषय हेतु वर्णित प्रावधानों के अनुसार
V	प्रयोगशाला सहायक	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में वर्णित प्रावधानों के अनुसार
VI	शारीरिक शिक्षा शिक्षक	राजस्थान शिक्षा (राज्य एवं अधीनस्थ) सेवा नियम-2021 में वर्णित प्रावधानों के अनुसार

नोटः-

1. गेस्ट फैकल्टी हेतु न्युनतम आयु आवेदित पद से संबंधित सेवा नियमों

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

में वर्णित प्रावधानों के अनुसार होगी।

2. विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी के रूप में सेवानिवृत/निजी अभ्यर्थी लगाए जाएंगे।
3. सेवा निवृत शिक्षक गेसट फैकल्टी के रूप में लगाए जाने हेतु पात्र होंगे, बशर्ते उसके आवेदित पद की न्यूनतम वांछित योग्यता अर्जित की हो। परन्तु अध्यापक लेवल-1 व अध्यापक लेवल-2 पदों के लिए सेवा निवृत शिक्षकों हेतु रीट परीक्षा उत्तीर्ण की बाध्यता नहीं होगी।
4. सेवा निवृत शिक्षक अधिकतम 65 वर्ष की आयु तक ही गैस्ट फैकल्टी के रूप में कार्य करने हेतु पात्र होंगे।
5. भाषा विषयों को छोड़कर शेष विषयों के लिए अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम कक्षाओं के लिए गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए जाने हेतु संबंधित पद व विषय के लिए संबंधित सेवा नियमों में प्रावधानित न्यूनतम शैक्षणिक वांछित अर्हता अंग्रेजी माध्यम में अर्जित की जानी अनिवार्य होंगी।

2. रिक्तियां :-

I. विद्या संबल योजना के अंतर्गत गेस्ट फैकल्टी के रूप में विद्यालयों में स्वीकृत किन्तु स्पष्ट रिक्त पद पर ही लगाया जाएगा। विद्या संबल योजना के तहत अल्पभाषा उर्दू, पंजाबी, सिंधी, गुजराती के रिक्त पदों को भी सम्मिलित किया जाना है।

II. अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम कक्षाओं के लिए भाषा विषयों के अतिरिक्त विषयों के पदों पर विभाग में पहले से कार्यरत शिक्षकों को साक्षात्कार प्रक्रिया से प्रथमतः लगाया जाएगा। कम से कम एक बार साक्षात्कार प्रक्रिया हो जाने के पश्चात भरे नहीं जा सके पदों को स्पष्ट रिक्ति के रूप में चिह्नित किया जाएगा। जिन पदों के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया पूर्ण नहीं हुई है, उन्हें अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम कक्षाओं हेतु गेस्ट फैकल्टी लगाए जाने हेतु रिक्त के रूप में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

3. आवेदन पत्र आमंत्रित करना:- संबंधित प्राचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय अपने विद्यालय तथा प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय के लिए संबंधित पीईईओ विद्या सम्बल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी लगाए जाने वाले स्पष्ट रिक्त पदों का चिन्हिकरण कर पदवार/विषयवार प्रकाशन विद्यालय/पीईईओ विद्यालय के नोटिस बोर्ड, स्थानीय सार्वजनिक स्थलों, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंभिक कार्यालय एवं विभागीय वेबसाइट पर (जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)) माध्यमिक/प्रारंभिक कार्यालय के माध्यम से) किया जाकर निर्धारित प्रारूप में (प्रारूप संलग्न) पात्र व्यक्तियों के आवेदन पत्र आमंत्रित करेंगे।

4. आवेदन पत्रों की जाँच एवं वरीयता सूची का निर्माण :- आवेदन पत्रों की जाँच एवं वरीयता सूची का निर्माण पूर्ण पारदर्शी तरीके से किया जाए। इस हेतु विद्यालय स्तर पर एक एक तीन सदस्यी समिति का गठन निम्नानुसार किया जाएगा-

1. प्राचार्य/पीईईओ अध्यक्ष
   (यदि पर रिक्त है तो कार्यवाहक प्राचार्य/पीईईओ)
ii. विद्यालय के दो वरिष्ठतम व्याख्याता सदस्य
   (यदि व्याख्याता कार्यरत नहीं है तो वरिष्ठ अध्यापक)

नोटः- वरिष्ठ शिक्षक यदि विद्यालय में कार्यरत नहीं है तो संबंधित ब्लॉक के मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ब्लॉक के किसी अन्य विद्यालय के एक या दो, यथा आवश्यकता वरिष्ठ व्याख्याता को इस कार्य हेतु सदस्य नियुक्त करेंगे।

(5) समिति के दायित्वः-

I. प्राप्त आवेदन पत्रों के आधार पर पदवार व विषयवार आवेदकों की सूची तैयार कर विद्यालय के सूचना पट्ट पर प्रकाशित करेंगे।
II. आवेदन पत्रों की जाँच कर पात्र/अपात्र आवेदकों की सूची पदवार/विषयवार तैयार कर विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर प्रकाशित करना।
III. पदवार व विषयवार पात्र अभ्यर्थियों की वरीयता सूची तैयार कर विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर प्रकाशित करना।
IV. वरीयता सूची में पात्र अभ्यर्थियों की वरीयता निर्धारण उनके आवेदित पद के लिए सम्बन्धित सेवा नियमों में वांछित न्यूनतम शैक्षिक योग्यता के प्राप्तांकों के 75 प्रतिशत व वांछित न्यूनतम प्रशैक्षिक योग्यता के प्राप्तांकों के 25 प्रतिशत अंक भारों के योग के आधार पर किया जाएगा।
V. प्राप्तांक समान होने की स्थिति में अधिक आयु के अभ्यर्थी को कम आयु के अभ्यर्थी से वरीयता क्रम ऊपर रखा जाएगा।
VI. पदवार व विषयवार तैयार की गई वरीयता सूचियों में से सर्वोच्च वरीयता वाले अभ्यर्थियों के नाम विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए जाने हेतु उक्त समिति अपनी अनुशंषा प्राचार्य/PEEO को करेगी।

(6) प्राचार्य/पीईईओ के कार्यः-

I. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिए विद्यालय के प्राचार्य और प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिए संबंधित पीईईओ द्वारा रिक्तियों की पहचान व प्रकाशन करना।
II. चयन समिति की अनुशंषा के आधार पर चयनित अभ्यर्थियों के मूल दस्तावेंजो की जाँच कर उनहें विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी के रूप में पूर्णतः अस्थाई तौर पर लगाए जाने एवं सात दिवस में कार्य प्रारंभ करने के लिए पत्र जारी करना।
III. गेस्ट फैकल्टी के कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व निर्धारित प्रारूप में प्राचार्य/PEEO को शपथ-पत्र (मूल) प्रस्तुत करेंगे।
IV. गेस्ट फैकल्टी के कार्यों की समुचित मॉनिटरिंग की व्यवस्था कर उनके संतोषजनक कार्य सत्यापन के आधार पर मानदेय भुगतान की कार्यवाही करना।
V. रिक्त पद भर जाने पर उक्त व्यवस्था को स्वतः समाप्त कर देना।
VI. यदि कार्य असंतोषजनक हो तो उक्त व्यवस्था को स्वतः समाप्त कर देना।
VII. विद्या संबल योजना के अंतर्गत गेस्ट फैकल्टी के रूप में 65 वर्ष की अधिकतम आयु सीमा के सेवा-निवृत्त शिक्षक/निजी अभ्यर्थी पात्र होंगे।

Rajasthan Education Learning Portal
सत्यमेव जयते

(7) टाइम टेबल–

क्र.सं.	दिनांक	कार्यक्रम
1.	दिनांक 01.11.2022	विज्ञप्ति एवं रिक्तियों का प्रकाशन
2.	दिनांक 02.11.2022 से 04.11.2022 (विद्यालय समय में)	आवेदन की तिथि
3.	दिनांक 05.11.2022	प्राप्त आवेदनों की सूची प्रकाशित करना (स्कूल)
4.	दिनांक 07.11.2022	पात्रता की जाँच करना। वरीयता सूची बनाना (अस्थाई) एवं जारी करना
5.	दिनांक 09.11.2022	आपत्तियाँ माँगना
6.	दिनांक 10.11.2022	अंतिम वरीयता सूची बनाना (स्थाई)
7.	दिनांक 11.11.2022	मूल दस्तावेजों की जाँच करना
8.	दिनांक 12.11.2022	आदेश जारी करना
9.	दिनांक 19.11.2022	कार्यग्रहण की अंतिम तिथि

(8) विद्या सम्बल योजना के तहत मानदेय–विद्या संबल योजना के तहत लगाए जाने वाले गेस्ट फैकल्टी को पदवार प्रतिघण्टा (60 मिनट) मानदेय निम्नानुसार दिया जाएगा।

क्र. सं.	पद	कक्षा	प्रति घण्टा (60 मिनट) मानदेय	अधिकतम मासिक मानदेय
1.	अध्यापक लेवल-प्रथम, लेवल-द्वितीय	1 से 8	300 रु.	21000 रु.
2.	वरिष्ठ अध्यापक	9 से 10	350 रु.	25000 रु.
3.	प्राध्यापक	11 से 12	400 रु.	30000
4.	प्रयोगशाला सहायक	–	300 रु.	21000 रु.
5.	शारीरिक शिक्षा सहायक	–	300 रु.	21000 रु.

(9) अन्य –

I. चयनित अभ्यर्थी को गेस्ट कैकल्टी के पद पर लगाए जाने हेतु दिए गए प्रस्ताव पर सात दिवस में सहमति प्रदान करनी होगी तथा प्राचार्य/पीईईओ द्वारा नियत किए गए दिनांक व समय पर वे कार्य करने आऐंगे।

II. निर्धारित अंतिम तिथि तक सहमति नहीं दिए जाने/पूर्व में आमंत्रित किए गए गेस्ट फैकल्टी को हटाए जाने से रिक्त हुए पद पर वरीयता सूची के अग्रिम क्रमांक के अभ्यर्थी को गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाया जा सकेगा।

III. गेस्ट फैकल्टी के रूप में सत्रांत अथवा नियमित प्रक्रिया से पद भरे जाने तक जो भी पहले हो, तक के लिए पूर्णतः अस्थाई तौर पर लगाया जाएगा।

IV. गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए गए निजी अथ्यर्थियों/सेवा निवृत्त शिक्षकों को उन्हीं दिशा-निर्देशों के अध्यधीन रखा जायेगा, जो वित्त विभाग के परिपत्र दिनांक 30.3.2021 में वर्णित है।

V. गेस्ट फैकल्टी के कार्य का नियमित अवलोकन प्राचार्य/पीईईओ द्वारा किया जाएगा। निम्न कार्यकुशलता, दुराचरण, अनियमितता या कार्य से अनुपस्थिति की दशा में प्रधानाचार्य द्वारा बिना कारण बताए गैस्ट फैकल्टी के रूप में विमुक्त कर दिया जाएगा।

VI. गेस्ट फैकल्टी पर आमंत्रित शिक्षक केवल कालांश के आधार पर अध्यापन कार्य ही करवाएगें, इन्हें कोई प्रशासनिक कार्य नहीं सौंपा जाना है।

VII. यह दिशा निर्देश पात्र शैक्षणिक सत्र 2022-23 के लिए है।

संलग्न :– उपरोक्तनुसार

● **(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस.निदेशक,** माध्यमिक शिक्षा तथा निदेशक प्रांरभिक शिक्षा एवं पंचायती राज. (प्रारंभिक शिक्षा) विभाग राजस्थान, बीकानेर

विद्या सम्बल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी लगाए जाने हेतु संस्था-प्रधान द्वारा दिए जाने वाले पत्र का प्रारूप

श्री/श्रीमती सुश्री.....

पताः-.....

विषयः- विद्या सम्बल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी के रूप में लगाए जाने के संबंध में

वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांकः प 6(2) वित्त/साविलेनि/2021 जयपुर दिनांक 30.03.2021 के अनुसार 'विद्या सम्बल योजना' के अंतर्गत गेस्ट फैकल्टी के रूप में आप श्री/श्रीमती/सुश्री.....पुत्र/पुत्री श्री.....को विद्यालय ..... में पद ..... विषय ..... के रिक्त पद पर पूर्णतः अस्थाई रूप से लगाया जाता है।

गेस्ट फैकल्टी के रूप में आपको निम्नांकित शर्तों के अधीन लगाया जाकर निर्देशित किया जाता है कि आप दिनांक .....को .....बजे विद्यालय में उपस्थित होकर गेस्ट फैकल्टी के रूप में कार्य प्रारम्भ करें :-

1. आप अव्वल समय पर अपना पूर्ण भरा हुआ आवेदन पत्र, दस्तावेजों की स्वप्रमाणित छाया प्रतियाँ व संलग्न प्रारूप में मूल शपथ पत्र संलग्न कर अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें।
2. दस्तावेज सत्यापन हेतु मूल दस्तावेज साथ लेकर आऐं।
3. निर्धारित अंतिम तिथि तक कार्य हेतु उपस्थित नहीं होने की स्थिति में यह प्रस्ताव आपकी अस्वीकृति मानते हुए समाप्त कर दिया जाएगा।
4. गेस्ट फैकल्टी के रूप में आपको प्रतिघंटा.....मानदय देय होगा, जो अधिकतम.....मासिक से अधिक देय नहीं होगा।
5. रिक्त पद पर नियमित प्रक्रिया से शिक्षक की नियुक्ति हो जाने अथवा सत्रांत तक, जो भी पहले हो, के साथ ही उसे निरस्त समझा जाएगा।

प्राचार्य

शपथग्रहिता

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

5. सेवानिवृत प्रकरणों, उपार्जित अवकाश का नकदीकरण एवं विभिन्न खातो में जमा राशि के संबंध में लेखा कार्मिको की भूमिका के संबंध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा/प्रारं/अकेंक्षण/2021-22/ दिनांकः 06.10.2022 विषयः सेवानिवृत प्रकरणों, उपार्जित अवकाश का नकदीकरण एवं विभिन्न खातो में जमा राशि के संबंध में लेखा कार्मिको की भूमिका के संबंध में दिशा-निर्देश।

वित्त विभाग द्वारा पेपरलेस सिस्टम लागू किए जाने फलस्वरूप सेवानिवृत समस्त कार्मिको के पेंशन प्रकरण ऑनलाइन मोड से अग्रेषित किए जा रहे है, चूँकि पेंशन प्रकरणों में सेवानिवृत परिलाभों की नियमानुसार जाँच/गणना CBEO कार्यालयों में लेखा कार्मिको की जाँच के सेवानिवृत्ति प्रकरणों में भुगतान स्वीकृति हेतु प्रकरण ऑनलाइन अग्रेषित किया जा रहा है, जिससे पेंशन, अवकाश नकदीकरण भुगतान व अन्य सेवानिवृत्ति परिलाभ के अधिक भुगतान होने की पूर्ण संभावना बनी रहती है। अतः इन कार्यालयों में वित्तीय अनुशासन बनाए रखने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा में पदस्थापित अधीनस्थ लेखा सेवा के अधिकारियों/कर्मचारियों को निर्देशित किया जाता है किः-

1. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) के अधिनस्थ कार्यालयों के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवा अभिलेख के अवकाश लेखे सहित जाँच कर हस्ताक्षर अंकित करें।
2. सेवानिवृत होने वाले सभी कार्मिकों के सेवानिवृति के उपरान्त होने वाले उपार्जित अवकाश के भुगतान की अवकाश लेखे से मिलान करके जाँच करें।
3. अधिनस्थ कार्यालयों द्वारा पूल बजट/निजी निक्षेप/बैंक खाते से किए जा रहे व्यय पर निगरानी रख जावे, जहाँ कहीं पर व्यय में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही हो उसका विशेष रूप से परीक्षण करें तथा अनियमितता पाई जाने पर उच्चधिकारियों के ध्यान में लाया जावे। इसका मासिक आधार पर अंक मिलान/जाँच लेखा कार्मिकों के स्तर से करवाई जावे।
4. सेवानिवृत्त कार्मिकों के पेंशन प्रकरण/उपार्जित अवकाश भुगतान स्वीकृति से पूर्व लेखा कार्मिक की अभिलेख की जाँच की टिप्पणी अनिवार्य रूप से प्राप्त की जावे।
5. सेवानिवृत्त कर्मिकों के सेवाभिलेख में अन्तिम वेतन सही होने का प्रमाण पत्र अनिवार्य रूप से सेवा पुस्तिका में अकित करवाया जावे।
6. सेवानिवृत्ति कार्मिकों क अवशेष उपार्जित अवकाश भुगतान स्वीकृति से पूर्व अवकाश लेखे की जाँच संबन्धी टिप्पणी लेखा कार्मिक से अनिवार्य रूप से ली जावे।
7. पूर्व जाँच के प्रकरणो को लम्बित ना रखा जावे।

● **मुख्य लेखाधिकारी,** प्रारम्भिक शिक्षा विभाग एवं पंचायती राज विभाग (प्रारम्भिक शिक्षा), बीकानेर

6. महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/ राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय हेतु चयनित कार्मिकों व प्रवेशित विद्यार्थियों के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा/म.गा./मा-द/अंग्रेजी माध्यम/प्रवेश/66181/2022-23/269 दिनांक : 28.10.22 ● 1. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। ● 2. समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। ● 3. समस्त संस्थाप्रधान, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय। ● विषय : महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/ राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय हेतु चयनित कार्मिकों व प्रवेशित विद्यार्थियों के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

राज्य सरकार द्वारा विभिन्न बजट घोषणाओं के क्रम में अनेक राजकीय विद्यालयों को महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रूपान्तरित किया गया है। रूपान्तरित अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में से कुछ विद्यालयों को यथोचित कारणों से शासन के आदेशों की पालना में अंग्रेजी माध्यम में रूपान्तरण से मुक्त भी किया गया है। इन विद्यालयों में शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप साक्षात्कार प्रक्रिया द्वारा कार्मिकों का चयन कर पदस्थापन एवं विद्यार्थियों से मुक्त किए जा चुके विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम हेतु चयनित एवं पदस्थापित किए जा चुके कार्मिकों एवं अंग्रेजी माध्यम में प्रवेशित विद्यार्थियों के सम्बन्ध में निम्नानुसार कार्यवाही की जावे-

चयनित कार्मिकों के सम्बन्ध में :-

1. रूपान्तरण से मुक्त किए गए विद्यालय के स्थान पर रूपान्तरित किए गए नवीन अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में चयनित कार्मिकों को स्थानान्तरित कर दिया जाए। उक्त कार्य नवीन रूपान्तरित किए गए विद्यालय में संचालित की जाने वाली कक्षा स्तर की आवश्यकता के अनुसार किया जाए।
2. नवीन रूपान्तरित विद्यालय में बिन्दु संख्या-01 के अनुसार स्थानान्तरित नहिं किए जा सके कार्मिकों को उसी ग्राम पंचायत/कस्बा-शहरी परिक्षेत्र के अन्य अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, जिसमें सम्बन्धित पद हो, में स्थानान्तरित कर दिया जावे।
3. उक्त दोनों स्थितियों से समायोजित नहीं हो सके अध्यापक को उसी विद्यालय, जिसे रूपान्तरण से मुक्त किया गया है, में पद रिक्त होने की स्थिति में यथावत रखा जावे।
4. जिन विद्यालयों को रूपांतरण से मुक्त किया गया है, किन्तु उनके स्थान पर किसी अन्य विद्यालय को महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रूपान्तरित नहीं किया गया, उन विद्यालयों में साक्षात्कार से अंग्रेजी माध्यम हेतु लगाए गए कार्मिकों को उसी ग्राम पंचायत/कस्बा क्षेत्र/

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

शहरी क्षेत्र के अन्य महात्मा गाँधी/अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में पद रिक्त है, में स्थानान्तरित किया जावे।

5. जिन विद्यालयों को रूपान्तरण से मुक्त किया गया है, किन्तु उनके स्थान पर किसी अन्य विद्यालय को महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रूपान्तरित नहीं किया गया है, तो बिन्दु संख्या-04 के अनुसार समायोजन नहीं होने की स्थिति में उसी विद्यालय, जिसे रूपान्तरण से मुक्त किया गया है, में पद रिक्त होने की स्थिति में यथावत रखा जावे।
6. उपर्युक्त बिन्दु संख्या 01 से 05 तक की प्रक्रिया के बावजूद समायोजित नहीं हुए शिक्षकों को अधिशेष किया जाकर अन्यत्र पदस्थापन की कार्यवाही काउंसलिंग प्रक्रिया द्वारा की जावे।

प्रवेशित विद्यार्थियों के सम्बन्ध में :-

1. रूपान्तरण से मुक्त किए गए महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम में प्रवेश ले चुके विद्यार्थियों को, रूपान्तरण से मुक्त किए गए विद्यालय के स्थान पर नवीन रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अभिभावकों की सहमति से प्रवेश दिलाया जाए।
2. यदि अन्य अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में सीट रिक्त हो तो, अभिभावकों की सहमति अनुसार उक्त विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाए।
3. यदि अभिभावकों की सहमति नहीं हो तो, रूपान्तरण से मुक्त किए गए उसी विद्यालय में अथवा अन्य निकट के विद्यालय में अभिभावकों की सहमति से हिन्दी माध्यम विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाए।
4. जिन विद्यालयों में पूर्व में प्रवेश प्रक्रिया सम्पन्न की जा चुकी है, वहाँ यदि वर्तमान में कक्षा में प्रवेश के लिए सीटें उपलब्ध (किसी भी कारण से) है तो उक्त सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया के समय बनी प्रतीक्षा सूची से वरीयता अनुसार प्रवेश दिया जाए।
5. जिन विद्यालयों में पूर्व में प्रवेश प्रक्रिया के समय निर्धारित मात्रा में आवेदन प्राप्त नहीं होने कारण सीटें रिक्त रह गई अथवा प्रतीक्षा सूची नहीं है, तो वहाँ पर ''पहले आओ-पहले पाओ'' की नीति के अनुसार प्रवेश देकर सीटें भरी जावे।

उक्त समस्त कार्यवाही प्रवेश के संबंध में पूर्व जारी दिशा-निर्देश दिनांक : 13.07.2022 व दिनांक 16.07.2022 के अनुसार संस्था-प्रधान अपनी देख-रेख में सुनिश्चित करें। किसी भी स्थिति में विद्यार्थियों को अन्यत्र प्रवेश के लिये परेशानी नहीं होनी चाहिए।

● **(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

7. नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में, पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/माध्य/मा-द/अंग्रेजी माध्यम/प्रवेश/66181/2022-23/154 दिनांक : 13.7.2022 ● मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा, (समस्त जिले)। ● संस्थाप्रधान, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय (समस्त)। ● विषय : नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में, पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के संबंध में निम्नांकित प्रावधान किए गए है :-

''नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी यदि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा नियमित नहीं रखना चाहते हो, तो उन्हें नजदीक के हिन्दी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाएगा और अंग्रेजी माध्यम के इच्छुक विद्यार्थी अपने अध्ययन को उसी विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम में नियमित रख सकेंगे।''

राज्य सरकार द्वारा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को उनकी पसंद के माध्यम (हिन्दी या अंग्रेजी) में अध्ययन करने के समान अवसर उपलब्ध हो। अतः ऐसे विद्यार्थी जो रूपान्तरित अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पहले से अध्ययनरत थे तथा अपना अध्ययन हिन्दी माध्यम में जारी रखना चाहते हैं, को उनके चुने हुए विकल्प के हिन्दी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश दिलवाया जाना सुनिश्चित किया जाए। इस हेतु समस्त संस्थाप्रधान, हिन्दी माध्यम में अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थियों को विद्यालय में बुलाकर उनसे नजदीकी हिन्दी माध्यम के विद्यालय का विकल्प (विद्यालय का नाम, जिसमें विद्यार्थी हिन्दी माध्यम में पढ़ना चाहता है) लेकर विद्यालयवार सूची बनाकर संबंधित विद्यालय के संस्थाप्रधान को उपलब्ध करवा कर उसमें प्रवेश करवाना सुनिश्चित करेंगे ताकि वे अपना अध्ययन हिन्दी माध्यम में नियमित रख सकें।

शेष निर्देश संबंधित मूल आदेशों के अनुसार यथावत रहेंगे।

● संलग्न : उपर्युक्तानुसार।

● **(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

8. नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में, पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/माध्य/मा-द/अंग्रेजी माध्यम/प्रवेश/66181/2022-23/112 दिनांक 16.07.22 ● मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा, (समस्त जिले)। ● संस्थाप्रधान, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय (समस्त)। ● विषय : नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में, पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पूर्व में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवेश के संबंध में शासन उप सचिव-प्रथम के पत्र क्रमांक-प.04(15) शिक्षा-1/2019 जयपुर, दिनांक 14.06.2019 के बिन्दु संख्या 03 द्वारा निम्नांकित प्रावधान किए गए है:-

''उस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी यदि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा नियमित नहीं रखना चाहते हो, तो उन्हें नजदीक के हिन्दी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाएगा और अंग्रेजी माध्यम के इच्छुक विद्यार्थी अपने अध्ययन को अंग्रेजी माध्यम में नियमित रख सकेंगे।''

उक्त प्रावधानों के क्रम में स्पष्ट किया जाता है कि पूर्व अध्ययनरत विद्यार्थियों में से उसी विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत रहने का विकल्प देने वाले सभी विद्यार्थी उसी रूपान्तरित अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में अपना अध्ययन नियमित रख सकेंगे।

शेष निर्देश संबंधित मूल आदेशों के अनुसार यथावत रहेंगे।

●संलग्न : उपर्युक्तानुसार।

● **(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

9. शिविरा पंचांग सत्र 2022-23 की अर्द्धवार्षिक परीक्षा तिथियों में संशोधन हेतु।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● आदेश

शिविरा पंचांग सत्र 2022-23 की अर्द्धवार्षिक परीक्षा तिथियों में निम्नांकितानुसार एतद् द्वारा आंशिक संशोधन किया जाता है:-

कार्यक्रम का विवरण	पूर्व घोषित तिथि	संशोधित तिथि
अर्द्धवार्षिक परीक्षा	10 से 23 दिसम्बर, 2022	08 से 20 दिसम्बर, 2022

शेष गतिविधियाँ शिविरा पंचांग सत्र 2022-23 के अनुसार ही संचालित होंगी। समस्त संबंधित उक्त की पालना सुनिश्चित करावें।

● **(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस.** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक :शिविरा/माध्य/मा-स/22418/शिविरा पंचांग/2022-23/ दिनांक : 28.10.2022

शिविरा पञ्चाङ्ग

नवम्बर-2022

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

नवम्बर 2022 ● कार्य दिवस-25, रविवार-04, अवकाश-01, उत्सव-05 ● 03 से 04 नवम्बर : रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता जिला स्तर (RSCERT)। **05 नवम्बर :** कालिदास जयन्ती, सामुदायिक बाल सभा-गांव की चौपाल पर। **8 नवम्बर :** गुरु नानक जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **11 नवम्बर :** राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव)। **14 नवम्बर :** बाल दिवस (पं. जवाहर लाल नेहरु जयन्ती)-(उत्सव), बाल समारोह का आयोजन (समग्र शिक्षा)। **17 नवम्बर :** नेशनल मिन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप परीक्षा (RSCERT) **19 नवम्बर :** श्रीमती इन्दिरा गांधी जयन्ती (उत्सव) सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में), PTM-II (माँ-शिक्षक बैठक-MTM का आयोजन। **19 से 25 नवम्बर :** कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। **22 से 25 नवम्बर :** राज्य स्तरीय विज्ञान मेला (RSCERT) **25 से 26 नवम्बर :** राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन। **26 नवम्बर :** संविधान दिवस (उत्सव)। **नवम्बर-2022 :** मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन यथा:-(1) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा। (2) राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा। (3) राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा। **नोट :** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं यथा-(अ) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, (ब) राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, (स) राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन। ● प्रत्येक मंगलवार-IFA नीली गोली (कक्षा 6-12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1-5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार-विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन-अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। ● DAG की तृतीय बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है। ● जिला स्तरीय रंगोत्सव (शिक्षकों के लिए)नवम्बर के प्रथम सप्ताह में (समग्र शिक्षा) ● राज्य स्तरीय कला उत्सव(विद्यार्थियों के लिए)-नवम्बर के द्वितीय/तृतीय सप्ताह में (समग्र शिक्षा) ● राज्य स्तरीय रंगोत्सव (शिक्षकों के लिए)नवम्बर के अन्तिम सप्ताह मे(समग्र शिक्षा)

Rajasthan Education Department

माह : नवम्बर, 2022	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
01.11.22	मंगलवार	जोधपुर	11	अर्थशास्त्र	4	निर्धनता	मंजू वर्मा
02.11.22	बुधवार	कोटा (जयपुर)	5	गणित	11	समय	निशा मेहरा
03.11.22	गुरुवार	जयपुर	12	जीव विज्ञान	16	पर्यावरण के मुद्दे	अर्चना परमार
04.11.22	शुक्रवार	बीकानेर	9	संस्कृत	3	गोदोहनम	पदमा ठकराल
05.11.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY				गैरपाठ्यक्रम
07.11.22	सोमवार	जयपुर	8	गणित	3	चतुर्भुजों को समझना	डॉ वर्तिका गुलाटी
09.11.22	बुधवार	कोटा (जयपुर)	7	सामा. विज्ञान	6	नगर, व्यापारी और शिल्पजन	अमीता सक्सेना
10.11.22	गुरुवार	उदयपुर	11	इतिहास	2	लेखन कला और शैली जीवन	दीपक सोनी
11.11.22	शुक्रवार	बीकानेर	9	सामा. विज्ञान	1	लोकतंत्र क्या और क्यों	रितु गौड़
12.11.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
14.11.22	सोमवार	जयपुर	बाल दिवस – गैर पाठ्यक्रम (पं. जवाहर लाल नेहरु जयंती)				
15.11.22	मंगलवार	जोधपुर	12	भौतिक विज्ञान	10	तरंग प्रकाशिकी	डॉ महेश चन्द्र शर्मा
16.11.22	बुधवार	कोटा (जयपुर)	7	अंग्रेजी	1	Three Question	स्तुति कटारा
17.11.22	गुरुवार	उदयपुर	10	सामा. विज्ञान	2	भारत का राष्ट्रवाद	किशन दान उज्जवल
18.11.22	शुक्रवार	बीकानेर	6	हिन्दी	9	टिकट अल्बम	अशोक कुमार चौरडिया
19.11.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY			गैर पाठ्यक्रम	इन्दिरा गाँधी जयंती
21.11.22	सोमवार	जयपुर	9	विज्ञान	9	बल तथा गति के नियम	सर्वजीत अरोडा
22.11.22	मंगलवार	जोधपुर	11	भौतिक विज्ञान	12	ऊष्मा गतिकी	डॉ सोनू सांखला
23.11.22	बुधवार	कोटा (जयपुर)	5	गणित	14	परिमाप	संजय जैन
24.11.22	गुरुवार	उदयपुर	12	हिन्दी साहित्य	4	गद्य फणीश्वर नाथ रेणु (संवदिया)	किशन गुर्जर
28.11.22	सोमवार	जयपुर	8	सामा. विज्ञान	1	भारतीय संविधान	सुमन जैन
2911.22	मंगलवार	जोधपुर	3	पर्या. अध्ययन	2	मित्रता	अल्का शर्मा
30.11.22	बुधवार	जयपुर	9	विज्ञान	13	हम बीमार क्यों होते हैं	आशीष गोस्वामी

● कार्य दिवस-23 ● कुल प्रसारण दिवस-23 ● पाठ्यक्रम आधारित-19 ● गैरपाठ्यक्रम-4 ● अवकाश-07

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सूचना

- **प्रत्येक आगामी अंक हेतु रचनाएँ प्रतिमाह की दिनांक 10 तक भेंजे।**
- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

–वरिष्ठ संपादक

शिक्षक की कलम से....

सफलता की कहानी : शिक्षक की ज़ुबानी

❒ अरुणा बैंस

कौन कहता है आसमाँ में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों

मशहूर कवि दुष्यंत की ये पंक्तियाँ किसी भी जुनूनी व्यक्ति से वह कार्य करवा देती हैं जो असंभव सा प्रतीत होता है। ठीक इसी प्रकार की चुनौती का मैंने सामना किया जब माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर नव क्रमोन्नत विद्यालय में पदोन्नती पश्चात प्रधानाचार्य पद पर वर्ष 2015 में मेरा पदस्थापन हुआ।

बीकानेर ज़िले की कोलायत तहसील में स्थित एक छोटे से गाँव 'खारी चारणान' में मेरे पदस्थापन के समय नामांकन वृद्धि, बालिका शिक्षा, सामान्य अनुशासन, पर्यावरण जागरुकता, स्वच्छता कार्यक्रम (ODF), उत्तम परीक्षा परिणाम, स्कूल ड्रॉप आउट, नशामुक्ति और बाल-विवाह जैसी प्रमुख चुनौतियाँ थी जिसका मुझे डट कर सामना करना था। कुम्हार, अनुसूचित जाति और मज़दूर वर्ग के आर्थिक दृष्टि से पिछड़े, व्यापार और वाणिज्य से अभावग्रस्त गाँव में सामाजिक और शैक्षिक उन्नयन की प्रबल आवश्यकता थी। यहाँ के ग्रामीण शिक्षा से अधिक खेती-बाड़ी, पशुपालन और मज़दूरी के व्यवसाय को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। उसकी एक बड़ी वजह भी थी कि गाँव की अधिकांश ज़मीन पथरीली और क्षारीय भूमिगत जल युक्त थी। जहाँ अधिक कृषि उत्पादन संभव नहीं था और शिक्षा विशेष तौर पर बालिका शिक्षा के प्रति अत्यधिक उदासीनता थी। इन्हीं चुनौतियों को मैंने अपनी प्राथमिकताओं में रखा और अपनी स्वयं की सम्पूर्ण क्षमता, अनुभव और कार्यकुशलता के दम पर एक-एक चुनौती का सामना सफलतापूर्वक किया।

चूंकि खारी गाँव में उस समय कक्षा 10 तक पृथक से बालिका विद्यालय मौजूद था जिससे अधिकांश ग्रामवासी अपनी बच्चियों को कक्षा 10 तक ही पढ़ा कर विवाह कर देते थे। यहाँ मेरा सरकारी सेवा के लगभग बीस वर्ष बालिका विद्यालय में शिक्षण करने का अनुभव काम आया। जिससे ग्रामीणों को अपनी बच्चियों को 11 वीं और 12 वीं कक्षा में प्रवेश दिलाने के लिए प्रेरित किया। इसके लिए विद्यालय में उचित शैक्षिक वातावरण, अनुशासन और सम्पूर्ण सुरक्षा का उन्हें विश्वास दिलाया जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2015 में जहाँ विद्यालय में केवल 12 बालिकाएँ थी वो संख्या निरंतर कई गुणा बढ़ गई। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से गाँव के प्रत्येक घर से सम्पर्क कर जागरूकता उत्पन्न की। आज विद्यालय में उच्च माध्यमिक कक्षा में बालिकाओं की संख्या बालकों से कहीं अधिक है। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु मेरे एक नवाचार ने भी सोने पे सुहागे का काम किया। मैंने विद्यालय में होने वाले स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के कार्यक्रमों के अवसर पर गाँव की उच्च शिक्षा पश्चात किसी भी सरकारी सेवा में नियुक्त होने वाली बालिका को झंडारोहण और सम्मान के लिए आमंत्रित किया जिससे विद्यालय में अध्ययनरत अन्य छात्राएँ भी प्रोत्साहित और प्रेरित हों। इस नवाचार से भी विद्यालय में छात्राओं के नामांकन और प्रवेश में आशातीत वृद्धि देखने को मिली।

गाँव में सफ़ाईकर्मी (शौचालयों की सफ़ाई हेतु) का अभाव होने के कारण विद्यालय के शौचालयों की सफ़ाई का आग़ाज़ स्वयं से प्रारम्भ किया और इसे अनवरत जारी रखा। इससे प्रेरित हो कर विद्यालय का शैक्षणिक और ग़ैर शैक्षणिक स्टाफ़ भी शामिल हो गया। इससे विद्यालय के विद्यार्थियों में भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई और वे स्वयं अपने-अपने शौचालयों तथा विद्यालय की सफ़ाई में योगदान देने लगे। इसके लिए विद्यालय के हर कोने में एक-एक कूड़ेदान भी रखवाए गए। सब कुछ स्वतः स्फूर्त था जिसका परिणाम यह निकला कि अधिकांश ग्रामीणों ने अपने आवासों में भी शौचालयों का निर्माण करवा लिया और अपने आवास-परिवेश की स्वच्छता पर भी पूरा ध्यान केंद्रित करने लग गए। गाँव में पृथक से शौचालयों का निर्माण, उनका उपयोग और स्वच्छता के ODF (Open defecation free) अभियान के तहत विशेष कार्य किया जिसके लिए बीकानेर के तत्कालीन ज़िला कलेक्टर महोदय ने 11 नवम्बर 2016 में मुझे प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

स्वच्छता के प्रसार और अनुकरण के लिए मैंने सभी कक्षा-कक्षों के द्वार पर बच्चों और शिक्षकों के लिए विशेष 'जूते-चप्पल स्टैंड' रखवाए जिससे कक्षा में प्रवेश से पूर्व सभी अपने जूते- चप्पल उतारकर और स्टैंड पर क़रीने से व्यवस्थित ढंग से रखें और कक्षा-कक्ष की साफ़-सफ़ाई बरकरार रह सके। इस नवाचार के दूरगामी परिणाम बच्चों में संस्कार के रूप में विकसित हुए, जब मेरी जानकारी में आया कि ये बच्चे अब इस व्यवहार का अनुसरण अपने घरों में भी करने लगे हैं।

किसी भी शिक्षण संस्था या संस्थाप्रधान के समक्ष सबसे महत्त्वपूर्ण सर्वप्रथम चुनौती विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम होती है क्योंकि शिक्षक और विद्यालय का प्रथम उद्देश्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ उचित शिक्षा और ज्ञानोपार्जन होता है। इसके लिए किसी भी संस्था की सर्वप्रथम ज़िम्मेदारी 'स्वतःअनुशासन' को विकसित करने की होती है। अनुशासन ना सिर्फ़ विद्यार्थियों में अपितु स्वयं में और शिक्षकों में भी आवश्यक होता है तभी हम वांछित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थी सर्वप्रथम गंभीरता से अपने शिक्षकों का ही अनुसरण करते हैं और उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। इसके लिए भी स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ता है। यही प्रमुख कारण रहा कि मेरी संस्था में एक ऐसा शैक्षणिक माहौल उत्पन्न हो गया और सतत शिक्षण तत्पश्चात कोर्स की पुनरावर्ती (Revision), निरंतर अंतराल पश्चात् बोर्ड पैटर्न पर टेस्ट लिए जाने लगे। इसके लिए मैं स्वयं भी समय-समय पर विज्ञान विषय के महत्त्वपूर्ण कालांश लेती थी जिससे मेरा भी विद्यार्थियों के साथ परस्पर संवाद होता था और मुझे विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का पता लग जाता था। विद्यालय में बोर्ड परीक्षा परिणामों में उत्कर्ष प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का वार्षिकोत्सव और अन्य बड़े कार्यक्रमों में भामाशाहों की मदद से नक़द इनाम भी दिया जाता था जिससे विद्यालय में एक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण बना रहता था। इसी के परिणाम स्वरूप वर्ष 2015 से वर्ष 2022 तक विद्यालय ने लगातार उत्कर्ष परिणाम दे कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

Rajasthan Education Department

विद्यालय के इन्हीं दृष्टिगत सकारात्मक परिवर्तनों और शैक्षणिक उन्नयन का परिणाम ही था कि खारी गाँव के और आसपास के क्षेत्रों के भामाशाहों ने मेरे विद्यालय पर अपनी कृपा दृष्टि रखनी प्रारम्भ कर दी। उनके सहयोग से अभाव झेलता विद्यालय सर्व सुविधाओं से युक्त हो गया। मेरे कार्यकाल के दौरान भामाशाहों के सहयोग से मीठे ठंडे पेय जल की वाटर कूलर युक्त प्याऊ, परिसर में CCTV कैमरे, विद्युत इन्वर्टर की सुविधा, टेबलें- कुर्सियाँ और अन्य फ़र्नीचर, खेल-कूद का सामान, विद्यालय का भव्य मुख्य द्वार, विद्यालय की चारदीवारी और उस पर उत्तम श्रेणी की तारबंदी और बूँद-बूँद ड्रिप सिस्टम द्वारा विद्यालय में रोपित सैंकड़ों पौधों को लगातार पानी की उपलब्धता आदि अन्य बहुत से कार्य करवाए गए। मैंने स्वयं अपने वेतन से वर्ष 2020 में इकत्तीस हज़ार, वर्ष 2021 में इक्कीस हज़ार और वर्ष 2022 में इक्यावन सौ रुपए का अंशदान कर विद्यालय के विकास के लिए एक तुच्छ प्रयास किया।अधिक से अधिक भामाशाहों को विद्यालय में आर्थिक और अन्य सहयोग के लिए आकर्षित करने हेतु शिक्षा विभाग के आदेशों की अनुपालना में बीकानेर ज़िले की सम्पूर्ण कोलायत तहसील में सर्वप्रथम मेरे विद्यालय ने ही भामाशाहों को उनके योगदान में आयकर की छूट प्राप्त करने के लिए 80G के प्रावधानों के तहत अनुमति प्रमाण पत्र वर्ष अप्रेल 2019 में प्राप्त किया जिसके आशातीत परिणाम दिखाई दिए।

डिजिटल इंडिया के सपने को साकार करने के उद्देश्य से विद्यालय में कम्प्यूटर लैब की स्थापना की गई, जिसमें वीडीयो, पी.पी.टी. आदि साधनों से अधिकाधिक जानकारियाँ उपलब्ध कराना और ऑनलाइन शिक्षण सामग्री का उपयोग करने हेतु प्रेरित करना और कम्प्यूटर की कार्य प्रणाली से अवगत कराना प्रमुख था। इससे विद्यार्थियों को भविष्य में उनकी रुचि अनुसार अपने कॅरियर चुनाव में भी बहुत सहायता मिली।

मेरे इस विद्यालय में पदस्थापन वर्ष की अन्य बड़ी चुनौती विद्यालय परिसर को वृक्ष-वनस्पति विहीन से हरीतिमा युक्त आच्छादित करने का था क्योंकि इस गाँव की पथरीली और क्षारीय लवणीय भूमि में वृक्षारोपण जैसे पुनीत कार्यों में स्थानीय ग्रामीण सहयोग करने से कतराते थे। उनके अनुसार यह कार्य असम्भव सा था। लेकिन परिसर में अतिरिक्त उपजाऊ मृदा डलवाकर विद्यालय के समर्पित स्टाफ़ और विद्यार्थियों के सक्रिय सहयोग से विगत सात वर्षों में परिसर को हरा-भरा और विभिन्न प्रजाति की वनस्पतियों से ओत-प्रोत कर दिया गया। इस कार्य में मेरी वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर (M.Phil.) तक की शिक्षा और मेरे वनस्पतिज्ञ पति डॉ. नवदीप सिंह बैंस (एसोसियेट प्रोफ़ेसर वनस्पति शास्त्र, राज डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर) का भी पूरा सहयोग मिला। बीकानेर के वन विभाग और स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय ने भी मुझे उत्तम श्रेणी के पौधे उपलब्ध करवा कर मेरा भरपूर सहयोग किया। इसके परिणामस्वरूप आज विद्यालय के हरे-भरे परिसर और लगभग पूर्ण विकसित विभिन्न प्रजाति के 200 लहलहाते छोटे बड़े वृक्षों के शुद्ध वायु के स्रोत के रूप में देख कर हर किसी का मन-मस्तिष्क आह्लादित हो उठता है। विद्यालय की इस हरीतिमा को देखते हुए दिनांक 09.08.2022 को वन विभाग बीकानेर द्वारा आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में बीकानेर ज़िलाधीश और संभागीय आयुक्त महोदय द्वारा मुझे प्रथम 'हरित-बीकाणा' पुरस्कार 2022 प्रदान किया गया।

हरा भरा अभियान के इसी क्रम में गाँव के प्रत्येक घर को 'पारिवारिक वानिकी' से जोड़ने और सहभागिता और 'घर-घर सहजन' मुहिम के एक वृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम का भी आयोजन मेरे विद्यालय में किया गया। इसे प्रेरित और प्रसारित करने के लिए 'पारिवारिक वानिकी' सिद्धांत के जनक राष्ट्रपति पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित और UNO के एक उपक्रम UNCCD (United nations conservation to combat desertification) के भूमि संरक्षण 'लैंड फ़ोर लाइफ़ अवार्ड' से वर्ष 2021 में व्यक्तिगत रूप से सम्मानित एकमात्र भारतीय प्रो श्याम सुंदर ज्याणी जी ने विद्यालय शिक्षकों, विद्यार्थियों और ग्रामीणों को 'विशिष्ट अतिथि' के तौर पर संबोधित और प्रेरित किया। प्रो. ज्याणी ने विद्यालय की हरीतिमा से प्रफुल्लित होकर विद्यालय का एक वृत्त चल चित्र बनाया और उसे अपने सोशल मीडिया हैंडल पर साझा किया जिसे आज तक सैंकड़ों लोग देख कर लाभान्वित चुके हैं। (https://fb.watch/gjsZIGaU3u/?mibextid=vilDUR)

एक मध्यमवर्गीय संस्कारित और शिक्षित परिवार में जन्म लेने और होश सम्भालने के पश्चात अभिभावकों की शिक्षा क्षेत्र में उत्कर्ष प्रदर्शन की अपेक्षाओं तथा परिवार में उपलब्ध सीमित संसाधनों के मध्य सामंजस्य स्थापित करते हुए निरंतर श्रमशील रह कर अभिभावकों और शिक्षकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की निरंतर चेष्टा ही थी कि स्वयं कक्षा प्रथम से स्नातकोत्तर की उपाधि तक लगातार प्रथम श्रेणी प्राप्त की और निरंतर अपने शैक्षणिक सफ़र में उत्कर्ष परीक्षा परिणाम दिए। खारी चारणान के विद्यालय को सुसांचलित तरीक़े से चलाने और व्यवस्थित करने में स्वयं के विगत व्याख्याता काल की नौकरी में स्टाफ़ सचिव का अनुभव, पत्र-पत्रिकाओं में लीडरशिप सम्बन्धी प्रेरक आलेखों का अनुसरण और 'स्वयं करके देखो' को ध्येय वाक्य बना कर स्टाफ़ सहयोगियों की घरेलू एवं पारिवारिक समस्याओं और कठिनाइयों के प्रति पूर्ण हमदर्दी एवं दिलासापूर्ण मशविरे ने स्टाफ़ का दिल जीतने में सहयोग दिया जिसके परिणाम स्वरूप स्टाफ़ सदस्यों ने लक्ष्यपूर्ति में सम्पूर्ण तन, मन, धन से सहयोग दिया। यही कारण था कि संस्थाप्रधान के रूप में एक वर्ष से कम अवधि काअनुभव होते हुए भी वर्ष 2016 में बीकानेर ज़िले की 'संस्था प्रधान वाकपीठ कार्यकारिणी' में मुझे उपाध्यक्ष पद पर चयनित किया गया।

मेरे आदर्श हमेशा मेरे पिता स्व. श्री ओम प्रकाश गौड़ रहे हैं जिनका नाम आज भी राज्य के लेखा विभाग में एक ईमानदार, कर्मठ, जुझारू और श्रेष्ठ लेखाधिकारी के रूप में लिया जाता है जिन्होंने स्वयं सरकारी सेवा में रहते हुए सायंकालीन कक्षाओं में अध्ययन करते हुए उच्च शिक्षा की उपाधियाँ (M and LLB) प्राप्त की थीं और शिक्षा निदेशालय बीकानेर में सहायक लेखाधिकारी (O) के पद पर रहते हुए उनका वर्ष 1993 में हृदयघात से निधन हो गया था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद सदैव मुझे ईमानदारी और कर्मठता के पथ पर निरंतर अग्रसर करता रहेगा और शक्ति प्रदान करेगा।

मशहूर शायर जनाब मजरूह सुल्तान पुरी जी के इस शेर 'मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंज़िल, मगर लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया' को एक संस्थाप्रधान के रूप में आत्मसात करके यदि हम कोई भी नवाचार या सामाजिक और शैक्षणिक उत्थान का बीड़ा उठाए तो अवश्य ही ईश्वर भी हमारी मदद करता है। मेरा सभी शिक्षक साथियों से ये विनम्र आग्रह है और आशा-विश्वास भी है कि यदि हम पूरी ईमानदारी, कर्मठता और कर्त्तव्यपूर्वक अपने कार्यों का निर्वहन करें तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा सम्पूर्ण भारत विश्व पटल पर एक विश्वगुरु की तरह देदीप्यमान प्रकाशित होगा।

रीडर
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE),
बीकानेर **मो: 9414324470**

Rajasthan Education Department

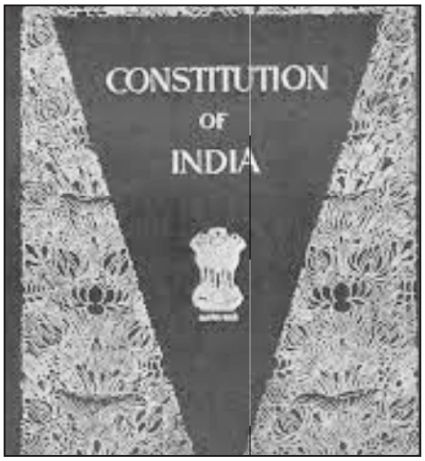

संविधान दिवस विशेष

भारतीय संविधान व सशक्त भारत

❒ कमलेश कटारिया

संविधान किसी भी देश की मूलभूत तथा सर्वोच्च विधि होती है। संविधान लिखित या अलिखित नियमों अथवा कानूनों का समूह होता है जिसके माध्यम से किसी भी देश के शासन को संचालित किया जाता है। संविधान के द्वारा ही शासन के तीनों अंगों कार्यपालिका, व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका की स्थापना की जाती है एवं जनता तथा सरकार के मध्य सम्बधों का निर्धारण किया जाता है।

के.एम. मुंशी ने संविधान को देश की आत्मा की संज्ञा दी है। भारतीय संविधान हमारे राष्ट्र की अमूल्य थाती एंव विरासत है जिसे हम सभी भारतीयों के कंधों पर इसे अखण्ड एवं अक्षुण्ण बनाए रखने की जिम्मेदारी है। भारतीय संविधान सम्पूर्ण विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। वर्तमान में भारतीय संविधान में 395 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियाँ एवं 22 भाग है । मूल संविधान में 8 अनुसूचियाँ हैं।

भारतीय संविधान के निर्माण से पूर्व अपना राष्ट्र ब्रिटिश नियमों व कानूनों द्वारा संचालित होता था, लेकिन भारत को स्वंतत्रता प्राप्त होने पर भारतीय लोगो द्वारा एक अलग व स्वयं के संविधान की मांग की गई। संविधान सभा के माध्यम से सर्वप्रथम औपचारिक रूप से संविधान की मांग करने वाला पहला भारतीय एम.एन. राय (मानवेन्द्रनाथ राय) थे।

1928 में पहली बार भारतीय संविधान का निर्माण मोतीलाल नेहरु द्वारा किया गया 24 मार्च 1946 को कैबिनेट मिशन भारत आया। 1946 के कैबिनेट मिशन योजना के द्वारा संविधान सभा का गठन किया गया। संविधान सभा से तात्पर्य यह है कि लोकतांत्रिक देशों में संविधान निर्माण के लिए गठित प्रतिनिधियों की संस्था को संविधान सभा की संज्ञा दी जाती है। संविधान सभा के द्वारा संविधान का निर्माण उसके विविध पक्षों पर विचार, उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है एवं निर्माण के पश्चात उस संविधान को अंगीकार भी किया जाता है।

स्वतंत्रता के पश्चात नए संविधान के लागू होने तक भारतीयों ने 1935 के अधिनियम के तहत ही शासन किया था।

संविधान सभा के द्वारा अपनी समस्त कार्यप्रणाली का सम्पादन 12 अधिवेशन तथा 105 बैठकों के माध्यम से सम्पन्न किया गया।

भारतीय संविधान के निर्माता भारत रत्न, स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री डॉ. भीमराव अंबेडकर थे। डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारतीय संविधान का जनक, शिल्पी व रचनाकार भी कहा जाता है। भारतीय संविधान को बनने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन का समय लगा था। भारतीय संविधान की आत्मा 'प्रस्तावना' को कहा जाता है।

प्रस्तावना:– ''हम भारत के लोग भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न समाजवादी,पंथ निरपेक्ष,लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता व अखंडता सुनिश्चित कराने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर 1949 ईस्वी (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी संवत 2006 विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।''

भारतीय संविधान सभी देशों के सभी संविधानो को छानकर, सभी से तुलना करके बेहतर से बेहतर विषय वस्तु अपने संविधान में शामिल करने का पूरा प्रयास किया गया है। इसलिए भारतीय संविधान में प्रस्तावना अमेरिका से, मूल अधिकार ब्रिटेन से, नीति निदेशक तत्व आयरलैंड से, मूल कर्तव्य सोवियत संघ से और संविधान संशोधन की शक्ति दक्षिण अफ्रीका से ली गई है। भारतीय सविधान कठोरता व लचीलापन का संयुक्त मिश्रण है। 26 नवंबर 1949 को भारतीय संविधान आंशिक रूप से लागू हुआ था, इसलिए 26 नवंबर को संविधान के प्रारंभ की तिथि विधि दिवस के रूप में मनाया जाता है एवं वर्ष 2015 से डॉ. भीमराव अंबेडकर की 125 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में संविधान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 इस दिन भारतीय गणराज्य को लागू किया गया तथा संविधान सभा को अंतरिम संसद के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। लाहौर अधिवेशन के ऐतिहासिक महत्त्व के कारण भारत का संविधान 26 जनवरी को लागू किया गया क्योंकि लाहौर अधिवेशन (31 दिसंबर 1929) में भारतीयों ने स्वतंत्रता की तिथि 26 जनवरी निर्धारित की थी। भारतीय संविधान में संशोधन करने की भी प्रक्रिया है जो दक्षिण अफ्रीका से ग्रहण की गई है इसके तहत वर्तमान में भारतीय संविधान में अब तक 104 संशोधन हो चुके हैं।

समस्त भारतीयों का यह परम कर्त्तव्य है कि हम सभी मिलकर भारत के संविधान को अखण्ड व अक्षुण्ण बनाए रखें। भारतीय संविधान की वजह से शोषित, वंचित, दलित व महिलाओं को अधिकार मिले हैं, सभी को समानता के अवसर प्राप्त हुए हैं, सभी को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय की प्राप्ति हुई है।

अतः हमारा यह परम सौभाग्य है कि हम भारत वर्ष के निवासी हैं एवं इतना स्पष्ट एवं सुंदर व विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान हमें प्राप्त हुआ है।

आओ हम इसे अपने भीतर समाहित कर भारतीय नागरिक होने के नाते अपने कृतव्यों का निर्वहन करें और भारत को सशक्त बनाएँ।

अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)
तिंवरी, जिला जोधपुर (राज.)-342306
मो: 9783182683

Rajasthan Education Department

अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस

❒ डॉ. सुशीला बलौदा

प्राचीन काल से ही महिलाओं का भारतीय समाज में सम्मानजनक स्थान रहा है। वे समाज का अभिन्न अंग रही हैं, उनके बिना समाज की कल्पना करना ही बेकार है। शास्त्रों में भी कहा गया है – 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता' अर्थात जहाँ पर महिलाओं की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल में अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, गार्गी जैसी विदुषियों ने भारतीय समाज का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया, वहीं आधुनिक युग में सरोजनी नायडू, इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, मैरीकॉम, मदर टेरेसा, द्रौपदी मुर्मू, प्रतिभा पाटिल, मीरा कुमार, कृष्णा पूनियाँ, वसुंधरा राजे, स्मृति ईरानी, ममता बनर्जी, मायावती आदि न जाने कितने नाम हैं, जिन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों में देश का नाम रोशन किया है। इन्होंने कभी भी अपने को पुरुषों से कम नहीं माना। ऐसे और भी उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं।

सवाल यह है कि जहाँ देश एक तरफ आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, वहीं आज भी नारी अशिक्षा, महिला- हिंसा, दहेज, उत्पीड़न, भ्रूण हत्या, लड़का-लड़की में भेद, बाल-विवाह जैसी समस्याएँ जस की तस बनी हुई हैं। नतीजन अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस मनाकर लोगों को जागरूक करना पड़ रहा है कि महिलाओं को भी समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होना चाहिए, उसे भी पढ़ने का बराबर का दर्जा मिले।

अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस कब मनाया जाता है?– संपूर्ण विश्व में महिलाओं के प्रति हिंसा, शोषण एवं उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं के उन्मूलन हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) द्वारा प्रतिवर्ष 25 नवंबर को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस' मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन कार्यक्रम के तहत वर्ष 2008 से 2030 यूनाइट अभियान चलाया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस क्यों मनाया जाता है?– 25 नवंबर 1960 को डोमिनिकन शासक ट्रुजिलो की तानाशाह का विरोध करने वाली तीन बहनों पैट्रिया मर्सिडीज मिराबैल, मारिया अर्जेन्टीना मिनेर्वा मिराबैल तथा एंटोनिया मारिया टेरेसा द्वारा हत्या कर दी गई थी। 1981 से महिला अधिकारों के समर्थकों द्वारा इन तीनों बहनों की स्मृति में इस दिवस को मनाने की शुरुआत की गई। 7 फरवरी 2003 को यूएनओ द्वारा इस दिन को आधिकारिक तौर पर अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में मान्यता दी गई।

अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस को मनाने का उद्देश्य क्या है?– इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर में महिलाओं के विरुद्ध हो रहे बलात्कार,घरेलू हिंसा व हिंसा के अन्य रूपों के प्रति लोगों को जागरूक करना है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) द्वारा जारी भारत में महिलाओं पर हिंसा के आंकड़े–

- एनसीआरबी के आँकड़े भी महिलाओं के खिलाफ आपराधिक घटनाओं में वृद्धि को स्पष्ट करते हैं। इन अपराधों में बलात्कार, घरेलू हिंसा, मारपीट, दहेज प्रताड़ना, एसिड हमला, अपहरण, मानव तस्करी, साइबर अपराध और कार्यस्थल पर उत्पीड़न आदि शामिल हैं।
- एनसीआरबी के आँकड़ों के अनुसार साल 2021 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 4,28,278 मामले दर्ज किए गए। 2020 के मुकाबले महिला अपराध में 15.3 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।
- एनसीआरबी के 2021 के आँकड़ों के अनुसार महिलाओं के खिलाफ अपराध के सबसे ज्यादा 56,083 मामले उत्तरप्रदेश में दर्ज किए गए हैं। उत्तरप्रदेश के बाद राजस्थान में महिला अपराध से संबंधित सर्वाधिक मामले दर्ज हुए।
- एनसीआरबी के आँकड़ों के अनुसार 2021 में देशभर में दुष्कर्म के कुल 31,677 मामले दर्ज हुए। यानी हर रोज औसतन 86 से ज्यादा महिलाएँ दुष्कर्म का शिकार हुई। 2020 के मुकाबले दुष्कर्म के मामलों में करीब 13 फीसदी का इजाफा हुआ। राजस्थान में दुष्कर्म के सबसे ज्यादा 6,337 मामले दर्ज हुए। दूसरा स्थान मध्यप्रदेश का है।

महिला हिंसा के प्रमुख कारण–

- समाज में लैंगिक जागरूकता का अभाव
- पुरुष प्रधान समाज
- कुछ लोगों की संकीर्ण मानसिकता
- पुरुषों पर महिलाओं का अत्यधिक निर्भर होना
- कानून का लचीलापन
- समाज द्वारा लैंगिक हिंसा को मौन सहमति
- पुरुष और महिलाओं के बीच शक्ति एवं संसाधनों का असमान वितरण
- दोषियों को समय पर सजा नहीं मिलना

लैंगिक समानता हेतु भारतीय संविधान में संवैधानिक प्रावधान–

भारतीय संविधान में लैंगिक समानता हेतु निम्न प्रावधान किए गए हैं –

- संविधान के अनुच्छेद 14 में कानूनी समानता
- संविधान के अनुच्छेद 15(3) में जाति, धर्म, लिंग एवं जन्म स्थान आदि के आधार पर भेदभाव न करना
- संविधान के अनुच्छेद 16(1) में लोक सेवाओं में बिना भेदभाव के अवसर की समानता
- संविधान के अनुच्छेद 19(1) में समान रूप से अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
- संविधान के अनुच्छेद 21 में स्त्री एवं पुरुष दोनों को प्राण एवं दैहिक स्वाधीनता से वंचित न करना
- संविधान के अनुच्छेद 23-24 में शोषण के विरुद्ध अधिकार
- संविधान के अनुच्छेद 25-28 में धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार
- संविधान के अनुच्छेद 29-30 में शिक्षा एवं संस्कृति का अधिकार
- संविधान के अनुच्छेद 32 में संवैधानिक उपचारों का अधिकार
- संविधान के अनुच्छेद 33(क) में प्रस्तावित 84वें संविधान संशोधन के जरिए लोकसभा में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था
- संविधान के अनुच्छेद 39(घ) में पुरुषों

Rajasthan Education Department

एवं स्त्रियों दोनों को समान कार्य के लिए समान वेतन का अधिकार
- संविधान के अनुच्छेद 40 में पंचायती राज्य संस्थाओं में 73वें और 74वें संविधान संशोधन के माध्यम से आरक्षण की व्यवस्था
- संविधान के अनुच्छेद 41 में बेकारी, बुढ़ापा, बीमारी और अन्य अभाव की दशाओं में सहायता पाने का अधिकार
- संविधान के अनुच्छेद 42 में महिलाओं हेतु प्रसूति सहायता प्राप्ति की व्यवस्था
- संविधान के अनुच्छेद 47 में पोषाहार, जीवन स्तर एवं लोक स्वास्थ्य में सुधार करना सरकार का दायित्व है
- संविधान के अनुच्छेद 51(क) में भारत के सभी लोग ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हो
- संविधान के अनुच्छेद 332 (क) में प्रस्तावित 84 वें संविधान संशोधन के जरिए राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण

महिलाओं की सुरक्षा हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण कानून – भारत में महिलाओं की सुरक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण कानून निम्न हैं –
- स्त्री की लज्जा हेतु भारतीय दंड संहिता में प्रावधान– आईएपीसी की धारा 354
- बलात्कार एवं अत्यंत जघन्य अपराध – आईएपीसी की धारा 376
- पति या पत्नी के जीवित रहते पुन: विवाह करना – आईएपीसी की धारा 494
- दहेज निषेध अधिनियम 1961 और 1986
- हिंदू विवाह अधिनियम 1955
- घरेलू हिंसा से संबंधित महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005
- महिला आरोपी की दण्ड प्रक्रिया संहिता 1973
- गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम 1971
- भ्रूण लिंग चयन निषेध अधिनियम 1994
- अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम 1956
- कार्यस्थल पर महिलाओं के सम्मान की सुरक्षा के लिए वर्कप्लेस बिल, 2012
- पोक्सो अधिनियम, 1992
- सती प्रथा रोकथाम अधिनियम 1987
- राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम 1990
- घरेलू हिंसा अधिनियम 2005

महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के उपाय –
- विद्यमान कानून की सख्ती से पालना हो
- महिला हिंसा से संबंधित मामलों का निपटारा फास्ट ट्रैक कोर्ट के माध्यम से हो
- निर्भया फंड का कुशल कार्यान्वयन हो
- महिला हिंसा रोकने हेतु महिला पुलिस थानों की संख्या एवं महिला पुलिस थाना अधिकारियों की संख्या बढ़ाना
- सार्वजनिक परिवहन में सीसीटीवी और पैनिक बटन अनिवार्य किया जाना
- जिला एवं ब्लॉक स्तर पर गठित महिला निस्तारण समिति की मॉनिटरिंग करना
- विद्यालयों में स्थापित गरिमा पेटिका में प्राप्त शिकायतों का अविलंब एक समिति बनाकर निस्तारण करना
- स्थान–स्थान पर महिला सुरक्षा हेल्प लाइन नम्बर लिखवाना
- काले शीशों वाले वाहनों पर परिवहन विभाग द्वारा कार्यवाही करना

अन्त में मैं यहीं कहना चाहूँगी कि केवल कानून बनाने से महिला सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो जाती है, सरकार कड़ाई से इन कानूनों की पालना करवाएँ एवं पीड़ित परिवार को त्वरित न्याय प्रदान करें। दोषियों को सख्त सजा मिले एवं लोगों में जागरूकता फैलाएँ।

प्रधानाचार्य
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
राजगढ़, चूरू (राज.)
मो: 7014507317

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर
प्रभाग-4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर
November - 2022
Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3zmp8Zg		7	Class VII	https://bit.ly/3U1MBae	
2	Class II	https://bit.ly/3DGeQWk		8	Class VIII	https://bit.ly/3TLKx6v	
3	Class III	https://bit.ly/3U6qL58		9	Class IX	https://bit.ly/3WaI8Un	
4	Class IV	https://bit.ly/3zkqrrS		10	Class X	https://bit.ly/3zmXBaj	
5	Class V	https://bit.ly/3gQcCej		11	Class XI	https://bit.ly/3gRnjNL	
6	Class VI	https://bit.ly/3DOiuhj		12	Class XII	https://bit.ly/3gRnwAx	

Rajasthan Education Department

शाला दर्पण

प्रबंध पोर्टल और समावेशी शिक्षा

❐ हेमेन्द्र कुमार सोनी

प्रबंध पोर्टल– इसका पूरा नाम (PRABANDH PORTAL- PROJECT Appraisal, Budgeting, Achievements and Data Handling System) है अर्थात परियोजना मूल्याकंन, बजट, उपलब्धियां और डेटा हेण्डलिंग है। इसे संक्षिप्त में प्रबंध पोर्टल कहते हैं।

प्रबंध पोर्टल संचालन का उद्देश्य–यह विद्यालय शिक्षा के लिए एक केन्द्र प्रायोजित एकीकृत योजना–समग्र शिक्षा के कार्यान्वयन का प्रबंधन करने हेतु प्रौद्योगिकी से लिया गया सहयोग है। इसे मुख्य रूप से–

1. यह अनुमोदन, विज्ञप्ति, वित्तीय स्थिति के संबंध में प्रणाली को पारदर्शी और सटीक उपयोग हेतु संचालित किया जा रहा है।
2. यह व्यवस्था कार्यान्वयन के लिए वित्त की वास्तविक आवश्यकता का अधिक सटीक मूल्याकंन एवं वित्तीय प्रबंधन प्रणाली को भी सुव्यस्थित करता है।

प्रबंध पोर्टल पर इन्द्राज क्यों जरूरी– यह व्यवस्था शिक्षा मंत्रालय से होने के कारण लाभार्थी विद्यार्थियों का इन्द्राज इस पर किया जाना अनिवार्य है। यह एक मॉनिटरिंग पोर्टल है।

प्रबंध पोर्टल पर विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं का इन्द्राज–शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार इन विद्यार्थियों को इन्द्राज किया जाना अति आवश्यक है। इसके अभाव में बच्चों के चिह्नीकरण, इनकी श्रेणियाँ तथा देय लाभ की निगरानी किया जाना कठिन है। बजट प्रावधान के लिए यू डाइस तथा विद्यार्थी का डेटाबेस हेतु शाला दर्पण तथा मॉनिटरिंग के लिए प्रबंध पोर्टल तीनों ही व्यवस्था में डेटा समान होने चाहिए। डेटा के अभाव में बजट प्रावधान किए जाने में कठिनाई हो सकती है। अत: अन्य के साथ इन विद्यार्थियों का इन्द्राज भी इस पोर्टल पर अनिवार्य है।

प्रविष्टि की प्रक्रिया–प्रबंध पोर्टल पर विद्यार्थी डेटा का इन्द्राज निम्नानुसार की प्रक्रिया से किया जा सकता है।

1. गुगल खोलने के बाद एड्रेस बार में PRABANDH PORTAL लिखेंगे। जिससे प्रबंध पोर्टल का पेज खुलेगा।

2. प्रदर्शित पेज में आईडी, पासवर्ड एवं केप्चा की पूर्ति करने के बाद लॉग इन करना होगा। इस प्रकार से आपके सिस्टम पर प्रबंध पोर्टल खुल जाएगा।

3. प्रबंध पोर्टल पर प्रदर्शित पेज में Home, Entry, Reports, AWP & B, Profile, Freeze,Dowliads, Teacher Education, Help, Gallery, Logout दिखाई देंगे।

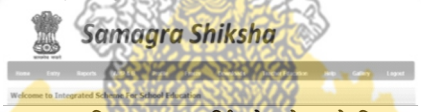

4. बिन्दु 3 पर प्रदर्शित पेज के दूसरे विकल्प एन्ट्री पर जाएँगे तो एक सब डायलॉग बाक्स खुलेगा जिसमें अन्तिम विकल्प पर CWSN लिखा हुआ है।

5. बिन्दु 4 के अनुसार CWSN विकल्प पर जाएँगे तो Girls Boys लिखा एक डायलॉग बाक्स और खुलेगा।

6. बिन्दु 4 पर प्रदर्शित Girls Boys विकल्प पर जाएँगे तो स्टूडेन्ट एन्ट्री का विकल्प आएगा जिसे खोलने पर प्रविष्ठी हेतु एक पेज दिखाई देगा।

7. प्रदर्शित पेज पर प्रथम बालिका एवं द्वितीय बालक के लिए विकल्प आता है। जिसमें से प्रथम विकल्प पर बालिकाओं का इन्द्राज होगा। विकल्प में जिला, वित्तीय वर्ष, यू डाइस कोड की पूर्ति करते ही विद्यालय का नाम स्वत: ही प्रदर्शित होगा।

8. अगले पेज पर बालिकाओं से संबंधित जानकारियाँ कॉलम में बिना रूके इन्द्राज करते ही उसे सबमिट करना है। एक इन्द्राज के लिए लगभग 1 मिनट का समय निर्धारित होता है। जिसमें प्रविष्टि को सबमिट करना होता है। समय निकल जाने पर इन्द्राज की गई प्रविष्टियाँ सबमिट नही होगी। सबमिट की सफलता का संदेश आते ही अगली प्रविष्टि का इन्द्राज करना होगा।

9. इसी प्रकार से बालक के लिए स्टूडेन्ट एन्ट्री का विकल्प खोलकर विद्यार्थी का नाम, पिता का नाम, माता का नाम, मोबाइल नम्बर, पता, पिन कोड, आधार कार्ड, जन्म दिनांक, कक्षा, प्रकार (डे स्कॉलर या छात्रावास) दिव्यांगता की श्रेणी (दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार), बैंक विवरण (खाता संख्या, आईएफएससी कोड, आधार खाते से जुड़ा है या नही, राशि हस्तान्तरण का प्रकार, बैंक का नाम) आदि प्रविष्टियाँ की जाती है। अगली प्रविष्टि के लिए एड न्यूरॉ के विकल्प को खोलने पर एक पंक्ति और खुल जाएगी जिसमें दूसरे बच्चें का इन्द्राज करना है। इस प्रकार से प्रबंध पोर्टल पर विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं की प्रविष्टि की जाती है।

यह विशेष ध्यान रखें की यू डाइस, शाला दर्पण व प्रबंध पोर्टल तीनों की प्रविष्टि संख्या एक जैसी हो।

संदर्भ व्यक्ति (CWSN) समग्र शिक्षा,
चित्तौड़गढ़, **मो: 9588873394**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

बस्ता मुक्त दिवस : विद्यार्थियों को तनाव मुक्त रखने की आधारशिला

❒ डॉ. आज़ाद सिंह

राजकीय विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को बस्ता मुक्त दिवस मनाया जाता है। सप्ताह में 1 दिन सभी सरकारी विद्यालयों में शनिवार को विद्यार्थियों को बैग नहीं ले जाने व उस दिन कोई अध्यापन कार्य नहीं किए जाने का सरकार द्वारा निर्णय लिया गया है। सत्र 2022-23 से प्रत्येक शनिवार को बस्ता मुक्त दिवस मनाया जा रहा है।

सरकार के इस निर्णय से जहाँ मासूमों के चेहरे खिल उठे वहीं शिक्षकों को इस नवाचार के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ अनौपचारिक संबंध स्थापित करने का अवसर मिला है। निर्धारित मापदंडों के अनुसार बालकों के स्कूल बैग का वजन उसके स्वयं के वजन के 10 फीसदी से ज्यादा नहीं होना चाहिए। इन मापदंडों को सकारात्मक रूप से लेते हुए व विद्यार्थियों में समग्र विकास की दिशा में पढ़ने के साथ बस्ते के बोझ से मुक्त करने का यह निर्णय स्कूल शिक्षा के लिए ऐतिहासिक है। 2 जुलाई 22 शनिवार को राजस्थान के विद्यालयों में विधिवत् रूप से बस्ता मुक्त दिवस मनाया गया जिसके आशातीत परिणाम सामने आए हैं।

अब खेल-खेल में सीखने की प्रवृत्ति विकसित करने के साथ-साथ शिक्षकों में नवाचार से पढ़ाने का एक मंच बन गया शनिवार। मासूमों के खिले चेहरे अध्यापकों को उनकी ओर आकर्षित होने का निमंत्रण देते दिखाई दिए मानो उनकी जुबान नहीं आँखें कह रही है- मुझमें भी प्रतिभा छिपी है मेरी अंतर्निहित क्षमताओं का मुझसे भी प्रदर्शन कराओ। शनिवार को इसी बाल मनोविज्ञान को समझकर शिक्षक विद्यार्थियों में अंत: संबंध स्थापित हुआ और दोनों के बीच की समझ ने विद्यालयों में उत्सव के वातावरण का निर्माण कर दिया।

इस कार्यक्रम को मनाने में शिक्षकों व विद्यार्थियों में जो उमंग व उत्साह दिखाई दिया उससे विद्यालय में एक उत्सव-सा दृश्य बन गया। कार्यक्रम में प्रस्तुत विद्यार्थियों के भावों के उद्गार सहज सौंदर्य लिए हुए थे। लरजते-गरजते बादलों की बूंदों से भीगती उनकी प्रस्तुतियाँ बरबस ही आकर्षण के केंद्र बन गई थी। उनके गीतों की सुमधुर झलक-झंकार, चटकीली-सुरीली और वातावरण को प्रस्फुटित करने वाली थी। इस दिवस को मनाने के लिए शनिवार के दिन समय सीमित था पर विद्यार्थियों का उत्साह असीमित था। उत्साह की इस फुलवारी को सुशोभित करने वाले चुनिंदा फूलों को संग्रहित कर विद्यालय को गुलजार करने का यह सराहनीय प्रयास रहा। बस्ता मुक्त दिवस हुड़दंग व कौतुहल न बन जाए इस बात को ध्यान में रखते हुए विभाग ने विशेष प्रबंध कर नियत कार्यक्रम के संचालन की क्रमबद्ध योजना बनाई है। प्रत्येक शनिवार को एक विशेष थीम को रेखांकित किया गया है। शिक्षक इस दिवस पर विशेष थीम पर फोकस करते हुए पारंपरिक अध्यापन के इतर योजनाबद्ध तरीके से विविध गतिविधियों के माध्यम से सीखने के संस्कार देंगे।

तेज-प्रताप, शौर्य-पराक्रम की भूमि राजस्थान में मातृभूमि के लिए न्योछावर होने की सौगंध खाने वाले अनेक योद्धा हुए जिनका जीवन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत है तो दूसरी ओर इस रंग रंगीली राजस्थान की सौंधी मिट्टी के कण-कण में लोक संस्कृति के रंग बिखरे पड़े हैं। वर्ष भर राजस्थान में वीरों की गाथाओं व विशिष्ट लोक उत्सव की धूम रहती है। सप्ताह भर में सोमवार से शनिवार आने वाले इन अवसरों को संकलित कर प्रत्येक शनिवार को विद्यालय में बस्ता मुक्त दिवस के अवसर पर उत्सव के रूप में समारोह पूर्वक विधिवत मनाया जाने का शिक्षा विभाग ने प्रावधान किया है। इस व्यवस्था से पूर्व तैयारी व पूर्ण तैयारी के भाव विद्यार्थियों में जाग्रत होंगे। आयोजन से पूर्व ही सप्ताह भर की रूपरेखा तैयार होकर व्यवस्थित रूप में शनिवार को प्रस्तुत की जाएगी। इससे नियमित रूप से पढ़ाई के बीच में आने वाले कार्यक्रमों के स्थान पर निश्चित दिवस पर मनाए जाने से उत्साह और उमंग के साथ रोमांच बढ़ेगा।

निश्चित दिवस पर ही संपूर्ण सहगामी गतिविधियाँ आयोजित होने से श्रम और समय की बचत के साथ विद्यार्थियों की स्वस्थ मानसिकता पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। इस विषय को ध्यान में रखते हुए सरकार ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर, राजस्थान शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर, विभिन्न अभिकरण एवं विभाग द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों हेतु आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताएँ, कार्यक्रम सहित विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सभी सृजनात्मक कौशल विकास, वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं अभिरुचि विकास से संबंधित क्रियाकलापों को बस्ता मुक्त दिवस पर ही मनाने का निश्चय किया है। विद्यालय हित के व्यापक दृष्टिकोण में स्थानीय स्तर पर मनाए जाने वाले सभी कार्यक्रमों का समाहार करते हुए बाल सभा में मासिक बैठक, पी.टी.एम, एसडीएमसी/ एसएमसी, मीना/ राजू /गार्गी मंच आदि बैठकों को भी इसी दिवस में समाहित कर प्रत्येक दृष्टि से बस्ता मुक्त दिवस को उपयोगी व प्रासंगिक बनाया गया है।

बस्ता मुक्त दिवस को और अधिक सार्थक बनाने के लिए इसे गाँधी जी की मूल अवधारणा में से एक बुनियादी शिक्षा से जोड़ा गया है। गाँधीजी मानते थे कि शिक्षा को विद्यार्थियों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वयं रोजगार योग्य हो जाएं जो शिक्षा उसके जीविकोपार्जन में पूर्ण सहायता कर सकती हो जिससे विद्यार्थी समाज में उत्पादक के रूप में कार्य कर सके न कि सिर्फ उपभोक्ता का ही कार्य करें इसलिए गाँधीजी हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा पर बल देते थे। इसके द्वारा विद्यार्थी विशेष ज्ञान प्राप्त कर अपने कौशल को और अधिक विकसित कर सकता है। बस्ता मुक्त दिवस पर प्रतिमाह एक दिवस पर पारंपरिक घरेलू कुटीर उद्योग का विद्यालय क्षेत्र की प्रचलित घरेलू उद्योग के आर्टिजन को विद्यार्थियों के बीच कार्यक्रम में आमंत्रित करके प्रदर्शन कराया जाए। हस्तकला का प्रत्यक्ष प्रदर्शन कराने से विद्यार्थी में रुचि के साथ उस कला को समझने का उत्साह जागेगा।

निश्चित रूप से सरकार द्वारा बस्ता मुक्त दिवस के लिए क्रमबद्ध -योजनाबद्ध तरीके से प्रभावी रूपरेखा तैयार की गई है। अब हम शिक्षकों, अभिभावकों व विद्यालय शाला प्रबंधन समिति की जवाबदेही बढ़ गई है कि किस प्रकार हम सामूहिक रूप से इस दिवस पर होने वाले कार्यक्रमों की शृंखला को विद्यार्थी हित में रुचि कर और आनंददायी बनाकर बच्चों के बीच इसे उपयोगी एवं लोकप्रिय बनाएं। इस नवाचार के माध्यम से विद्यार्थियों को तनावमुक्त रखकर उनका शारीरिक और बौद्धिक विकास करके सर्वांगीण संस्कार प्रदान करना ही हमारी केंद्रीय प्रतिज्ञा है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मामोर,
सांगोद, कोटा (राज.), **मो: 9929099570**

Rajasthan Education Department

Suggesting, Persuading and Feedback in the Classroom

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

Feedback supports students to know where and how to improve and it can support their motivation to invest effort in making improvements. It is an integral part of Assessment for Learning. Well-timed feedback can support cognitive processes for better performance, guiding students to more information and suggesting directions and/or alternative strategies they. Could pursue in order to improve. Feedback can also engage students in meta-cognitive strategies such as goal setting, task planning, monitoring and reflection which are important skills for self-regulated learning. Feedback can influence students' affective processes, improving effort, motivation and engagement. The phrases help the teachers to use classroom communication for the purpose of Suggesting, Persuading and Feedback.

- How about another song, children?
- What about trying it once more?
- How about Shashi coming out and trying?
- What about you reading, Shailesh?
- How about that one, Lakshni?
- OK, the next one. How about you, Geeta?
- What if we leave this exercise until next time?
- What if you finish this off at home?
- What if we change(d) the word order?
- What if you started) with 'Yesterday'?
- What if you (were to) put the verb at the end?
- Let's start now.
- Let's finish this off next time.
- 'Let us' is archaic and formal so should not be used.
- I think we ought to revise these points.
- I think you should concentrate on number 3.
- Number 6 can be left out, don't you think?
- We can finish this next time, don't you think?
- Perhaps you ought to translate this paragraph.
- You could check the vocabulary at the back perhaps.
- You may sit down now.
- You can leave question 8 out.
- Why don't you.....
- I'd recommend.....
- You needn't do the first three.
- Let's not waste any more time.
- Don't let's bother with number 10.
- There's no need to translate everything.
- There's no need to do number 5.
- It might be a good idea to try this one again.
- It would be a good idea for you to write this down.
- It wouldn't be a bad idea if you do this at home.
- It mightn't be a bad idea to try this once again.
- Please practice on computer.
- Bring your Home Work note book daily.
- Please accompany me to the post office.
- Will you please teach me how to use excel sheet?
- Conic on, Let's go to a movie.

Feedback on Homework- Instead of just 'good' (positive feedback) and 'not very good' (negative feedback) here are some more expressions you can use from the start when praising or correcting students' work.

- Good job!
- Brilliant
- Good work!
- Appreciate your efforts
- Creative
- Splendid
- Terrific
- Outstanding
- Remarkable
- Exceptional
- Exemplary
- Fantastic
- A splendid job
- Clear & concise
- Great going
- Neat work
- Wow!
- Superb
- Marvelous
- I like it!
- Great stuff!
- That's it!
- Well done!
- Very good!
- You amaze me!
- Your efforts paid off/are visible
- Today, I'm happy with you
- Magnificent!
- Yes!
- Right!
- Fine
- Very good
- That's very good.
- Yes, you've got it.
- Fantastic!
- Very fine
- That's nice.
- I like that.
- You did a great job.
- Terrific!
- Wow!
- That's correct.
- Quite right
- That's right.
- That's quite right.
- It depends.
- That's much better.
- In a way, perhaps
- You've improved a lot.
- Sort of, yes
- That's more like it.
- It might be, I suppose.
- That's a lot better.
- You're on the right lines.
- There's no hurry.
- Have a guess.
- That's almost it.
- You're halfway there.
- You've almost got it.
- You were almost right.
- There's no need to rush.
- We have plenty of time

Some Negative Expression-A better way of giving negative feedback instead of saying 'That's Wrong' is:

- Unfortunately not
- Today I'm not very happy with you.
- I'm afraid that's not quite right.
- Not quite right. Try again.
- Good try, but not quite right.
- You can't say that, I'm afraid.
- You can't use that word here.
- Have another try.
- That is almost it

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

- Not really.
- Not exactly

Some Encouraging Feedbacks

- Can work better in group
- Consistent improvement
- Keep up the good work.
- You are doing well.
- I'm impressed.
- You've improved a lot.
- Good effort
- Better than before
- Can do much better
- Never give up!
- You are on right track.
- Nice examples, that's the way to write better
- Way to go
- That's more like it.
- I love it.
- I'm very proud of you.
- You are getting better every day.
- Nothing can stop you now.
- One more time and you'll have it.
- Give it another try.
- There's no hurry. Keep doing.
- We have plenty of time left
- Have another try.
- Here is what I need you to improve.
- This is really creative.
- Really I believe in you-you can do it!
- Don't give up so fast.
- You have made it this far. Now don't step back.
- You are improving a lot.

Miscellaneous Expressions

- It's fine by me if you want to...
- It's your decision.
- Don't mind me.
- I would say...
- Personally, I think...
- If you ask me...
- The way I see it...
- As far as I'm concerned...
- If you don't mind me saying...
- I'm utterly convinced that...
- In my humble opinion...
- In my opinion, this one would be better.
- To my mind this ones better.
- If you ask me, this one's better.
- To my way of thinking, this one's fine.
- In my view, this one is best.
- That one's best.
- What I think is that one's better.
- For me, that one's better.
- I tell you what I think, that one's best.
- I spend a lot of time...
- Whenever I get the chance, I...
- I have a habit of..
- I can't stop...
- I can't help...
- I don't expect they'll win.
- It's (quite) unlikely they'll win.
- They are not very likely to win.
- I shouldn't think they'll win.
- There's not much hope / chance.
- I'd be surprised if they won.
- There's no chance of them winning.
- It'll never happen in a month of Sundays.
- I'm a big fan of Indian food.
- I'm (absolutely) crazy about it.
- I'm quite partial to spicy things.
- I'm particularly fond of hot curries.
- There's nothing I like more than...
- You must be Susan's brother.
- How's your wife/friend?
- Nice weather, isn't it?
- What's new?
- I haven't seen you for ages.
- What have you been up to?
- Are you still working for the same firm?
- Have you heard from Renu recently?
- What a coincidence!
- Fancy meeting you here!
- Why don't we go to the cinema?
- Let's go to the cinema. What do you think?
- How about going to the cinema?
- How do you feel about seeing a film?
- Fancy seeing a film?
- I'd like to see a film. How about you?
- Why not go and see a film?
- It would be nice to see a film.
- Just up / down the road
- Not far from (my home)
- Right on my doorstep
- Just a stones throw away
- Just round the corner
- A two-minute walk from..
- I couldn't say.
- I've never given it much thought.
- I don't have any feelings either way.
- Your guess is as good as mine.
- I (really) don't know what to say.
- I really can't say.
- You're asking the wrong person.
- It doesn't affect me (either way).
- It doesn't make any difference to me.
- That's an interesting question.
- He got somebody's back up.
- They put him down
- Basically,
- In a nutshell,
- To paraphrase.
- To put it another way,
- To sum up ...
- In other words.
- What this means is (that)...
- Put it this way.
- Look at it this way.
- She's the life and soul of the party.
- She's a great mixer.
- He's good company.
- She loves to party.
- Wish you were here.
- Arrived safely.
- Having a great time!
- The food is wonderful.
- The people are so friendly.
- Just lying on the beach - fantastic!
- The weather's lovely.
- Met some nice people.
- This is the life.
- The journey was a nightmare.
- The fixxl's disgusting.
- I got food poisoning!
- The people are so unfriendly.
- It's not what we expected.
- Can't wait to get home.
- There's nothing to do.
- I'd prefer to stay in
- I'd rather stay in
- I'd go for an Indian meal (any time).
- The boys expressed a strong preference for
- The Government claims that...
- They arc trying to convince us that...
- They are asserting that...
- According to him...
- In my opinion ....
- If they are to be believed...
- Supposedly...
- Apparently...
- Don't worry.
- You'll be fine. / It'll be fine
- What are you worrying for?
- There's no need to worry.
- There's nothing to worry about.
- It'll turn out all right.
- It isn't as bad as all that.
- Whatever you may have heard...
- Rest assured.
- I can assure you that...
- No way
- Absolutely not

Chief Block Education Officer
Bajju Khalsa (Bikaner)
Mob: 9460305331

Rajasthan Education Department

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

भामाशाहों के सहयोग से बदला विद्यालय का स्वरूप...

❒ आईदानाराम देवासी

राजस्थान देश में अपनी सांस्कृतिक विरासत के कारण अनूठी पहचान रखता है। यहाँ के विकास में भामाशाहों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भामाशाहों द्वारा विकास के कीर्तिमान स्थापित करना राजस्थान के संस्कृति का एक अनुपम हिस्सा है। राजस्थान के प्रवासी बंधु जो देशभर में अपनी मेहनत के बूते जहाँ राजस्थान का नाम देशभर में ऊँचा करते हैं वहीं ये लोग भामाशाहों के रूप में अपनी मातृभूमि के विद्यालय को नया रूप देने में भी अग्रणी रहते हैं। इसी कड़ी में जालोर जिले के रानीवाड़ा ब्लॉक के दांतवाड़ा में भामाशाहों ने अपने अनूठे सहयोग से विद्यालय की कायापलट कर दी है, जिससे राउमावि. दांतवाड़ा न केवल ब्लॉक व जिले में अपितु राज्य भर में अपनी अलग पहचान रखता है।

विद्यालय के कार्यवाहक संस्थाप्रधान श्री आईदानाराम देवासी ने 30 सितम्बर 2019 को व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) के रूप में इस विद्यालय में कार्यग्रहण किया। 7 जनवरी 2021 से कार्यवाहक प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत है।

तत्कालीन व्यवस्थाओं की आज से तुलना की जाए तो विद्यालय शत-प्रतिशत बदला-सा नजर आता है, यह बदलाव हुआ है-भामाशाहों के अमूल्य सहयोग से।

संस्थाप्रधान श्री आईदानाराम देवासी ने स्टाफ साथियों के साथ मिलकर विद्यालय की तत्कालीन आवश्यकताओं को चिह्नित कर भामाशाहों के सामने रखा। भामाशाहों ने भी अपने विद्यालय को अपना गौरव समझते हुए दिल खोलकर सहयोग किया, जिससे देखते ही देखते सालभर में विद्यालय की कायापलट हो गई। भामाशाहों के सहयोग से करवाए गए कार्य-

1. सरस्वती मंदिर का निर्माण।
2. टीनशेड निर्माण।
3. स्टेज निर्माण।
4. हरित वाटिका।
5. विद्यार्थियों के लिए परिचय-पत्र, टाई-बेल्ट व बेज।
6. सीसीटीवी कैमरे।
7. ऑटोमैटिक विद्युत बेल।
8. कार्यालय सौंदर्यीकरण।
9. ABCD गार्डन।
10. इन्वर्टर।
11. बरामदा में टाइल्स फिटिंग।
12. कम्प्यूटर सिस्टम मय प्रिंटर।
13. हारमोनियम, ढोलक सहित म्यूजियम सिस्टम।
14. वृक्षारोपण।
15. रंगरोगन।
16. पुरानी विद्यालय बिल्डिंग्स के 16 कमरों की छत मरम्मत (टुकड़ी लगवाना)।

भामाशाहों के सहयोग से होने वाले कार्य जो प्रगति में है-

1. भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण।
2. 1000 विद्यार्थियों की बैठक क्षमता का प्रार्थना हॉल।
3. ब्रोडकॉस्टिंग सिस्टम।
4. आदर्श रेसिंग ट्रेक (200 मीटर)
5. प्रधानाचार्य मेज व कुर्सी।
6. डिजिटल बोर्ड।

विद्यालय में किए गए नवाचार-

1. रंगरोगन मॉडल-1 ट्रेन मॉडल।
2. रंगरोगन मॉडल-2 एजुकेशनल एयरलाइंस।
3. रंगरोगन मॉडल-3 एजुकेशनल शिप।
4. रंगरोगन मॉडल-4 महापुरुषों का गलियारा।
5. रंगरोगन मॉडल-5 अमर जवान ज्योत।
6. ABCD गार्डन।
7. गरीब व असहाय स्टूडेंटस के लिए जिले की पहली स्टेशनरी बैंक।
8. खेल-खेल में शिक्षण हेतु स्मार्ट खिलौना बैंक।
9. विद्यालय की समस्त उपयोगी पुस्तिकाओं पर आकर्षक कवर पेज।
10. हस्तलेखन में सुधार हेतु स्टाम्प व्यवस्था।
11. पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने वाली इको फ्रेंडली पेंसिल विद्यालय के नाम से मुद्रित।
12. विद्यालय आजीवन परिषद का गठन।

संस्थाप्रधान का अभिकथन- जब मैंने यहाँ ज्वॉइन किया, तब विद्यालय की स्थिति ठीक नहीं थी, स्टाफ साथियों के साथ मिलकर सुधार की दिशा में एक योजना बनाई। स्टाफ साथियों व भामाशाहों द्वारा भरपूर सहयोग मिला, जिसकी बदौलत विद्यालय की दशा और दिशा में सुधार हुआ। समस्त भामाशाहों/ग्रामवासियों का हार्दिक आभार।

विद्यालय परिवार इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

कार्यवाहक प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दांतवाड़ा,
रानीवाड़ा, जालोर (राज.)
मो: 9828138343

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

आधुनिक भारत के निर्माता पंडित नेहरु

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कहलाए नेहरु।
स्वर्णिम भारत के स्वप्न दृष्टा कहलाए नेहरु।।
आराम हराम है उनका था नारा।
बीसवीं सदी में नेहरु का था जय-जयकारा।।
मोतीलाल नेहरु के घर पाया जन्म।
भारत को स्वतंत्र करवाना उनकी थी कसम।।
पंचशील सिद्धांतों के निर्माता थे नेहरु।
इस धरती के विधाता थे नेहरु।।
नौ बार जेल की यात्रा की थी नेहरु ने।
तभी भारतीयों ने स्वर्णिम आजादी पाई थी।।
भारतीय आज भी करते हैं तुम्हें प्रणाम।
चाचा नेहरु तुम्हें सलाम।।
सिर पर टोपी, मन में आजादी आपकी थी निशानी।
नेहरु के विचारों को पढ़कर हमें आती है जवानी।।
आपकी याद में बच्चे आज भी बाल दिवस मनाते हैं।
आपकी दूरदर्शी सोच के कारण हम बच्चे उज्ज्वल शिक्षा पाते हैं।।
भारत माता के वीर सपूत थे नेहरु।
आजादी पाने के लिए मजबूत थे नेहरु।।
आजाद भारत का प्रथम तिरंगा नेहरु ने फहराया था।
नेहरु की विशेषताओं को वीरों ने अपनाया था।।
नेहरु के प्रयासों से भारत ने सच्चा लोकतंत्र पाया था।
नेहरु ने ही सशक्त भारत बनाया था।
बच्चों के चाचा कहलाए नेहरु।
राष्ट्र के नवनिर्माण में आगे आए नेहरु।।
नेहरु का प्यार बच्चों से था दुलारा।
एक बार फिर हमने नेहरु को पुकारा।।
चाचा नेहरु तुम्हें सलाम। चाचा नेहरु तुम्हें सलाम।।

सुभाष गर्ग, कक्षा-12,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमाणा का गोलिया (जालोर)
मो: 9610714084

बादल संदेशा

सावन की रुत आते ही
हर्षित होता पुलकित मन
लगती धरा मनोरम सुन्दर
नीचे आता व्याकुल अम्बर
भाँति-भाँति के रंग बिखेरे
नाचे मोर नव पंख पसारे
हरित ओढ़नी ओढ़ धरा ने
आयी है नवजीवन देने
प्रति-पर्ण है धुला-धुला
नव यौवन से है भरा-भरा
नवल पुष्प है नवल धरा
नवल जलाशय नवल कला
तुझे पुकारे कृषक अधीर
क्षत विक्षत हत अचल शरीर
शोषित पीड़ित जो शापग्रस्त
युगों-युगों से संकट-त्रस्त
तुम बरसो तो वे हरषेंगे
जग-जीवन की खुशियाँ लूटेंगे
नवजीवन के अंकुर फूटेंगे
हर बंधन से नाते टूटेंगे
हाड़-माँस को चूस-चूसकर
बड़े-बड़े प्रासाद बनाकर
इठलाते है देख दरिद्रता
करते नित कितनों से अभद्रता
जब तुम बरसोगे घनघोर
तभी सघन होगी लघुपौध
आन गिरेंगे वृक्ष बड़े-बड़े
याद कर निज कर्म पड़े-पड़े
हे क्रांतिवीर! हे पारावार।
तुम हो अंतिम जीवन आधार
आओ-आओ जल्दी आ जाओ
व्यथित हृदय खुशियों से भर भर।

विरेन्द्र प्रताप सिंह गौड़, कक्षा-12,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लसाड़िया, अजमेर (राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

चाचा नेहरू

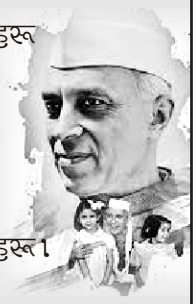

सदा मुस्कुराओ
कहते थे चाचा नेहरू
समय पर सबके
काम आओ,
करुणा प्रेम
दिल में जगाओ
कहते थे चाचा नेहरू।
कोट में गुलाब
होठों पर मुस्कान
इंदिरा के पिता।
रंग भेद द्वेष
ना मन में लाओ,
कहते थे चाचा नेहरू।
बच्चों संग नाचते
गीत खुशी के गाते थे।
बच्चों को प्यारे थे
चाचा नेहरू!!

नीलम कुमारी मीणा, कक्षा-10,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सवना,
भिंडर, उदयपुर

छोटी सी है जिन्दगी

छोटी सी है जिन्दगी
हर बात में खुशी कहो
जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज में खुशी कहो....
कोई रूठा हो आपसे,
उसके अंदाज में खुशी कहो....
जो लौट के नहीं आने वाले,
उनकी याद में खुशी कहो....
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुशी कहो...!

रितु सैनी, कक्षा-6,
राजकीय महात्मा गाँधी सीनियर सैकेंडरी स्कूल
बंध की ढाणी, झोटवाड़ा शहर, जयपुर

दीपावली

आई है दिवाली देखो
आई है दिवाली
लेके जीवन में खुशहाली
आई है दिवाली।
घर आंगन में है रौनक,
चारो और रंगोली से सजाकर
दीयों से सज गई है चौखट
रंगीन हो गई है, झालरों से दिवारें
मन में हर्ष व उल्लास फैलाने
आई है दिवाली, आई है दिवाली
खुशियों ने दी है आहटें
रोशनी से रोशन है सब
चारों और फैली है जगमगाहट
दीपक के प्रकाश से अब
आसमाँ भी हो गया है रोशन
आई है दिवाली देखो
आई है दिवाली।

सीता प्रजापत, कक्षा-10,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ढाल, श्रीनगर,
अजमेर

बाल कलम

सर्दी आई, आई सर्दी
ठंड की पहने वर्दी

सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले चाहे तगड़े

नाक हो गई लाल
सुकड़ी सबकी चाल

अधिराज सिंह राजावत, कक्षा-8,
राजकीय महात्मा गाँधी स्कूल पाइलेट,
केकड़ी, अजमेर

जंगल में सभा

देखो भाई आज जानवरों ने
सभा बुलाई है,
तोता मैना गौरेया संग
गिलहरी चश्मा लगा कर आयी है!
पिपीलिका के नखरे तो
हाई हील पहन कर आयी है,
संग चींटे को डोनाल्ड ट्रम्प की
टाई पहनाकर लायी हैं!
बन्दर मामा मामी बन्दरिया
ठुमक ठुमक इठलाई हैं,
लाल रंग की लहरिया साड़ी में
दुल्हन सी सज कर आयी हैं!
तोता मैना की जोड़ी
सब के मन को भायी हैं,
लाल चन्चु हरे पंख
गले में लाल कण्ठी पहनाई हैं!
हाथी हथिनी मस्त चाल झूमते
कानों से पंखा झलते हैं,
उज्ज्वल से दो दांत
सूंड सब के मन को भायी हैं!
मोर मोरनी नीले रंग में
सजधज कर आयी,
जिनके पँखो के किरीट बने
मुरीद हैं कृष्ण कन्हाई!

निखिल शर्मा, कक्षा 11, कला वर्ग
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतहगढ़,
ब्लॉक-सरवाड़ (अजमेर)
मो. 9660408232

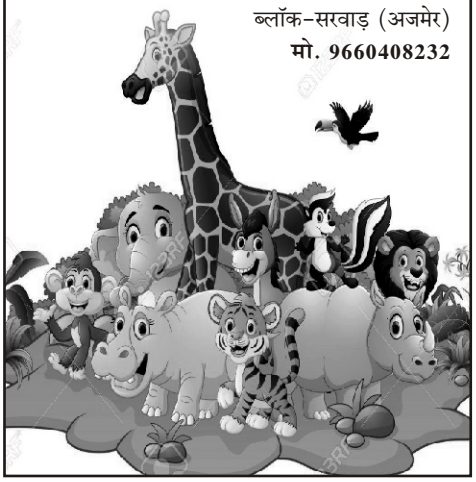

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

संगत री रंगत

लेखिका : कीर्ति शर्मा; **प्रकाशक**: साहित्यागार, जयपुर; **पृष्ठ** : 100; **मूल्य**: ₹ 200

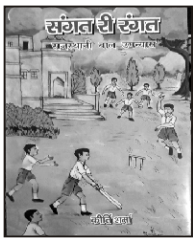

'संगत री रंगत' पोथी री भूमिका में लेखिका कीर्ति शर्मा बच्चों रै बालपणै री घणी पारखी है। बै बच्चों रै आपरै सोनलिये बालपणै रै समय सागर में गोता लगावे। जाणी पिछली गलियों, उडावता पतंग, खेलता कांच रा अंटा, रांखां री गळियां सूं झूमता-कूदता, उछलता-कूदता खेलता, एक दूजा रै धरां जावता, भोळी बातां अर भोलो बगत अर मुळकतो बाळपण/फक्कड़ अर बेपरवा।

पोथी रो श्री गणेश 'क्रिकेट रा दीवानां' सूं हुवै। क्रिकेट आज घर गांव-गांव में छायगो। हालांकि ओ खेल तो आथूणे मुळक रो है, पण अबै तो टाबरां रै रग-रग में रमग्यो। टी.वी., रेडियो अर अखबारों में छपग्यो। कोई जमानो हो जद फुटबाल रो खेल होवतो तो स्टैडियम खचाखच भर ज्यावतो। खिलाड़ी आपरो दमखम दिखावतो। खेलों रा खिलाड़ी नगर री जनता रै पलकां माथै बिराजता। अबै तो टी.वी. रै पर्दो माथै। रतन, प्रेम, आनंद, रवीन्द्र, किसन, संजय सेंग ही हवेली रै बाखल में क्रिकेट खेलण री विध बैठावै।

'भूत बंगले रौ निखार' बाल कहाणी में भूत रो भय है। बा बा भी बच्चे ने डरावण सास भूत रो आज तक डर बतावता आवै। पण भूत आज तक आयो कोनी। 'आनंद और प्रेम' री जोड़ी हुवै। भूत बंगले रो भय लोगां रै जी में बड़ग्यो। भय निकालणो, हवेली नै साफ-सुथरी करणी। अेक खेल मैदान बणावणो। सपूंत अर पौधा लगा'र मनमोहक जाग्या लोगो रो भ्रमण पथ बणग्यो। नगर रा लोग सरावे-बच्चों रो मन हरसावै। 'मुरळी काका रो करजो' गरीब नै मदद करणै री सीख देवै। बदरीनाथ कुम्हार गाँव-गळी में मटकियां अर उणरा ठक्कण तथा माटी रा रमेकड़ा बेचतो आवै। टाबर उणनै मटकी काको कैवै। टाबरां रो लाड राखै। मिट्टी रा भांत-भांत रा रमेकड़ा टाबरां नै दोनूं हाथां सूं देवै। टाबर उणां रा दिवाना/अेकर मटकी काका रा दोनूं झूंपा लाय बलग्या में बलड़पावै। काको उदास/दरखत नीचै परिवार रो डेरो/टाबर पेली आवै/उदास। पण सगळा टाबर, आपरै गुलक ला'र खाली कर देवै। गाँव रो सरपंच अर चौधरी भी टाबरां सूं सीख लैवे। काके रै कच्चो घर पक्यो बणज्यावे।

पोथी में प्रधानमंत्री जी रो ''स्वच्छ भारत मिशन'' री सीख भी 'गांव में स्वच्छता अभियान' बात में छापोड़ी है। टाबरां गावं री गळियां साफ करी/सरपंच भी आगे आयो/गऊशाला भी/कचरा पात्र गौड़ राखीजग्यो पेड़-पौधा लागग्या। साफ-सुथरो गाँव सुगंध देवण लागग्यो। 'डॉक्टर' रो वचन बात में अंध विश्वास सूं सावचेत कहै। डाक्टर री सलाह और इलाज माथै विश्वास री सीख देवै। आदर्श डाक्टर सूं बच्चा प्रेरणा लेवै।

'गांव में कलक्टर' एक आदर्श कहाणी है। आ बहिन-भाई री बात है। भाई शहर रो बखाण करै/बैन गांव मे गोता खावै/ बात बच्चों रै कैरीयर माथै अटकै। शहर रा कलेक्टर बणै: गांव रा गंवार/समय पलटो/गांव शहर बणग्या/ स्कूलों में अच्छी भणई हुवण लागगी/बच्चा मेहनती/भाई रा बेटा तो बेरोजगार हो'र प्राइवेट धंधों रो जुगाड़ करै बहिन रो 'बेटो कलक्टर'। आज ऊँचे ओहदों माथै गांव रा मेहनती बच्चा आ बैठा है। कुल मिला'र 'संगत री रंगत' पोथी गांव रै टाबरां री हूंस है। संस्कारित बच्चों री आदर्श तस्वीर है। संगठित बच्चों री सफलता है। पोथी घणी उपयोगी है।

लेखिका कीर्ति शर्मा 'संगत री रंगत' मांय घणा ई मुहावरां अर लोकोक्तियां रै जरियै बातां नै रोचक अर ज्ञानवर्धक बणारै। ज्यूं 'मुळकतो उणयारो, 'आपरै भगवान नै याद करां' 'कुचमादी टाबर', 'दुगड़ चिंता', 'अळबाद', 'महात्मा गाँधी बण रैया है', 'जंगल में मंगल'। ओ बाल उपन्यास शहरी जीवन माथै नहीं है। गांव रा अनेक चित्राम मंड्योड़ा है। खासकर शेखावाटी री हवेलियां रौ वर्णन उपन्यास में साफ झळक बालक सेठ जी री जीर्ण शीर्ण हवेली री बाखळ साफ करे। झाड़-झंखाड़ काटे। गावं रे मुखियां सूं राय लेवै। कोई डरावे, तो कोई होसले बणवै। टाबर आगै बढ़ै हवेली नै साफ करतां झकाझक कर देवै। 'स्वच्छ भारत मिशन' रौ संदेश भी साथै साथै देवै। इकजाती मेहनत रो मोल भी हा पहै। उतसाही टाबरां रै आगै गांव रा लोगा भी साथै हाथ में हाथ मिलावै। आगे बठै। अबखायां नै दूर करै।

'कलेक्टर' अेक आदर्श हुवै। पठणिया टाबरां रौ अंतिम ध्यैय। जिले रौ सर्वेसर्वा गांव में आवै। बच्चों रै बीच बैठै। पाठशाला में आवै। प्रधानाध्यापक जी ने अच्छै बच्चों री सफाई रो संदेश दैवै। 'संगत री संगत' में सफाई बाबत सबसूं ज्यादा जोर दियोड़ो जकी आज देश री जरूरत है। स्वच्छता अभियान उणांरी बातां में छायोड़ो है। पोथी रो आवरण पेज 'क्रिकेट' रो संदेश देवै। आज चारूं कांनो क्रिकेट ही क्रिकेट है। भला आ पोथी अछूती क्यूं रै वैला। 'भूत बणलो' खाली हवेली खाले लोगों रो अंधविश्वास है। आज भी गावां में खाली मकान नै भूत बंगलो घोषित कर देवे।

राजस्थानी भाषा मांय छोटी बातां घणी मनमोवजी रळिबावणी लागै। गांवां री जिंदगी आंख्या रे सामनै नाचती दीसै। गांव रो सीधो साधो जीवन भोला भाळा लोक अर सीधा साफ-सुथरा टाबर। आछो खावणो-आछो पीवणो। सामूहिक रूप सूं रोवणो अर आगे बढणों। गांव री हेली, कूओ, झूंपड़ो, बाखला, खेत, खलिहान, पशु, चारागाह, ग्रामीण खेल, पण अंध विश्वास आज भी है। भूत बंगला, गांव गांव गळी गळी में दीसै। कृत्रित डर दरसावै। भोपा, डोरा, जंतर, जप-तप आदि चहुंओर है।

आओ, आज अपां मायड़ भाषा राजस्थानी मायं कीर्ति शर्मा री जैड़ी पोथ्यां लिखे। गीता गावां/लोक गीत सीखो। बढ़ेरां रै ज्ञान नै सीखां। आंपणो विरासत नै अंतरा/जल रो मे संचय करौ। पेड़ बचावां। पुजारी देवली, हवैली, गुफा, मंदिर, टीबो, भाखर बावड़ी, आद नै संजोर'र राखां। भावी पीढ़ी नै आज तैयार करणो घणो जरूरी है।

बाल साहित्य बच्चों रै भावी जीवन नै संजावै। देश भक्ति रा गीत वीर सैनिक बणावै। लोक साहित्य री सीख संस्कारण बणावै। आपरां लोक देवता ही जीवनी देश अर समाज रै पति अनुराग रो संदेश देवौ। 'संगत री रंगत' जैड़ी छोटी-छोटी पोथ्यां री जरूरत है। सरल अर सहज शिक्षा/सीधो साधो संदेश/सटीक बात सटीक शब्दों में अर सबसूं आछी बात हर बात में बालमन घणो हरसावै/बात री सीख सीधो काळजै में है। बच्चों जल्दी सीखै अर बात लम्बे समय तांई याद रखौ।

'संगत री रंगत' पोथो सफल रचना है। लेखिका बालपन री कुशल चितेरी है। प्राथमिक पाठशालावां में शनिवारीय सभा में पठण जोग है। शिविरा रो बालखंउ घणो सरावण जोग है। आज बाल साहित्य री घणी जरूरत है। जणै ही चाचा नेहरु ने सच्ची श्रद्धांजलि हुवैला। लेखिका नै राजस्थानी रचना सारू घणा घणा रंग।

समीक्षक : **पृथ्वी राज रतनू**
एफ.सी.आई. गोदाम रोड, इंदिरा कॉलोनी, बीकानेर
मो: 9414969200

Rajasthan Education Learning Society

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

बींजोणी करालावत सांसी परिवार ने भेंट की भूमि

बाड़मेर–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सांसियों का तला, बाड़मेर के लिए दिनांक 14.10.2022, शुक्रवार का दिन ऐतिहासिक व खुशियों से भरा रहा। इस दिन सांसियों का तला विद्यालय को सांसियों का तला के ही बींजोणी करालावत सांसी परिवार ने विद्यालय स्थापना के 42 साल बाद सहमति कर भूमि दान का निर्णय लिया और शिक्षक व सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश बोहरा अमन की प्रेरणा व अथक प्रयासों से विद्यालय परिसर में परिवार के सदस्यों ने अमन और स्टाफ को विद्यालय भूमिदान के कागजात भेंट किए। विद्यालय भूमिदान के अवसर पर प्रेरक व सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश बोहरा अमन ने कहा कि भौतिकवादी दौर में जहाँ व्यक्ति एक-एक इंच के लिए आमने-सामने हो जाता है, वहीं सांसियों का तला के बींजोणी करालावत सांसी परिवार ने उदार हृदय दिखाते हुए सांसियों का तला विद्यालय के लिए भूमि दान की है। जो अपने आप में बहुत ही प्रशंसनीय व ऐतिहासिक कदम व फैसला है। विद्यालय परिसर में बैठक कर बींजोणी करालावत सांसी परिवार के सदस्यों ने भूमि समर्पण के कागजात विद्यालय स्टाफ को भेंट किए। वहीं विद्यालय की ओर से बींजोणी परिवार का माल्यार्पण कर अभिनन्दन व धन्यवाद किया गया। बींजोणी सांसी परिवार के उक्त फैसले पर विद्यालय स्टाफ, बच्चों व ग्रामीणों ने खुशी का इजहार किया। भूमि दानदाता परिवार का शुक्रिया अदा किया। इस दौरान बींजोणी करालावत परिवार की ओर से सर्वश्री हरीराम, कालाराम, हुकमाराम, जानूराम, चम्पा, लीला, प्रेरक मुकेश बोहरा अमन, प्रधानाध्यापिका गुंजन आचार्य, डालूराम सेजू, उषा जैन, राजेश जोशी, चन्द्रकला सिहाग, रिया शर्मा, सीमा शर्मा, सूरज, मदनलाल सहित एसएमसी के सदस्य व विद्यालय के बच्चे उपस्थित रहे।

नो बेग डे पर राजस्थान को पहचानो कार्यक्रम का आयोजन

बूंदी– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा में शनिवार को नो बेग डे पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। संस्थाप्रधान जितेंद्र शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार माह के प्रथम शनिवार को राजस्थान को पहचानो थीम के अनुसार विद्यालय में कक्षा 1 व 2 में मेरे घर का पता लगाओ गतिविधि में जल, स्थल व आकाश में रहने वाले पशु पक्षियों की पहचान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कक्षा 3 से 5 में मेरे

गाँव की एक कहानी गतिविधि के अंतर्गत गाँव में प्रचलित लोक कथाओं के बारे में छात्र छात्राओं को रूबरू करवाया। कक्षा 6 से 8 आओ जाने राजस्थान के त्योहारों को गतिविधि के अंतर्गत छात्र छात्राओं को खेल खेल में विभिन्न त्योहारों के बारे में बताया एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर अध्यापक राम लक्ष्मण मीणा, गजेंद्र राठौर, राकेश कुमार, परशुराम मेघवाल, महेंद्र स्वामी, सुनीता आदि ने गतिविधियों का आयोजन करवाया।

सर्व धर्म प्रार्थना सभा कार्यक्रम में गाँधी जी के बताएं रास्ते पर चलने का लिया संकल्प...

बीकानेर– राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 153वीं जयंती पर राज्य स्कूल शिक्षा परिषद के निर्देशानुसार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ में कार्यवाहक प्रधानाचार्य मोहर सिंह सलावद की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती व गाँधी जी की फोटो पर दीप प्रज्वलित कर व माला पहनाकर की गई। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कार्यवाहक प्रधानाचार्य मोहर सिंह सलावद ने महात्मा गाँधी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला व कहा कि विश्व को सत्य, अहिंसा व अपरिग्रह का पाठ पढ़ाकर भारतीय इतिहास में अमर दीप की तरह जलने वाले महात्मा गाँधी के बताएँ रास्ते पर चलते हुए आगे बढ़ना है। मंच संचालन करते हुए अध्यापक हरि प्रकाश बिलबान ने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों व अभिभावकों ने एक साथ सर्व धर्म प्रार्थना सभा कार्यक्रम के अंतर्गत एक साथ तीन प्रार्थनाओ वैष्णव जन तो तेने

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

कहिए, दे दी हमें आजादी, धर्म वो ही एक सच्चा का सामूहिक गायन किया गया। सामूहिक गायन कार्यक्रम में कार्यवाहक प्रधानाचार्य मोहर सिंह सलावद, वरिष्ठ अध्यापक संजीव कुमार यादव, रचना सारण, अध्यापक अब्दुल समद पंवार, चंद्रकांता स्वामी, विनोद बाला शर्मा, रीना प्रजापत, जयसिंह राठौड़, हरिप्रकाश बिलबान, संतोष कुमार आदि मौजूद रहे।

विद्यालय स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ

भीलवाड़ा– विभागीय आदेशानुसार स्थानीय विद्यालय में 2.10.20222 से 8.10.2022 तक 'गाँधी, शास्त्री जयंती सप्ताह का आयोजन किया किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम यथा- निबंध, चित्रकला, सामान्य ज्ञान, आशुभाषण, प्रेरक प्रसंग, अनमोल वचन प्रतियोगिता आदि का आयोजन कर आदर्श छात्र-छात्राओं को विद्यालय परिवार की ओर से पुरस्कृत किया गए। साथ ही इस अवसर पर स्थानीय विद्यालय में कार्यरत गोपाल लाल बलाई (व्याख्याता हिंदी) के द्वारा संकलित 'महात्मा गाँधी के अनमोल वचन' नामक पुस्तिका का अनावरण स्थानीय संस्था प्रधान श्री अशरफ शेख के सान्निध्य में विद्यालय परिवार द्वारा किया गया जो विद्यार्थी जगत के लिए अनुकरणीय पहल है। कार्यक्रम का संचालन श्री घनश्याम झाझड़ा (अध्यापक) ने किया।

भामाशाह ने विद्यालय को बस भेंट की

सीकर– माननीय भामाशाह श्री मूलचंद जी (सेवानिवृत्त रेवेन्यू इंस्पेक्टर) मु. पो. पाटन, जिला सीकर ने विद्यालय परिवार के निवेदन पर आशीर्वाद स्वरूप विद्यालय श्रीमती जमुना देवी पाण्डेय राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाटन को 7,50,000 की लागत की एक बस भेंट की। भामाशाह श्री मूलचंद जी के पुत्र श्री नरेश कुमार वर्मा वर्तमान में आस्ट्रेलिया रहते हैं जो समय-समय पर विद्यालय परिवार को सहयोग करते रहते हैं। शाला परिवार, समस्त पाटन ब्लॉक के वासिन्दों की ओर से आपको कोटि-कोटि धन्यवाद। जन्म भूमि के प्रति आपका लगाव, क्षेत्र की बेटियों के प्रति पितृत्व भावना, बेटियों के सर्वांगीण विकास के लिए आपका अमूल्य योगदान अल्फाजों में बाँधना नामुमकिन हैं। आपके द्वारा आशीर्वाद स्वरूप भेंट किए गए वाहन से बेटियों व ग्रामीणों में खुशी की लहर देखने को मिल रही है। पाटन ब्लॉक के 25 ग्राम पंचायतों में स्थापित एकमात्र प्रतिष्ठित सरकारी विद्यालय की छात्राओं के आवागमन हेतु आपने वाहन देकर सभी अभिभावकगणों की समस्याओं का समाधान किया। विद्यालय परिवार आपका किन शब्दों में धन्यवाद करें ऐसे अल्फाज ही नहीं है।

जयकिशनपुरा शिक्षक बने भामाशाह

टोंक– विद्यादान सबसे बड़ा दान है क्योंकि विद्यालय में किए गए दान से बालकों का भविष्य संवरता है। बस मन में यही सोचकर राउप्रावि. जयकिशनपुरा, ब्लॉक पीपलू, जिला-टोंक के 4 कार्मिकों ने शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा शिक्षक दिवस पर प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मान में दी गई सम्पूर्ण राशि 52,400 को ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय में विकास के लिए दान की है। जिससे इन सम्मानित शिक्षकों का ओर अधिक सम्मान शिक्षा जगत में बढ़ गया है। पीईईओ बनवाड़ा पन्नालाल वर्मा ने बताया कि 5 सितम्बर 2022 को जयकिशनपुरा के शिक्षक दिनकर विजयवर्गीय को राज्य स्तर पर 21,000; शिक्षक मोहनलाल गुर्जर को जिला स्तर पर 11,000 तथा प्रधानाध्यापक रामगोपाल शर्मा, शिक्षक मोरपाल गुर्जर को ब्लॉक स्तर पर 5100-5100 रुपए तथा गत वर्ष शिक्षक दिनकर विजयवर्गीय, मोहनलाल गुर्जर को ब्लॉक स्तर पर 5100-5100 रुपए के चैक प्रशस्ति पत्र के साथ मिले थे। सभी कार्मिकों ने यह राशि तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा की भावना के साथ ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय विकास में दान की है। विद्यालय कार्मिकों ने बताया कि विद्यालय में जमा इस राशि से विद्यालय की व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने में उपयोग किया जाएगा। शीघ्र विद्यालय विकास समिति की बैठक कर विद्यालय की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्ययोजना तैयार की जाएगी। विद्यालय के सभी शिक्षक पहले भी विद्यालय में आर्थिक सहयोग करने सहित जर्सियाँ, स्टेशनरी स्वयं की ओर से वितरित कर चुके हैं एवं विद्यालय में भामाशाहों को प्रेरित कर विद्यालय को डिजिटल एवं मॉडल बनाने में भी सराहनीय भूमिका निभाई है। उनके इस सहयोग एवं सम्मानित होकर लौटने पर पीईईओ बनवाड़ा की ओर से सभी कार्मिकों को माला पहना दस्तारबंदी कर अभिनंदन किया गया। इसी तरह विद्यालय शिक्षक शंकरलाल मीणा, रायसिंह, निरमा चौधरी, कन्हैयालाल शर्मा आदि ने भी इनका विद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय प्राथमिक विद्यालय चावड़ावास, ग्रा.पं.-बोखाड़ा, पं.स.- सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

❒ चेतन देवासी

पृष्ठभूमि:– विद्यालय उदयपुर जिले की अंतिम सीमा पर सायरा ब्लॉक में रणकपुर – पाली रोड़ पर कुंभलगढ़ राष्ट्रीय अभ्यारण्य से सटा हुआ छोटा सा गाँव चावड़ावास में स्थित है। इस गाँव में मात्र 70 घर की आबादी है इसमें से भी लगभग 70–75 प्रतिशत परिवार प्रवासी हैं। विद्यालय में वर्तमान में 80 का नामांकन है जिसमें 60 बच्चें आदिवासी परिवारों से है। विद्यालय की स्थापना वर्ष 1995 में हुई तब से मई 2019 तक विद्यालय में भवन के अलावा कोई भौतिक सुविधाएँ नहीं थी, यहाँ तक कि विद्युत कनेक्शन भी नहीं। बच्चे खाना खाकर पानी पीने व हाथ–थाली धोने परिसर के बाहर स्थित हैंडपंप पर जाते थे।

संस्थाप्रधान की कलम से:– विद्यालय में मेरी नियुक्ति मार्च 2015 में हुई एवं प्रधानाध्यापक का चार्ज जुलाई 2018 में मुझे मिला। विद्यालय के इस नए कलेवर को मूर्त रूप देने का जिम्मा विद्यालय में पदस्थापन के उपरांत संभाला, तब से ही जो आवश्यकताएँ महसूस की जा रही थी, उन सब संभावनाओं को स्टॉफ के साथ मिलकर तलाशना शुरू किया। बस आगाज की ही देरी थी ग्रामवासियों व भामाशाहों के साथ चलने से हर पहल का सकारात्मक परिणाम निकलने लगे।

संस्थाप्रधान ने अपनी मेहनत, लगन, निष्ठा व अलग विशिष्ट कार्य शैली के दम पर स्टॉफ के साथ मिलकर शैक्षिक स्तर को सुधारने हेतु सर्वप्रथम अतिरिक्त कालांश व उपचारात्मक शिक्षण से प्रयास प्रारंभ किए जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

सत्र 2020 में ब्लॉक स्तरीय शिक्षक सम्मान के रूप में गाँव का सम्मान मुझे मिला जो गाँव को ही समर्पित कर सम्मान में प्राप्त राशि ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय को सुपुर्द की। हमारी इस बदलाव की यात्रा में मेरे साथी अध्यापक श्री नरेन्द्र प्रजापति ने कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया जिससे मेरा काम बहुत आसान हो गया। समय–समय पर विभागीय अधिकारियों का भी हमें संबलन, मार्गदर्शन व निर्देशन प्राप्त होता रहा। जिससे हमें काम करने की और अधिक शक्ति मिली।

हमने गाँव स्तर पर एक कमेटी बनाई जिसकी देख–रेख में सभी कार्य सम्पन्न किए। हमने गाँव के सहयोग व घोषणा के अनुरूप कार्य किया, भामाशाहों के एक–एक रुपये को हमने सुव्यवस्थित व योजनाबद्ध तरीके से विद्यालय विकास में लगाया। इसी की बदौलत आज सरकारी प्राथमिक विद्यालय एक निजी शिक्षण संस्थान की तरह सभी भौतिक सुख– सुविधाओं से सुसज्जित हैं। हम इस बदलाव का शत प्रतिशत क्रेडिट गाँव को देते हैं। हमने केवल हमारा शत प्रतिशत देकर अच्छा करने की कोशिश की है जो हमारी ड्यूटी है।

विद्यालय में हुए विकास कार्य :–

1. भवन का अच्छा रंगरोगन व चित्रकारी:– विद्यालय भवन का बहुत ही अच्छा रंग–रोगन करवाया तथा बालिका शिक्षा, शिक्षा का अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, जल संरक्षण आदि का सन्देश देती चित्रकारी करवाई।

2. भव्य प्रवेश द्वार:– हमारे निवेदन पर भामाशाह श्री शान्तीलाल सुथार ने अपनी माता स्व. श्रीमती चंदाबाई पत्नी श्री रतनलाल सुथार की स्मृति में करीबन 1.5 लाख रुपये खर्च कर विद्यालय का भव्य प्रवेश द्वार बनवाकर 10 मई 2021 को विद्यालय को सुपुर्द किया।

3. फर्नीचर व्यवस्था:– भामाशाहों द्वारा विद्यालय में कार्यालय के लिए टेबल– कुर्सियाँ, अलमारी व सभी बच्चों के लिए पर्याप्त फर्नीचर डेस्क व चौकी की सुविधा करवाई।

4. पानी की व्यवस्था:– हैण्डपम्प में मोटर डलवाकर छत पर टंकी रखकर नल फिटिंग करवाई जिससे बच्चों के पानी पीने व हाथ धोने की उत्तम सुविधा प्राप्त हुई तथा दोनों शौचालय में भी पानी की व्यवस्था की गई। नली द्वारा पेड़ व बगीचे को पानी पिलाने की भी सुविधा हुई।

5. मंच निर्माण व अन्य :– भामाशाहों के सहयोग से भवन के आगे शानदार मंच का निर्माण करवाया व इसके अलावा छत रिपेयर, भवन पर विद्यालय नाम बोर्ड, जूता स्टैंड, मुख्य द्वार के पास की चार दिवारी, किचन गार्डन व बगीचे में दीवार आदि कई निर्माण कार्य करवाए।

6. बगीचा एवं किचन गार्डन:– भवन के आगे एक शानदार बगीचा तैयार किया जिसमें अलग–अलग प्रकार के पौधे व फुल हैं, बरामदें में गमले, बगीचें में पेड़ों के लिए ट्री गार्ड जाली एवं परिसर में 15 ट्रिप ट्रेक्टर से मिट्टी डलवाकर किचन गार्डन तैयार किया जिसमें हमनें सहजन, बैंगन, लोकी, भिण्डी, ग्वार फली, मिर्च, अरवी, अदरक, केला, टमाटर आदि के पौधे लगवाए।

7. इलेक्ट्रोनिक सुविधाएँ:– विद्यालय में स्मार्ट टीवी, DTH, लैपटॉप, प्रोजेक्टर, प्रिंटर–स्केनर, साउंड सिस्टम, सभी कमरों में लाइट फिटिंग, पंखे व LED लाइटें आदि की

Rajasthan Education Department

अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं ।

8. गार्डन में झूले व फिसलनपट्टी की सुविधा आदि अनेक सुविधाएँ उपलब्ध है।

शिक्षण व्यवस्था:– विद्यालय में पिछले चार सत्रों से तीन पदों पर हम दो अध्यापक कार्यरत थे (तीसरे अध्यापक की नियुक्ति जून 2022 में हुई) हमनें विद्यालय विकास के इन कार्यों के साथ-साथ शिक्षा विभाग के महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम SMILE व STAR पर योजनाबद्ध कार्य कर वर्ष भर शिक्षण व्यवस्था को भी बनाए रखा। वर्ष भर अलग से कक्षा 6 प्रवेश हेतु नवोदय विद्यालय की अलग से तैयारी करवाई जिससे पिछले सत्रों में चार बच्चों को नवोदय में भी चयन हुआ।

शैक्षिक भ्रमण:– विद्यालय समय. समय पर बच्चों को स्थानीय पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण भी करवाता है जिसमें इस सत्र फरवरी 2022 में बच्चों को कुंभलगढ़ दुर्ग व श्री परशुराम महादेव मन्दिर का शैक्षिक भ्रमण करवाया।

खेल व्यवस्था:– विद्यालय में खेल मैदान नहीं है फिर भी उपलब्धता के आधार पर बच्चों को खो-खो, कबड्डी एवं कुछ स्थानीय खेल, कुछ इंडोर गेम आदि की व्यवस्था की गई जिसमे बच्चे बढ़ चढ़कर अपनी भागीदारी निभाते हैं।

भामाशाहों के लिए:– गाँव से विद्यालय के लिए जो भी माँगा वो दिया किसी ने कण दिया तो किसी ने मण दिया... हर घर ने दिया। हमारी इस मुहिम में बड़े बुजुर्गों का भी पूरा साथ रहा। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत बचत से 100-200-250 रुपये हमें आशीर्वाद स्वरूप दिए। ग्राम वासियों ने अपना पूरा सहयोग दिया एवं जनसहभागिता से हमें इस कार्य को करने मे बड़ी ताकत मिली।

विद्यालय परिवार की इच्छानुसार श्रीमान सतीशचंद्र जैन, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, सायरा के निर्देशन व अध्यक्षता में व श्रीमान मुकेशजी पालीवाल साहब, जिला शिक्षा अधिकारी (मा.) मुख्यालय, उदयपुर के मुख्य आतिथ्य में व उनके कर कमलों से 30 अप्रेल 2022 को भामाशाह सम्मान समारोह नई उड़ान 2022 की थीम भव्य आयोजन करवाया जिसमें विद्यालय में गाँव के हर घर से उनके द्वारा किए गए कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

हमारी विद्यालय के प्रति इच्छाए असीमित है लेकिन आज भामाशाहों के सहयोग व समर्पण से सभी सुविधाएँ प्राप्त हुई जिससे हमारा विद्यालय उदयपुर ही नहीं पुरे राजस्थान में अपनी एक अलग पहचान रखता है।

संस्थाप्रधान
राजकीय प्राथमिक विद्यालय चावड़ावास,
बोखाड़ा, सायरा, उदयपुर (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह-सितम्बर 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

Rajasthan Education Department

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	KESHAR SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TODAS (219977)	KUCHAMAN	NAGAUR	400000
2	RAMESHWARLAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TODAS (219977)	KUCHAMAN	NAGAUR	400000
3	DR RADHA KRISHAN SUMAN	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL RIJANI (211618)	ALSISAR	JHUNJHUNU	300000
4	PAWAN KUMAR SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHEERWAS BARA (211544)	TARANAGAR	CHURU	100000
5	RAMNIWAS BHAMBU	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BUNGI (215225)	RAJGARH	CHURU	100000
6	INDRA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	RAJGARH	CHURU	70000
7	VIMAL CHAND MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOYALA (212745)	BAMANWAS	SAWAI MADHOPUR	51000
8	JAI KUMAR JAIN	SHRI VISHVESHVAR LAL DUJOD WALA GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DUJOD (213298)	DHOD	SIKAR	51000
9	PRAHLAD RAY SHARMA	SHRI VISHVESHVAR LAL DUJOD WALA GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DUJOD (213298)	DHOD	SIKAR	51000
10	MUNESH POONIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	RAJGARH	CHURU	51000
11	LAXMI CHOUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SAARSAR (215350)	SARDARSHAHAR	CHURU	50000
12	KUMKUM KUMARI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BANSI BIRAHANA (412599)	SEWAR	BHARATPUR	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-सितम्बर 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	89	1126407
2	NAGAUR	87	913355
3	AJMER	279	580707
4	JHUNJHUNU	47	408120
5	SIKAR	57	325310
6	BANSWARA	69	200864
7	CHITTAURGARH	41	136760
8	JODHPUR	34	123881
9	UDAIPUR	28	91401
10	BUNDI	47	78311
11	SAWAIMADHOPUR	7	76310
12	TONK	21	71250
13	BARAN	18	69700
14	GANGANAGAR	13	69620
15	BARMER	38	69221
16	BHARATPUR	25	65020
17	JAIPUR	24	48251
18	PALI	50	46351
19	ALWAR	37	45830
20	RAJSAMAND	28	38121
21	HANUMANGARH	70	38090
22	DUNGARPUR	8	28500
23	JALOR	31	28459
24	KOTA	23	15662
25	BIKANER	12	15050
26	PRATAPGARH	4	10300
27	DHAULPUR	13	7900
28	BHILWARA	40	6003
29	DAUSA	3	5600
30	JHALAWAR	15	3550
31	JAISALMER	15	2188
32	KARAULI	8	171
33	SIROHI	-	-
	Total	**1281**	**4746263**

पाठ्य पुस्तक की मुख जुबानी

❒ भंवर लाल पुरोहित

इंसान अपने जीवन में अलग रंगों से सरोबार होता है, प्रकृति हरे रंग, आसमान नीले रंग से, संन्यासी गेरूआ रंग एवं समाजसेवी सफेद रंग, इन्हीं रंगों से सप्तरंगी दुनिया से कर्णाधार बनते हैं। जीवन के रंगमंच पर अपनी भूमिकाएँ अदा करते है। इसकी भूमिका में सतही परत को देखा जाए तो पाठ्य पुस्तकों का बहुत बड़ा महत्त्व होता है जो रंग-बिरंगे चित्रों के साथ पाठ्य विषय वस्तु को परोसने एवं बाल मन को प्रभावित करते हैं। गिजू भाई बधेका कहते हैं कि रंग-बिरंगी तितलियों के माध्यम से विषय वस्तु को परोसा जाए तो बाल मन जल्दी सीख जाता है। मुझे याद है इन पाठ्य पुस्तकों की कहानी बाजार से लाई गई पुस्तकों को 15-20 दिनों की तैयारी के साथ रंगीन कागज से जिल्द चढ़ाई जाती थी और पीपल के पत्तों, मोर पंखों को किताबों में रखने की तैयारी की जाती थी और प्रश्नोत्तर करते समय विषय वस्तु का दोहरान रंगीन चित्रों को बनाने के कौशल के साथ किया जाता था। वार्षिक परीक्षा के तुरंत बाद अपने विश्वास के साथ उन दोस्तों की पहचान की जाती थी जो हमसे पीछे की कक्षा में अध्ययन करते थे। बड़ी बारीकी के साथ जिल्द, मोरपंखों, पीपल के पत्तों की प्रशंसा के साथ पौने अथवा आधे मूल्य में बेची जाती है। यह परम्परा तब तक चलती थी जब तक पाठ्यक्रम बदल न जाए। पाठ्यपुस्तकों को सहेज कर रखकर जीवन को सहज बनाने का कितना अच्छा तरीका था किन्तु यही पाठ्य पुस्तक निःशुल्क हो गई तो यह सहेजने का तरीका नहीं रहा। अर्द्ध वार्षिक परीक्षा तक तो पीछे आगे के मुख्य पृष्ठ ढूँढ़ने पर भी नहीं मिल पाते। जबकि अधिकांश विद्यार्थी तो पास बुक, कुंजी अथवा टी सीरिज को लेकर अपना अध्ययन करते हैं जहाँ न कोई रंग है न ही कोई अपनी सोच को प्रभावित करने का तरीका है। एक ही शैली प्रत्येक प्रश्न का सटीक जवाब जहाँ कोई सोच नहीं, न ही कोई विस्तृत मानसिकता केवल रटी रटाई भाषा का प्रयोग। पढ़ना लगभग से बंद हो गया है। पन्ने पलटने, रंग-चित्रों को देखकर मानसिक विकास अवरूद्धता हो गया है। इसी वस्तु स्थिति को नीचे दिए अनुसार सार्थकता की ओर ले जाने का प्रयास किया पाठ्यपुस्तक की मुख जुबानी।

इक दिन मेरी पाठ्य पुस्तक
मुझसे यूं बोली
मैं निःशुल्क हो गई
टी सीरीज हो गई मुँह बोली
पास बुक बन गई हमजोली
वक्त कहाँ है पाठ्य पुस्तक पढ़ने का
पास बुक में प्रश्नोत्तर से ही तरीका बढ़ने का
प्रश्नोत्तर को रट कर अंक पाने का सिलसिला
पाठ्य पुस्तक पुनः यों बोली
प्रश्न का उत्तर पृष्ठ 13 पर देखे कह गई हमजोली
तुमने भी परीक्षा में वही लिख दिया
जो लिख गई थी मुँह बोली
अंक कम आए तो उ.पु. को खुलवा दिया
परिणाम में No Change का पत्र लाया।

पाठ्यपुस्तक कहती है ज्ञान का पिटारा हूँ। सारांश पाठ के अंत का सहारा है ज्ञान पिपासुओं ने पढ़कर लक्ष्य को हासिल किया है, लक्ष्य पथ पर उन्होंने मंजिल को हासिल किया है। आज भी मुझे देखकर उनका मन मस्तिष्क झंकृत हो जाता है, मैंने उसके जीवन को रंगों से भर दिया है।

जल्द ही लौटेंगे अपने उसी अंदाज के साथ
धूल चढ़ने से किताबों पर
कहानी खत्म नहीं होती।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
पुरोहित वास नई धनारी, पो. धनारी,
रेल्वे स्टेशन-सरूपगंज,
सिरोही (राज.)-307023

शिविरा पत्रिका (मासिक) : नवम्बर, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : नवम्बर, 2022

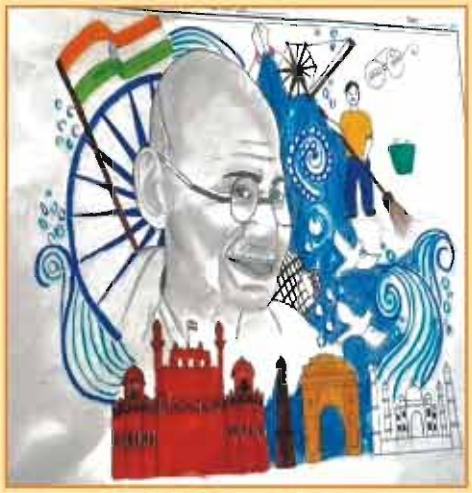

सुहानी राठौड़, कक्षा–10,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केकड़ी, अजमेर

पार्थ माहेश्वरी, कक्षा–9,
एमजीजीएस पायलेट, केकड़ी, अजमेर

आईशना, कक्षा–8 ब,
एमजीजीएस पायलेट, केकड़ी, अजमेर

गायत्री, कक्षा–7,
श्रीमती राधा राउप्रावि. बीजवाड़िया, जोधपुर

आर्या महेश्वरी, प्रगति लखोटिया, कक्षा–7 ब,
आईशना मेघवंशी, कक्षा–8,
एमजीजीएस पायलेट, केकड़ी, अजमेर

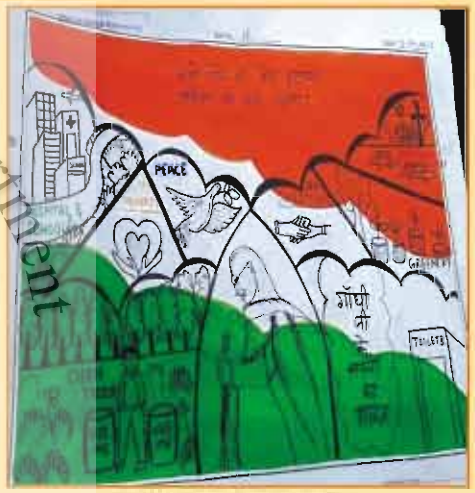

इशिता अग्रवाल, कक्षा–9,
सुधा सागर स्कूल केकड़ी, अजमेर

Rajasthan Education Department

अंकिता गुर्जर, कक्षा–6
राउमावि. नायकी,
केकड़ी, अजमेर

परिधि लोढा, कक्षा–7,
एमजीजीएस पायलेट,
केकड़ी, अजमेर

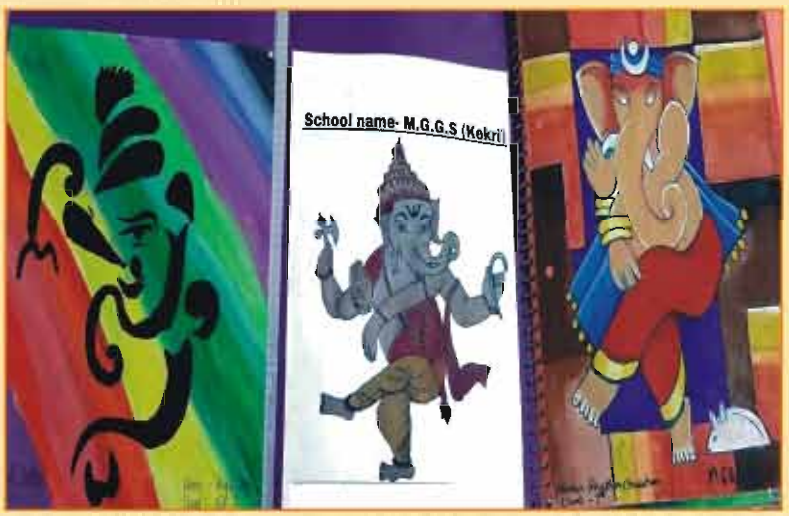

विजय अग्रवाल, कक्षा–9,
एमजीजीएस पायलेट,
केकड़ी, अजमेर

लक्ष्य सोनी, कक्षा–7 ब,
एमजीजीएस पायलेट,
केकड़ी, अजमेर

रिथम चौहान, कक्षा–7 ब,
एमजीजीएस पायलेट,
केकड़ी, अजमेर

चित्र वीथिका : नवम्बर, 2022

माननीय विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला के मुख्य आतिथ्य में श्री गोवर्धन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) बड़ा बाजार, नाथद्वारा, जिला–राजसमंद के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण एवं इस शुभावसर पर माननीय सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना, माननीय कृषि मंत्री श्री लालचन्द कटारिया एवं अन्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयन्ती 2 अक्टूबर के उपलक्ष्य पर आर.ए.सी. मैदान धौलपुर में बने साबरमती आश्रम का अनुपम दृश्य, जिसमें गाँधी दर्शन एवं मूल्यों की जीवन्त झलकियाँ

26वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2022 की झलकियाँ

दीप स्मृति सभागार जयपुर में राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह के अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला दीप प्रज्वलित करते हुए

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला का स्वागत करते हुए श्री पी.के. गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा

माननीय उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह यादव का स्वागत करते हुए श्री पी.के. गोयल, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा

माननीय तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री श्री सुभाष गर्ग का स्वागत करते हुए श्री गौरव अग्रवाल निदेशक माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव स्कूल शिक्षा श्री पी.के. गोयल का स्वागत करते हुए श्री अशोक सांगवा, अतिरिक्त निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान

निदेशक माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान श्री गौरव अग्रवाल का स्वागत करते हुए संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, जयपुर संभाग श्री सुभाष चंद्र यादव

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● नवम्बर, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 नवम्बर, 2022 पृष्ठ 56 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

26वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2022 की झलकियाँ

राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह के शुभ अवसर पर माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला को गार्ड ऑफ ऑनर देते हुए स्काउट्स

माननीय मंत्रीगण एवं अधिकारीवृंद 26वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2022 में भामाशाह सम्मान प्रशस्ति पुस्तिका का विमोचन करते हुए

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, माननीय उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह यादव, माननीय तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, अतिरिक्त मुख्य सचिव स्कूल शिक्षा श्री पी.के. गोयल, राज्य परियोजना निदेशक एवं आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद डॉ. मोहनलाल यादव एवं निदेशक माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान श्री गौरव अग्रवाल ऑनलाइन काउंसलिंग पोर्टल एवं इन्दिरा महिला शक्ति फीस पुनर्भरण योजना एप लॉन्च करते हुए

भामाशाह सम्मान समारोह में उपस्थित सम्मानित भामाशाह एवं प्रेरकगण